बाड़मेर जिले के
प्राचीन जैन शिलालेख

502

509

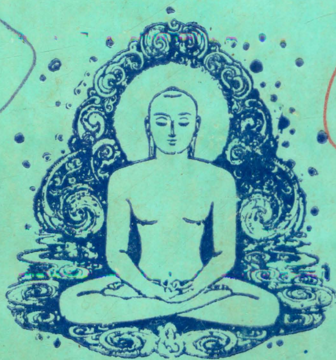

प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ

बाड़मेर-जिले के

प्राचीन जैन शिलालेख

प्रकाशक

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ

पो. मेवानगर

जि. बाड़मेर (राज.)

❀ प्रकाशक:—
श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ-मेवानगर

❀ सर्वाधिकार सुरक्षित

❀ प्रथमावृत्ति–१,००० प्रति

❀ प्रथम संस्करण:—
वीर संवत् २५१४
वि संवत् २०४४
ई सन् १९८७

❀ मूल्य —

❀ प्राप्ति स्थान:—
श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ पेढ़ी
पो. मेवानगर
जिला बाड़मेर (राज०)

❀ मुद्रक:—
कैलाशचन्द जैन,
जैन प्रिण्टर्स,
८०६, चौपासनी रोड,
जोधपुर, (राजस्थान)
फोन : २८७८२, २१७५९.

आमुख

श्रीजैन-श्वैताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ-तीर्थ भारत के जैनतीर्थों में अपना एक विशिष्ट स्थान है। इस तीर्थ की बहुआयामी गतिविधियों में, ज्ञानक्षेत्र में भी अनेक कार्यक्रम तीर्थ ने अपने हाथ में लिए हैं। प्राकृत भारती के माध्यम से विशिष्ट साहित्य के प्रकाशन में सहयोग दिया जा रहा है। सेवा मन्दिर रावटी के माध्यम से आगम प्रकाशन का महत्व पूर्ण कार्य हो रहा है। पूर्व में प्रसिद्ध विद्वान् श्री अगरचंद नाहटा द्वारा सम्पादित जैनकथा-संग्रह व विविध तीर्थकल्प का प्रकाशन तीर्थ ने करवाया। पत्राचार पाठ्यक्रम के अंतर्गत मुनि श्रीगुणरत्नविजयजी की निश्रा में त्रि-स्तरीय जैन शिक्षण कार्यक्रम चल रहा है।

भारत के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता पद्मश्री डा. वाकणकर के तीर्थ पर आगमन पर उन्होंने राजस्थान के जैन पुरातत्व पर शोधकार्य में तीर्थ को नेतृत्व प्रदान करने का संकेत किया था व तत्पच्छात् इस क्षेत्र में कार्यशील होने की ओर प्रथम कदम के रूप में तीर्थ ने अपने मूल क्षेत्र बाड़मेर जिले का शिलालेख-सर्वेक्षण का कार्य हाथ में लेने का निश्चय किया एवं तीर्थ के पुस्तकालय प्रभारी श्री हीरालाल जोशी को सर्वेक्षण का कार्य सौंपा। तीर्थ की ज्ञान समिति श्री पारसमल भंसाली, श्री सुल्तानमल जैन श्री चम्पालाल सालेचा, श्री गणपतचन्द पटवारी श्री भूरचन्द जैन के मार्गदर्शन में इस सर्वेक्षण-कार्य को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाया जा रहा है। निश्चित ही यह संकलन जैन-संस्कृति ही नहीं समस्त भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व हेतु एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रन्थ सिद्ध होगा।

श्रीपार्श्वप्रभु जन्मकल्याणक
पोष कृष्णा दशमी २०४४ वि.
16.12.1987

अध्यक्ष व ट्रस्ट मण्डल

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा
पार्श्वनाथ तीर्थ

प्रस्तावना

पश्चिमी राजस्थान जिसमें मरुमंडल, पूंगल, जांगल, माड, सूराचन्दा रायधड़ा इत्यादि के प्राचीन क्षेत्र आते हैं। पुरातनकाल से ही जैन-धर्म और संस्कृति का महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। वर्तमान पुरातत्वीय खोजों के अनुसार यह क्षेत्र सिन्धु घाटी की सभ्यता के अन्तर्गत आता है और उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार सिन्धु घाटी की सभ्यता जैन-धर्म व सस्कृति से प्रमुखरूप से प्रभावित थी। सील ओफ मोहनजोदड़ो में वृषभ जो कि प्रथम तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ अथवा ऋषभदेव का चिह्न है, स्वस्तिक जो कि जैन अष्ट मंगलों में से एक है। मीन युगल जिनका अष्ट मंगलों में स्थान है। नाग जो सातवें तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथजी की अनेक मूर्तियों पर मिलता है तथा तेईसवें तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ का चिह्न है, एक जैन प्रतीक के रूप में महत्वपूर्ण संकेत है तथा नग्न साधुओं का जैनों की काऊसग्ग ध्यान मुद्रा में अंकन इस शिलालेख पर जैन प्रभाव अथवा सिन्धु घाटी सभ्यता के जैन सम्बन्धों के रूप में एक उल्लेखनीय प्रमाण प्रस्तुत करता है। वासुदेव कृष्ण व बाईसवें तीर्थंकर श्रीअरिष्टनेमि के जैन-ग्रन्थों में उल्लेख इन दोनों महापुरुषों का सम्पूर्ण पश्चिमी भारत पर प्रभाव प्रकट करते हैं जिसमें कृष्ण-जरासन्ध युद्ध का तत्कालीन वैदिक सरस्वती नदी के किनारे नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर के पास सोनवल्ली (वर्तमान सोनली) के पास युद्ध वर्णन को इस क्षेत्र को जैन ऐतिहासिकता के साथ जोड़ते हैं।

भगवान् पार्श्वनाथ के गणधरों व पट्टधर आचार्यों ने भारत में अपने अखिल भारतीय साधुओं की गणव्यवस्था को अथवा गच्छव्यवस्था को व्यवस्थित करने हेतु भारत को नौ क्षेत्रों में विभाजित किया था जिसमें एक क्षेत्र सिन्धु सोवीर भी था जिसका यह भू-भाग भी एक हिस्सा था। जिससे स्पष्टतया इस क्षेत्र में भगवान् पार्श्वनाथ के समय जैन-प्रभाव का विशद स्वरूप दृष्टिगोचर होता है और इसी पार्श्वनाथ-परम्परा के पट्टधर आचार्य रत्नप्रभसूरि ने ओसवाल समाज की स्थापना की थी जो घटना महावीर-निर्वाण के पश्चात् की प्रथम व द्वितीय शताब्दी की घटना है। मरुमंडल क्षेत्र में अनेक मन्दिरों में आचार्य रत्नप्रभसूरि के समय के प्रतिबिम्ब प्रतिष्ठाओं के उल्लेख मिलते हैं जो महावीर के पूर्व तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के समय में इस क्षेत्र के जैन-प्रभाव की पुष्टि करते हैं। यह उल्लेखनीय है

कि पश्चिमी राजस्थान व सिन्ध में भगवान् पार्श्वनाथ जिनालयों की भरमार है जो उपर्युक्त कथन के महत्वपूर्ण प्रमाण हैं।

भगवान् महावीर के मोक्षगामी अन्तिम राजर्षि शिष्य सिन्धु सौवीर के राजा उदायन थे जिनकी राजधानी वीतभया नगरी थी। इसी वीतभया से अवन्ति नरेश प्रद्योतसेन चमत्कारी काष्ठ प्रतिमा अपनी प्रेयसी के आग्रह पर रात्रि में उठाकर ले गये थे जिसके कारण उदायन ने प्रद्योत पर हमला किया था व उसे परास्त कर कैद कर लिया था, पर एक आकाश-वाणी के आधार पर वह प्रतिमा अवन्ति में ही छोड़ दी गई थी। अनेक विद्वानों का मत है कि बड़ौदा के म्युजियम में रखी हुई जैन काष्ठ प्रतिमा वही वीतभया नगरी की जिन-प्रतिमा है।

यह वीतभया नगरी कालान्तर में रेत भरे तूफानों में बालू-समाधि प्राप्त कर गई पर निश्चित ही महावीर के काल में इस क्षेत्र के विस्तृत जैन-प्रभाव को प्रकट कर रही है। महावीर के काल में ही राजर्षि उदायन को दर्शन देने हेतु महावीर का इस क्षेत्र में विचरण होने की सम्भावना है तथा सांचोर के महावीर मन्दिर तथा सिरोही क्षेत्र में जीवितस्वामी की प्रतिमायें इस सम्भावना को प्रबल करती है। प्रस्तुत शिलालेखों में विक्रम संवत १२८० का एक महत्वपूर्ण शिलालेख (गुड़ा) नगर के महावीर मन्दिर से प्राप्त हुआ है। और उस शिलालेख में उस स्थान का नाम राड़धड़ा उल्लिखित होना इस स्थान, शिलालेख व क्षेत्र में अत्यन्त प्राचीन महावीर व जैन-प्रभाव को प्रकट करता है।

इस क्षेत्र में कुछ प्रतिमायें सम्प्रति राजा के काल की सिद्ध हुई हैं। सम्राट् सम्प्रति सम्राट् अशोक के पौत्र व कुणाल के पुत्र थे व एक प्रसिद्ध जैन-अनुयायी के रूप में विख्यात हैं। सम्राट् सम्प्रति के प्रशासन में तक्षशिला पंजाब व मरुमंडल क्षेत्र इत्यादि थे और इन क्षेत्रों में सम्प्रति-कालीन जैन-प्रतिमाए मिलती हैं जो कला की दृष्टि से एक विशेष रूप से पहचानी जाती है। उस काल में चूंकि प्रतिमाओं पर लेख लिखने की परिपाटी नहीं थी इसलिये इन प्रतिमाओं का सही काल-निर्धारण करना सम्भव नहीं है, परन्तु यह प्रतिमायें इस क्षेत्र में जैन-प्रभाव को प्रमाणित करती है।

इसी सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि सिकन्दर व उस काल में इस क्षेत्र में रहने वाले मालव, क्षुद्रक इत्यादि जातियों का संघर्ष व उस संघर्ष में सिकन्दर का पराजित होना व घायल होना एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य है। चन्द्रगुप्त मौर्य जैन सम्राट् थे सैल्युकस से युद्ध में इन मालवों व

क्षुद्रकों का चन्द्रगुप्त को सहयोग इस क्षेत्र के निवासी मालवों क्षुद्रकों पर भी जैन-प्रभाव की सम्भावना प्रकट करता है। तत्पश्चात् सम्राट् सम्प्रति का इस क्षेत्र पर प्रशासनिक प्रभाव इस मैत्रिक सम्बन्ध की पुष्टि करता है। चूंकि सिकन्दर का काल रत्नप्रभसूरि के काल से समकालीन है अतः यह भी उपर्युक्त जैन-प्रभाव शृंखला की पुष्टि करता है। संप्रति का काल गुप्तकाल का पूर्वार्द्ध था। एक ओर इतिहासकारों का यह मत है कि सिकन्दर का सामना करने हेतु मालव व क्षुद्रकों ने अपने आपसी विवाद भुला कर उन्हें स्थायी एकता में परिवर्तित करने हेतु आपस में शादी ब्याह कर लिए थे व दूसरी ओर इसी काल में विभिन्न जातियों का रत्न-प्रभवसूरि द्वारा ओसवाल जाति की स्थापना कर उन्हें शादी ब्याह हेतु स्थायी एकता में बांधना इतिहास का एक अद्‌भुत सामन्जस्य है व एक ऐतिहासिक तथ्य की पुष्टि का संकेत है।

जैन-ग्रन्थों के प्राचीन उल्लेखों के अनुसार वीरमसेन नामक दो भाईयों ने वीर-निर्वाण की दूसरी शताब्दी में नाकोड़ा ब बीरमपुर नाम के दो नगर बसाये और दोनों ने अपने अपने नगरों में जिन-मन्दिरों के निर्माण करवाये। नाकोड़ा नगर में भगवान् पार्श्वनाथ का मदिर बन-वाया व बीरमपुर में तीर्थंकर चन्द्रप्रभुजी को मूलनायक के रूप में स्था-पित किया गया। वीरमपुर में कालान्तर में जीर्णोद्धार के समय चन्दाप्रभु के स्थान पर भगवान् महावीर की प्रतिमा स्थापित की गई जो पुनः जीर्णोद्धार के समय नाकोड़ा के नागद्रह से प्राप्त भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा से परिवर्तित हुई है। अभी नाकोड़ा में पंचतीर्थी मन्दिर में जो महावीर की विशाल पीत पाषाण-प्रतिमा विराजित है वह यही मूलनायक जी की प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर पीछे की ओर एक लेख है जिसमें इसे महावीर-बिम्ब के रूप में उल्लिखित किया गया है। लगता है यह उल्लेख इसे किसी जिर्णोद्धार में पुनः स्थापित करते समय लिया गया है क्योंकि यह शारीरिक भाग जहाँ यह उल्लेख किया गया है, लेख लिखने का स्थान नहीं है। स्पष्ट है जिस काल की यह प्रतिमा है उस समय लेख लिखने की परम्परा नहीं थी। इस प्रतिमा की कुछ और विशेषताए भी हैं, इस प्रतिमा के पीठासन पर सुन्दर उत्कीर्णी है जो बहुत पुरानी प्रति-माओं में ही मिलती है। १५ वीं शताब्दी की अन्य प्रतिमाओं में यह जित्कीर्णी नहीं है। प्रतिमा की नाक विशेष रूप से तीखी, हाथों की कोह-नियां शिला में पीछे से सहारे के पत्थर से जुड़ा होना, कानों के कुण्डलों

का हिस्सा लम्बा होना तथा पीठ से चिपका हुआ होना, प्रतिमा को संप्रति काल की अथवा उसके समीपस्थ उतरार्द्ध की होना प्रदर्शित करता है।

श्री नाकोड़ा तीर्थ के दो काउसग्ग संवत् १२०३ वि. के हैं। इन पर श्रीवच्छ चैत्य लिखा है श्रीवत्स भगवान् शीतलनाथ का चिह्न है जिससे प्रतीत होता है कि या तो इस वर्तमान आदिनाथ मंदिर में कभी शीतलनाथ भी मूलनायक थे अथवा इस क्षेत्र में शीतलनाथ का अलग मंदिर था व किसी भूमिगृह स्थापन के पश्चात् जीर्णोद्धार के समय इन काउसग्गीयों को इस जिनालय में स्थापित किया गया हो। शिलालेखों के अनुसार मूलरूप से यह मंदिर विमलनाथ मंदिर था व भगवान् आदिनाथ का यहाँ स्थापन इसके पश्चात् का है जो संभवतया संवत् १५२५ के आसपास का हो। तीर्थ के भण्डार में धातुप्रतिमा पर संवत १०६ उत्कीर्ण है। उसके आगे का कुछ भाग घिसा हुआ है। संभव है यह प्रतिमा १०६० से १०६६ विक्रमी की हो। अर्थात् ईसा की नौवीं शताब्दी में इस क्षेत्र में जैन-प्रभाव असंदिग्ध है।

किराड़, जूना देवका, चौहटन, गुढ़ा-नगर के मंदिर भी अति प्राचीन हैं। किराड़ में वर्तमान घनीभूत मंदिरो में जैन-मंदिर भी थे व उनके शिलालेखों का ऐतिहासिघ महत्त्व है। डा. वाकणकर के अनुसार देवका के सूर्य मन्दिर तथा किराड़ के विभिन्न मन्दिर खेड़ के विष्णु मंदिर इत्त्यादि गुप्तकाल व उसके पूर्व के हैं। खेड़ का जैन-शिलालेख जो वहां एक टांके के मन्दिर क्षेत्र में ही खुदाई के समय प्राप्त हुआ था संवत् १०२६ के आसपास का है और वर्तमान विष्णुमन्दिर के पास से प्राप्त होने का अर्थ है कि प्राचीनता में जैन सस्कृति का यहाँ प्रभाव इस नगर के समृद्धिकाल से ही होना चाहिए। 'खेड़' एक प्राकृत शब्द है जिसका उल्लेख कल्पसूत्र में भी हुआ है। प्राकृत में खेड़ का अर्थ 'समृद्धिशाली नगर' है। जबकि खेड़ा शब्द नगरों के आसपास के ग्रामीण इलाकों के लिए आज भी राजस्थान गुजरात व महाराष्ट्र में काम लिया जाता है।

नाकोड़ा तीर्थ पर अनेक प्रतिमाओं पर खेड़ नगर व महेवा का उल्लेख है, जिनमें कुछ बिना संवत् की है। विक्रमी की प्रारम्भिक शताब्दियों में प्रतिमाओं पर सवत् लगाने अथवा लेख अंकित करने की प्रथा नहीं थी अतः यह मूर्तियें अत्यन्त प्राचीन होना प्रतीत होती है। खेड़ के वर्तमान विष्णुमन्दिर व प्रदेश के समीप के मन्दिरों का शिल्प गुप्त-काल व उसके पूर्व का है।

आचार्य कालक की बहिन साध्वी सरस्वती का गर्दभिल्ल द्वारा हरण, कालकाचार्य का पार्श्वकुल अर्थात् पारसियों के कुल-स्थान वर्तमान ईरान की ओर इस मरुप्रदेश के मार्ग से जाना व शकों का इसी प्रदेश से आगमन व यहां से समुद्रीमार्ग से गुजरात की ओर से मालवा क्षेत्र पर आक्रमण एक ऐतिहासिक घटना है। आचार्य कालक का काल ईसा से पूर्व पहली व दूसरी शताब्दी के मध्य का है व इस काल में किराड़ू, जना, खेड़ व वीरमपुर, ओसियां, सत्यपुर (सांचौर), भीनमाल में विशाल जैन-प्रभाव ने ही कालकाचार्य को इस पथ से ईरान तक जाने का मार्ग प्रशस्त किया था।

गर्दभिल्ल को परास्त करने के तुरन्त बाद शकों की निरंकुशता के कारण कालकाचार्य ने उनका साथ छोड़ दिया व विक्रमादित्य ने शकों को पुनः इसी मार्ग से भारत के बाहर खदेड़ दिया। विक्रमादित्य के गुरु आचार्य सिद्धसेन दिवाकर थे व इस विजय के पश्चात् जब यह क्षेत्र गुप्तों के अधीन आया तो आचार्य सिद्धसेन दिवाकर का विचरण भी इस क्षेत्र में हुआ।

गुप्तों के काल के पश्चात् सम्राट् हर्षवर्द्धन अथवा वृहद्भोज के समय चीनी यात्री ह्यांगचांग भारत आया था। हर्षवर्द्धन के दरबार में बाणभट्ट व मयूर भट्ट इत्यादि विद्वान् थे और उनकी विद्वता से अधिक प्रभाव प्रमाणित करते हुए आचार्य मानतुंगसूरि ने भक्तामरस्तोत्र की रचना की। आचार्य मानतुंगसूरि के जीवन-वर्णनों में उनका खेड़ वीरमपुर आने का उल्लेख मिलता है। ह्यांगचांग की यात्राओं में उसका भीनमाल से खेट (खेड़) उडम्बर (शेरगढ़ तहसील में औदम्बर व उडू), पीतशीला (जैसलमेर के पास वर्तमान में पीतला) होते हुए मुलतान जाने का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि खेड़ उस काल का महत्त्वपूर्ण नगर था।

सिंध में दाहर पर मुस्लिम आक्रमण ७१२ ई. में हुआ। इस काल में मौर्यों व गुप्तों के पश्चात् प्रतिहारों व परमारों का इस क्षेत्र पर अधिकार हुआ। मोहम्मद बिन कासिम के पश्चात् सिंध के मुसलमान शासकों ने इस क्षेत्र पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिये थे जो गजनवी के सोमनाथ आक्रमण तक चालू रहे। खेड़ मन्दिर व सिनली में मन्दिरों को मुस्लिम आक्रमणों से बचाने हेतु 'गधी गाल' की मूर्तियां मिली हैं जो इस क्षेत्र पर लगातार मुस्लिम हमलों का प्रमाण है। इन आक्रमणों में मन्दिरों की तोड़-फोड़ व कलामूर्तियों को विकृत करना, मन्दिरों को मस्जिदों में

परिवर्तित करना आम बात थी। पूरे बाड़मेर क्षेत्र में इस प्रकार के भग्नावशेषों की भरमार है। खेड़ के वैष्णव मन्दिर की समस्त कलाकृतियां विकृतरूप में है व इसी काल में जैन मन्दिर भी तोड़े गये व उनके अवशेष जसोल व मेवानगर में प्राप्त हैं। नाकोड़ा तीर्थ पर खण्डित परिकर भी इसके प्रमाण है, पर चूंकि ऐसे आक्रमण स्थायी आधिपत्य में परिवर्तित नहीं हुए अतः जब भी आक्रमण होते अथवा समीप के क्षेत्रों में अशांति होती तो प्रतिमाओं को भूमिगत कर दिया जाता व स्थिति सामान्य होने पर पुनः जीर्णोद्धार करा दिया जाता व प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करादी जाती थी।

परमारों के काल में ही गुजरात के सोलंकी सम्राटों का प्रभाव इस क्षेत्र पर बढ़ा व गुजरात के सभी सोलंकी सम्राट जैन-धर्म से प्रभावित थे व सिद्धराज जयसिंह व विशेष रूप से कुमारपाल तो प्रसिद्ध जैन-सम्राट हुए हैं अतः इस काल में इस क्षेत्र में भी जैन प्रभाव को पर्याप्त सहयोग मिला। किराड़ू व बाड़मेर जिले के अनेक स्थानों पर सोलंकी राजाओं के लेख मिले हैं। प्रस्तुत संग्रह के नाकोड़ा तीर्थ के संवत् १२०३ के काउसग्गियों पर सोलंकी राज्य होने का उल्लेख है।

विक्रमी १०८२ में मुहम्मद गजनवी लुद्रवा को रोंदते हुए किराडू जूना (बाहड़मेर) से धोरीमन्ना, पालनपुर होते हुए सोमनाथ पहुँचा। इस अशांति के समय समस्त जिले में संकट का आभास हुआ अतः प्राप्त लेखों में इस काल के लेखों का अभाव है, और उसके पश्चात् पुनः कुमारपाल के समय शांति स्थापन होने पर भूमिगत प्रतिमाओं का जीर्णोद्धार होने से उस समय की बहुत सी प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं। गजनवी व गोरी के बीच के सौ वर्षों के काल को इस क्षेत्र में जैन-संस्कृति के फैलाव का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है व इस लेख-संग्रह में इस काल के शिलालेखों की पर्याप्त सूची उपलब्ध है।

पृथ्वीराज की पराजय के पश्चात् इल्तुमिश व अजमेर में स्थित उसके हाकिम बाबाशाह के समय में सिंदरी के समीप नाकोड़ा नगर पर मुस्लिम हमला हुआ और इसी हमले में सभवतया यह नगर ध्वस्त हुआ और सम्भव है इसी समय नाकोड़ा तीर्थ की वतमान पार्श्वप्रभु की प्रतिमा को भूमिगत किया गया हो। यह समय संवत् १२७० से १३१० वि. के मध्य होना चाहिए। शिलालेखों में महेवा क्षेत्र के इस काल के शिलालेख नहीं है।

भारतीय सभ्यता के ध्वंस व विनाशलीला रचने में अलाउद्दीन खिलजी अग्रणी रहा जिसने सिवाना, बाड़मेर, सांचोर व जालोर पर अपना आतंककारी अभियान चलाया संवत् १३६० से १४०० वि. के चालीस वर्षों में ही सिवाना का दुर्ग, खेड़ व वीरमपुर के नगर व मंदिर ध्वस्त हुए, जूना बाहड़मेर किराड़ू व सांचोर का विनाश हुआ व जालौर के कान्हदेव व वीरम को वीरगति प्राप्त होकर वहाँ मुसलमान हाकिम बैठा। इन सभी ध्वस्त मंदिरों में कुछ तो नगर व मंदिर सदा के लिए ध्वस्त हो गए व कुछ का जीर्णोद्धार विक्रम की पूरी पन्द्रहवी सदी में बिखरे रूप में हुआ क्योंकि जालौर क्षेत्र में लगातार पुनः सत्ता प्राप्ति हेतु हिन्दू राजाओं के मुसलमानों से युद्ध होते रहे व इसी काल में कन्नौज से आये राव सीहा व व उनके वंशजों ने पाली व बाड़मेर क्षेत्र में अपना प्रभाव बढाना प्रारम्भ किया।

गुजरात में सोलंकी सत्ता के शिथिल होते ही गोहिल राजपूतों ने जो सोलंकियों के सरदार के रूप में खेड़, महेवा–क्षेत्र में अवस्थित थे खेड़, पर अपना राज्य स्थापित कर दिया। कहावत है कि "पोल देख ने गोहिला घसोया" पर शीघ्र ही राव आसथान ने खेड़ पर कब्जा कर लिया व राठौड़ों का प्रभाव सिवाना व आसपास के क्षेत्रों पर बढने लगा। राठौड़ों के काल में जैन–संस्कृति को पर्याप्त संरक्षण मिला व ओसवालों के मोहनोत व छाजेड़ गौत्रों की इन्हीं राठौड़-परम्परा से उत्पत्ति हुई है। राठौड़ राजवंशों पर भी जैन–प्रभाव था, ऐसा उल्लेख मिलता है कि तपागच्छ के एक साधुजी ने मोहनगी को मोहनोत बनाया। उनका गच्छ तपागच्छ था पर राठौड़ों का गच्छ खरतर था। इस क्षेत्र की अनेक प्रतिमाओं व मंदिरों के शिलालेखों पर राठौड़ राजाओं के उल्लेख मिलते हैं।

बाड़मेर के इतिहास में मल्लिनाथ वीरम व जगमाल के समय में माढ़ के नवाब व दिल्ली के तुगलक सम्राटों की सम्मिलित फौजों से युद्ध की घटना अपना ऐतिहासिक महत्व रखती हैं। मल्लिनाथ का काल संवत् १४३०-५६ के करीब रहा है। इस काल में महेवा क्षेत्र अशांत रहा व इस क्षेत्र में इस काल के शिलालेखों का अभाव है। इस युद्ध में राठौड़ों ने फिरोजशाह तुगलक वा माढू के मोहम्मद एबक पर विजय प्राप्त की।

विक्रम की सोलहवीं शताब्दी अर्थात् संवत् १५००–१६०० तक की काल इस क्षेत्र में राजनैतिक शान्ति का काल रहा। इसी काल में अनेक

मन्दिरों के जीर्णोद्धार हुए जिसमें नाकोड़ा तीर्थ, नगर, गुड़ा, कनाना, इस्सानी, विशाला, भाडरवा, आसोतरा, पाटौदी, बालोतरा, पचपदरा, बाड़मेर, खण्डप, पारलू, सणपा, मोकलसर कोटड़ा, राणीगांव, कर्मावास, जेठन्तरी अर्थात् बाड़मेर जिले के हर क्षेत्र में जिन-मन्दिरों के निर्माण, प्रतिष्ठाऐं इत्यादि के शिलालेख मिलते हैं। इसी काल में खरतरगच्छाचार्य दादा गुरुदेव कीर्तिरत्नसूरिजी, जो इसी क्षेत्र के मेवानगर के रहने वाले थे, धर्म व जिनालय बनाने का विशालरूप से कार्य किया। आचार्य कीर्ति-रत्नसूरि की स्तुति में इस क्षेत्र में गुरु प्रतिमायें, गुरु-पादुकायें व शिलालेख अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इस सदी के विभिन्न मन्दिरों में नाकोड़ा-तीर्थ के मन्दिरों में निर्माण व जीर्णोद्धार एक ऐतिहासिक उपलब्धि है जिसमें पूर्व लिखित नाकोड़ा ग्राम के नागद्रह से प्राप्त श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा को मेवानगर(वीरमपुर) से मूलनायकजी के रूप में विराजमान करना इस क्षेत्र का एक सौभाग्यपूर्ण प्रसंग कहा जा सकता है।

इसके पश्चात् भारत की राजनीति में मण्डौर व जोधपुर में मलानी क्षेत्र से ही विस्तार पाये राठौड़ राजवंश का उदभव व मुगलसत्ता का विस्तार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मुगलकाल की राजनैतिक गतिविधियों ने इस क्षेत्र को भी अत्यन्त प्रभावित किया। जोधपुर के राव मालदेव का अपने ज्ये. पुत्र रामदेव से अप्रसन्नता के कारण चन्द्रसेन को राज्य देना व साम्राट अकबर का चन्द्रसेन के विरुद्ध अभियान, चन्द्रसेन का सिवाना व मालानी केपहाड़ों में मोर्चा बांधना व इस क्षेत्र में मुगल सेनाओं का निरन्तर जमाव पुनः एक अशान्त वातावरण को उत्पन्न करते हैं। और यह पूरा क्षत्र उस अशान्ति से प्रभावित होकर इस क्षेत्र के अनेक प्राचीन नगर व्यापार व्यवसाय से रिक्त हो जाते हैं और इसी क्रम में महाराज जसवन्तसिंह के स्वर्गवास हो जाने पर अजीतसिंह को राठौड़ वीर दुर्गादास द्वारा मुगल चंगुल से बचाकर लाये उन्हें सिवाना के छप्पन के पहाड़ों से भोमलाई तक कीपहाड़ी शृंखला में रखनाव समस्त मारवाड़ में मुगल आधिपत्य के साथ निरन्तर मुगल-राजपूत सघर्ष इस क्षेत्र के समस्त राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन को प्रभावित करते है। फलस्वरूप खेड़, महेवा, जसोल व मालानी के सम्पूर्ण क्षेत्र में जनजीवन अशान्त रहता है। अतः इसी काल में मेवानगर खाली हुआ वहां के निवासी एक शान्त व सुलभ वातावरण हेतु विभिन्न क्षेत्रों में फैल गये। हालांकि मेवानगर के नानकजी संखलेचा का वहां के शासक पुत्रों द्वारा अपमान इस घटना का तात्कालिक कारण बना पर वास्तव में उस समय अनेक ऐसी राजनैतिक परिस्थितिये थी

जिन्होंने आबादियों के विस्थापन में सहयोग दिया। मीठ पानी भी स्रोतों की नदियों में व कुओं में कमी होने लगी। मारवाड़ के राजघराने से मालानी के राठौड़ अपने आपको अलग मानकर छोटी-छोटी जागीरियों में विभक्त हो गये जिससे लूटपाट इत्यादि बढ़कर नागरिक जीवन अशांत अनुभव करने लगा।

फलस्वरूप इस काल में जो स्थान आबादी के स्थानान्तरण के कारण विकसित हुये वहां नवीन मन्दिर बने पर साथ ही जहां से विस्थापन हुआ वहां धर्म स्थानों का बिखराव व नगरों का खण्डहरों में परिवर्तन होना दृष्टिगोचर होता। चूंकि इसके पश्चात् अंग्रेजी शासन का प्रभाव पहुंच चुका था अतः सुरक्षा व शांति की दृष्टि से बाड़मेर के मालानी-क्षेत्र की अपेक्षा इस जिले के पचपदरा, सिवाना व शिव क्षेत्र अधिक शान्त व सुरक्षित थे। यहीं पर धार्मिक विकास भी दृष्टिगोचर होता है। ईसा की उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में मालानी भी मारवाड़ राज्य का अंग बन गया और वहां भी परिस्थितियों में बदलाव आया।

इस अन्तिम काल में व स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् मन्दिरों के निर्माण, कला का विस्तार व वैशिष्ट्य तथा इस जिले में नाकोड़ा पार्श्वनाथ जैन तीर्थ का पुनरुद्धार महत्वपूर्ण है।

परम विदुषी गुरुआंनी श्रीसुन्दर श्रीजी आचार्य हितविजयजी व आचार्य हिमाचलसूरिजी ने इस विकास में विशेष योगदान दिया।

इन शिलालेखों के अध्ययन से इस क्षेत्र के जैन-जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। मूर्ति कला की दृष्टि से अनेक परम्परायें सामने आती हैं ज ाधुओं की गच्छ-परम्परा की एक विशाल सूची चौरासी गच्छ की ।ान्यता को प्रमाणित करती है। अधिकांश लेखों में उपकेश अथवा ओस वंशी अथवा ओसवाल या उकेश नामों से एक ही श्रावक समुदाय का सम्बोधन दृष्टिगोचार होता है जिसका क्षत्रिय परम्पराओं से घनिष्ठ सम्बन्ध प्रकट होता है। जूझारों के लेख, सतियों के लेख, श्रावक नामावली के साथ श्राविकाओं का नारी महत्व परम्पराओं की एक विशेष गुणवत्ता प्रकट करता है। इस विषय में शोधकार्य हेतु लेखों का यह संकलन महत्व पूर्ण योगदान दे पायगा ऐसी कामना है।

—चम्पालाल सालेचा

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान, मेवानगर

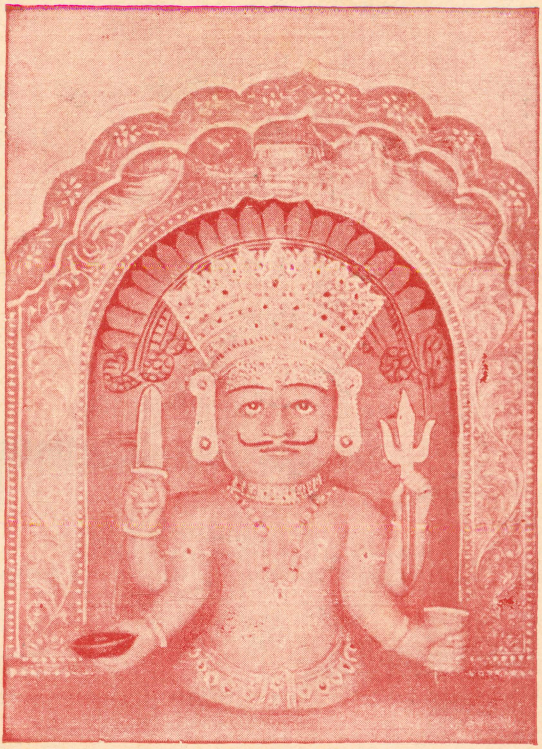

श्री नाकोड़ा भैरव जी, मेवानगर

अनुक्रमणिका

क्रमांक	नाम–ग्राम	पृष्ठ
१.	अजीत	१
२.	आसोतरा	१
३.	कनाना	३
४.	कर्मावास	४
५.	कल्याणपुरा	४
६.	किराड़ू	५
७.	कुण्डल	६
८.	कोटड़ा	६
९.	कोरना	१०
१०.	खेड़	११
११.	खण्डप	११
१२.	गुड़ा मालानी	१३
१३.	चौहटन	१४
१४.	जसोल	१५
१५.	जूना बाहड़मेर	१९
१६.	जेठन्तरी	२०
१७.	तिलवाड़ा	२०
१८.	थोब	२१
१९.	धोरीमना	२१
२०.	नगर	२२
२१.	टापरा	२४
२२.	डंडाली	२५
२३.	पचपदरा	२५
२४.	पादरू	२९
२५.	पाटोदी	३०
२६.	पारलू	३१
२७.	बाड़मेर नगर	३२

२८	बालोतरा	४५
२६	बुढ़िवाड़ा	५०
३०.	भाड़खा	५१
३१.	मजल	५१
३२.	मडली	५३
३३.	मिठोड़ा	५३
३४.	मेवानगर	५४
३५.	मोकलसर	५५
३६.	रमणीया	५५
३७.	राखी	५६
३८.	राणीग्राम	५७
३६.	रामसर	५७
४०.	विठूजा	५८
४१.	विशाला	५८
४२.	शिव	५६
४३.	सणपा	५६
४४.	समदड़ी जंक्शन	६०
४५.	सिणधरी	६२
४६.	सियाणी	६३
४७.	सिवाना	६४
४८.	हरसाणी	६६
४६.	श्रीनाकोड़ा तीर्थ-मेवानगर	७१
५०.	परिशिष्ट (१) लेखानुसार गच्छ नामावली	१०६
५१.	परिशिष्ट (२) संवतानुसार लेखों की सूची	११०

ग्राम अजीत

यह ग्राम बाड़मेर-जोधपुर रेलमार्ग पर आया हुआ है। यहां पर एक श्वेत पाषाण का शिखरबन्द मन्दिर है। श्री मूलनायकजी श्री ऋषभदेवजी की प्रतिमा श्याम पाषाण की है। मन्दिर के अन्दर एक छत्री बनी हुई है जिसमें श्री शांतिनाथजी, श्री अजीतनाथजी तथा श्री अनन्तनाथजी विराजमान हैं।

(१)

१. श्री मूलनायकजी श्री ऋषभदेवजी प्रतिमा लेख:—

वि. सं. २०१३ माघ सुदि १४ बुधे श्री ऋषभदेव जिनबिंब ग्राम दूदाड़ावाड़ाया (अजीत) श्रीसंघेन श्रीसंघेस्य श्रेयोर्थं कारापितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिपति भट्टारक आचार्यदेव श्रीरंगविमलसूरीश्वरेण कारापिता कालान्द्री नगरे।

(२)

२. छत्री लेख:—

वि. १९९१ द्वि वैसाख सुदि ५ सकल श्रीसंघेन श्री शान्तिनाथबिंब स्थापितं प्रतिष्ठित तपागच्छाधिपतिराज श्रीविजयसिद्धिसूरि निर्देशेन मुनिकल्याणविजयेन :

तीनों प्रतिमाओं पर नाम के सिवाय एक ही लेख है।

(३)

३. धातु मूर्ति छोटी:—

सं. १६६४ व. पोस व. ७ बुधे सा. हेमाकेन पार्श्वबि. का. प्रतिष्ठितं श्रीविजयदेवसूरिभि:।

(४)

४. पञ्च धातु प्रतिमा लेख:—

संवत् १५७६ वर्षे मिगसर सुदि ६ दिने रविवासरे उकेसवंशे बोहिथरागोत्रे सा. मेला भार्या मेलादे पुत्र सा. रणधीर भार्या सोमलदे..................।

ग्राम आसोतरा

यह ग्राम बालोतरा से विठूजा बस मार्ग पर आया हुआ है। बालोतरा सिवाना बस मार्ग पर श्री खेतारामजी की प्याऊ पर उतर कर

पैदल ३ किलोमीटर पर भी पड़ता है। यहां एक जैन मन्दिर है जिसका जीर्णोद्धार का काम चल रहा है। श्रीमूलनायकजी श्रीमुनिसुव्रत-स्वामीजी हैं।

(५)

१. श्रीमूलनायकजी प्रतिमा लेख:—

सं. १९५५ का. कृ. ५ गुरो दिनानन्द समस्त संघेन बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्रीराजेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठा कारिता ।।मु।। जशरूप ………….।

(६)

२. दाहिनी प्रतिमा लेख:—

सं. १९२१ शाके १७८६ प्र. माघ मासे शुक्ल पक्षे ७ तिथौ गुरु-वासरे बृहत्खरतर मरूदेशे आसोतरा ग्राम………श्री नेमिनाथ……….।

(७)

३. वाम प्रतिमा लेख:—

सं. १९५५ का. कृ. ५ खुदालावास्तव्य सा. पूनमा सा. ताराचन्द ……… बिंब कारितम प्रतिष्ठित श्रीराजेन्द्रसूरिभिः।

(८)

४. पंच धातु प्रतिमा छोटी:—

संवत् १५२२ वर्षे वैशाख वदि १ गुरो श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे. पदमा भार्या कालासन हापा बहुया गोवरा निमित श्रीआदिनाथबिंब करापित प्रतिष्ठित श्रीबृहत्गच्छे भटारि. श्रीहेमप्रभसूरिभिः।

(९)

५. पंच धातु प्रतिमा मंझली:—

संवत् १५६७ वैसाख सुद १० उकेसवंशे नाहटागोत्रे सा. हापा भार्या साहणदे सुत सा. झाझण-परिवारसरीकेण निजपुण्यार्थं श्री-शीतलनाथबिंब कारितः प्रतिष्ठित खरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरिभिः प्रजा माना चिरंनदन्नः।

(१०)

६. पंच धातु प्रतिमा बड़ी नवीन:—

श्रीगढसिवानायां वि. सं. २०४० माघ कृष्ण प्रतिपदा तिथौ श्री-पार्श्वनाथजिनबिंब श्रीहरकचन्दजी श्रेयार्थं सुपुत्र पुखराज, धीगड़मल, हस्तीमल मोहनलाल बालड़ तपागच्छीय आ. भ. श्रीमद्विजयसोमचन्द्र-सूरिश्वराणां शुभनिश्रायां कारितम् ।।शुभ।।

ग्राम कनाना

यह ग्राम बालोतरा समदड़ी बस मार्ग पर आया हुआ है। यह वीर राठौड़ दुर्गादासजी का ग्राम है। यहां पर एक श्रीनेमिनाथ भगवान् का शिखरबन्द मन्दिर आया हुआ है।

(११)

१. पूर्व प्रतिष्ठा लेख मन्दिर के दरवाजे के बाहर दीवार में चुने हुए पत्थर पर:—

महाराजाधिराज महाराज श्रीगजसिंहजी संवत १६६१ माह सुदि ५ दिन चैत्य प्रतिष्ठा माह सुदि ६ दिन श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा स्थापित प्रतिष्ठा श्रीहंसगणी कारापितं, तपागच्छ। सूत्रधार मेघा कृतेन ।।

(१२)

२. जीर्णोद्धार लेख—— ॐ

विश्व पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयराजेन्द्र-सूरीश्वर श्रीमज्जैनाचार्य विजय धनचन्द्रसूरीश्वरे सद्गुरुभ्यो नमः वि. संवत् २००६ में माघ सुदि १२ सोमवार को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में इक्कीसवें श्रीनमिनाथ भगवान व यक्ष यक्षणि एवं भैरूजी आदि की प्रतिष्ठा श्री कनाना सकल श्री संघ ने अति समारोह के साथ श्री तपागच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के पट्टालंकार साहित्याचार्य न्याम्भोनिधि श्रीमद्विजय तीर्थेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के कर कमलों से प्रतिष्ठा कार्य हुआ ।। इत्यलम ।। शिल्पकार सोमपुरा गोमराज जसाजी मु. विरामी. लि शिष्य मुनि लब्धिविजय तारीख २६–१–१९५३ :-ईति शुभम:-

(१३)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख :-

संवत् १५१८ वैशाख सुद ३ प्राग्वाट साना भा. सायादे पु. वासुराकेन भार्या वदल्हादे देवराज सेहाग कुटुंबयुता भा. सुरिमदे श्रेयार्थं श्रीकुन्थ-नाथबिंब का. प्र. वृहततपागच्छाधिराजश्रीरत्नशेखरसूरि शिष्य श्रीलक्ष्मी-सागरसूरिभिः श्रीरस्तु ।।

(१४)

४. ।। संवत् १५२३ माघ सुद ६ शा.म. झाझण भार्या लूणी पुत्र लोलाकेन भार्या पूनी पुत्र नाथ कुटुम्बयुतेन निजश्रेयार्थं श्रीश्रेयांसबिंब का. प्र. तपा. श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः

(१५)

५. संवत् १५२४ वर्षे मार्ग व. ५ ऊः ज्ञातीय सा. धीरा भा. फतु पुत्र ताल्हा भा. सकतू पुत्र लषमण टाल्हादिकुटुंबेन श्रीशान्तिनाथबिंब का. प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः सिरोहीनगरे ।।श्रीरस्तु ।।

(१६)

६. संवत् १५२४ वर्षे ज्ये. सुद ६ ऊ. सा. जोरा भा. दारादे पुत्र हेमा भा. पदमणी लाहू पुत्र वरसींग भा. श्रृंगारदेकुटुंबयुताभ्यां का. श्रीआदिनाथ बिंब प्र. तपागच्छाधिराज श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः

ग्राम कर्मावास

यह ग्राम समदड़ी से दो किलोमीटर नदी के किनारे बसा हुआ है। समदड़ी से अजीत तक यहां होकर बस जाती है। मन्दिर के जीर्णोद्धार का कार्य चालू है। श्रीमूलनायकजी श्रीपार्श्वनाथजी हैं तथा दो प्रतिमाएं श्रीशान्तिनाथजी व श्रीचन्दाप्रभुजी की हैं। लेख सीमेंट के कारण अस्पष्ट है।

(१७)

१. पंच धातु प्रतिमा पंचतीर्थीः—

संवत् १५३५ व. मा. सु. ५ गु वीसा श्रे. जेठा सा. अमुक्त सुतम भोजाकेन भा. वडयादे स्व सा. साजन सुत नाथादिय श्रीचन्द्रप्रभुबि. का. प्र. तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः

(१८)

२. पंच धातु प्रतिमा बड़ी—

सं. १५२० वर्षे जेठ सु. १० प्राग्वाट सा. सह्लदेव सा. हर्ष सुत सुदाला नाति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीविमलबिंबका. प्र. तपा. श्रीरत्नशेखरसूरिपाट श्रोसदभासागरसुरिश शृगपुरभिः

ग्राम कल्याणपुरा

यह ग्राम बालोतरा जोधपुर बस मार्ग पर आया हुआ है। यहां पर श्रीमूलनायकजी शांतिनाथजी का शिखरबन्द मन्दिर है।

(१६)

१. श्रीमूलनायकजी शांतिनाथजी प्रतिमा लेख:—

।। सं. १८६२ वर्षे माघ शुक्ल पंचम्यां श्रीकल्याणपुर श्रीसंघेन श्रीशांतिनाथबिंब प्रतिष्ठापितं श्रीवृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनहरिसूरिभि: ।।

(२०)

२. प्रतिष्ठा लेख:—

। श्रीजिनाय नमः संवत् १९९९ वैसाख मासे शुक्ल दसमी तिथौ रविवासरे श्रीकल्याणपुरनगरे सकलश्रीजैनश्वेताम्बरसंघेन श्रीशांतिनाथ जिनभवनस्थ जीर्णोद्धार कारितं प्रतिष्ठापितं च देवदेवीपरिवार एवं दादा श्रीजिनकुशलसूरिपादुकासहिते जिनबिंबानि वृहत् खरतरगच्छाधिपति श्रीजिनजयसागरसूरिनेतृत्वे पं. यतिवर्य नेमिचन्द्रेण क्रिया बिभानंच कारितं ।।श्री रस्तु।।

यावज्जंबूदीवे यावन्नसत्रे मदितो मेरू:
यावच्चद्रादित्यो नावद्भुवनं विसरी भवतु ।
कल्याणमस्तु ।

ग्राम किराडू

यह ग्राम बाड़मेर से पश्चिम में आया हुआ है । आज के लिखित इतिहास के अनुसार यह ग्राम इस जिले का सबसे प्राचीन मरु प्रदेश की राजधानी था । यहाँ पांच खण्डहर मन्दिर हैं जो कला के इस जिले के ही नहीं, परन्तु राजस्थान के गौरव हैं । एक भी जैन मन्दिर नहीं है । परन्तु सोमेश्वर मन्दिर के वि सं. १२०६ के लेख का जैन धर्म से सम्बन्ध है । यह ग्राम बाड़मेर मुनाबाव रेलगाड़ी के खडीन स्टेशन से तीन किलोमीटर दूर है तथा बाड़मेर सीयाणी बस मार्ग पर है । वि. सं. १२०६ का लेख अब खराब हो चुका है और कुछ पुस्तकों में छपा है जो प्राप्त नहीं हो सका परन्तु आशय प्राप्त हुआ है वह इस प्रकार है—

अहिंसा की आज्ञा (अमारी आज्ञा) :

महाराजा अल्हणदेव जो अपने प्रभु (श्रीकुमारपाल) की कृपा से आज शिवरात्रि के दिन किरातकूप, लाटहरड़ा और शिव का शासक है यह अमारी आज्ञा प्रचारित करता है कि हर मास के दोनों पक्षों की आठम, एकादशी व चतुर्दशी को कोई महाजन, तंबोली, ब्राह्मण इत्यादि जीव

हिंसा नहीं करें और जो इस आज्ञा का उल्लंघन करके जीव हिंसा करेगा तो साधारण नागरिक को मृत्युदड तथा राजकुल के सदस्यों को आर्थिक दंड भुगतना पड़ेगा।

ग्राम कुण्डल

यह ग्राम रमणीया पादरू बस मार्ग पर है। यहां पहले जैन-धर्मावलम्बी के काफी घर थे। परन्तु आजकल सिवाना वगैरा अन्य जगह बस गये हैं तथा अपने साथ प्रतिमायें ले जाकर वहीं पर मन्दिर बनवाये या अन्य मन्दिरों में प्रतिमायें प्रतिष्ठित करादी गई है। यहां पर एक जैन मन्दिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में विद्यमान है। यहां कोई लेख प्राप्त नहीं हुआ।

ग्राम कोटड़ा

यह ग्राम बाड़मेर जिले की तहसील शिव से दस किलोमीटर पश्चिम में है। शिव से कोटड़ा पक्की रोड़ है, परन्तु शिव हरसाणी बस मार्ग यहाँ से ५ कि. मी. दूर है। शिव से पैदल या ऊँट पर जाना पड़ता है। किसी समय बड़ा नगर था। बाड़मेर जिले में तीन नगर ऐसे हैं जहां परकोटे व किले बने हुए हैं उनमें से एक कोटडा भी है। अभी भी परकोटे का एक दरवाजा व कुछ अवशेष विद्यमान हैं। कोटड़ा किसी जमाने में ओसवालों की २४ गाँवों की पंचायत का मुख्यालय था। बाड़मेर में रहने वाले पड़ाइयां (सिंघवी) गोत्र वाले कोटड़ा से बाड़मेर आये हुए है। यहाँ पर श्रीशीतलनाथजी का मन्दिर है तथा १८ पंच धातु प्रतिमाएं हैं जो कोटड़ा के ही खण्डहर हुये मन्दिरों से लायी हुई हैं। श्रीशीतल नाथजी की सर्व धातु की मूर्ति करीब आधा मीटर ऊँची मानवाकर है। इस पर कोई लेख नहीं है। यह मूर्त्ति ठोस न होकर अन्दर से खोखली है।

(२१)

१. पादुकाजी छोटे लेख :—

॥६०॥ शक्तिहर्षगणि कृतम/संवत् १५५७

(२२)

२. पादुकाजी छोटे लेख :—

संवत् १६७७ आसु सुदि ४ तिथौ पं. अभयवर्द्धनमुनिशिष्य नां पादुके कोटड़ा श्रीसंघ कारितं। प्र. वृधखरतरगच्छ श्रीजिनराजसूरिभिः

(२३)

३. पादुका जी बड़ी लेख :—

।। संवत् १५८१ वर्षे भादवा सुदि ४ दिनै श्रीगुणलाभगणी नां पादुके कारित प्रतिष्ठते श्रीकोटड़ादुर्ग मध्ये कल्याणमसूरिः

(२४)

४. पादुकाजी बड़ी लेख :—

संवत् १६०२ वर्षे आषाढ़ मास शुक्ल पक्षे नवम्यां तिथौ रविवार श्रीकोटड़ासंघेन कारित श्रीमजिनकुशलसूरीश्वर पादुका । स्वस्तिश्री-जयो नित्यम ।।

(२५)

५. चौबीसी-सब तीर्थंकरों व उनकी माताओं के नामपट्ट क्रमांक सहित:—

१ लेख——

संवत् १६०० वर्षे चैत्र मास सुदि ६

(२६)

६. पंच धातु प्रतिमा (१) श्री शान्तिनाथ जी:—

।। सं. १५३७ वर्षे वे. सुदी ६ दिने उकेशवंशे आईच्चणगोत्रे साधुशाखायां पवछा भा. वालहदे पुत्र गेला नरा गेलाभ्यां भा. गेलमदे पु. सोना रत्नपाल नरा भा. नारिंगदे पु. सहजा भा. सुहागदे पु गजादिस. श्रीशान्तिनाथबिंब का. प्र. श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरि पट्टे श्रीजिन-समुद्रसूरिभिः

(२७)

७. पंच धातु प्रतिमा (२) श्रीशीतलनाथजी :—

।। संवत् १५३० वर्षे पोष वदि २ बुधे श्रीब्राह्मणगछे श्रीश्रीमाल-ज्ञातिय: श्रेष्ठी षोजा भा. हांसी सु. धनाकेन भा. धर्मिणीयुतेन सु. धर्म्मा-सहितेन मात्र-पित्र-श्रेयार्थः श्रीशीतलनाथबिंब का. प्र. श्रीबुद्धिसागर-सूरिभि: किरिडूवास्तव्य ।।

(२८)

८. पंच धातु प्रतिमा ३ श्रीवासुपूज्यजी:—

सं. १५१२ वर्षे वैसाख सुदि १० गुरु उ. ज्ञा. सा. महिराज भा. ...रादे सु. नयिणमलय सीरामा म्यारामा भा. राजू मात्र श्रेयसे श्रीवासु-...र्बिब का. प्र. श्रीवृधब्राह्मणीया वटके श्रीउदयप्रभसूरिभि: श्री: ।।

(२९)

९. पंच धातु प्रतिमा (४) श्रीचन्द्रप्रभ स्वामीजी:—

।। संवत १५५५ वर्षे ज्येष्ठ सु. ३ सोमे । श्रीउएसवंशे । लालण-शाखायां सा. वेला भा. वील्हागदे पुत्र सा. वरजांग सुश्रावकेण भार्या श्री चांपलदे पुत्र रामा-भमरा-कुशला-देदा लघुभ्रात्र जैसासहितेन स्वश्रेयार्थं श्रीअंचलगछे श्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीचन्द्रप्रभस्वामीबिंब कारितं प्र. श्रीसंघेन ।।

(३०)

१०. पंच धातु प्रतिमा (५) श्रीशीतलनाथजी:—

।। १६५३ वर्षे अलाई ४२ माघ सुदि १५ सोमे उकेशवंशे चौपड़ा-गोत्रे सं. पूनसी पुत्र संप श्रीराज पुत्र संगुणयां उदयसिंह पुत्र अभयराज वछराज गोपालदास प्रमुखतया श्रीशीतलनाथबिंब कारित प्रतिष्ठित श्री-खरतरगछे श्रीजिनमाणिक्यसूरि-पट्टालंकार युगप्रधानश्रीश्रीश्रीजिनचन्द्र-सूरिभिः ।।

(३१)

११. पंच धातु प्रतिमा (६) श्री अभिनन्दन:—

संवत् १५५९ वर्षे माह सुदि १० दिने शनौ ऊकेशवंशे गणधरगोत्रे सा. देवा पुत्र सा. हर्ष श्रावकेण भार्या हीरादे पुत्र उदादियुतेन श्री-अभिनन्दणबिंब कारितं प्र. खरतरगच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरिपट्टे-श्रीजिनहंस सूरिभिः ।।

(३२)

१२. पंच धातु प्रतिमा (७) श्री शान्तिनाथजी :—

संवत् १५४१ वर्षे माह वदि ४ गुरौ श्री प्राग्वाटज्ञातीयमहं काला भार्या झमकू सुत हरदास भार्या हीरादे सामल भार्या अमरी पुत्रादियुतेन कुटुंबवृधेन श्रीशान्तिनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनदेवसूरिभिः श्री कड़ो ग्रामे ।

(३३)

१३. पंच धातु प्रतिमा (८) श्री पद्मप्रभजी :—

संवत् १४५० व. माह वदि-सोमे ऊके म. देवसी पुत्र हरपाल भा. सुहागदे पु. ऊका भा. कर्मादे पु. देवा-ईस-जस-धवलाभ्यां श्रीपद्मप्रभबिंब

प्र. श्रीसंघे श्रीसुमतिसूरिभिः ॥

(३४)

१४. पंच धातु प्रतिमा (९) श्रीशांतिनाथजी:—

संवत् १४५२ वर्षे जेष्ठे श्रीशांतिनाथबिंब। सा. कुष्टा कारितं। प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे ॥ श्रीजिनराजसूरिभिः ॥

(३५)

१५. पंच धातु प्रतिमा (१०) श्रीचन्द्रप्रभस्वामीजी:—

सं. १५१३ वर्षे जेष्ठ वदि ११ श्रीसावड़ारगच्छे उ. ग्रामे वागोरे स. वरा भा. वामलदे पुत्र वाढ़ा-लुभा-हांसा-करणसहितेन मात्र-पित्र श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभस्वामी-बिंब करा. प्र. श्रीवारसूरिभिः ॥

(३६)

१६. पंच धातु प्रतिमा (११) श्रीचन्द्रप्रभस्वामीजी:—

संवत् १५७५ वर्षे मा. वदि ८ सोम श्रीजागा भार्या जामूणदे म. शांगा भा. सील्हू हर्षादे श्रीचन्द्रप्रभ-बिंब कारापितं श्रीचित्रगच्छे श्रीजयाणंद-सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(३७)

१७. पंचधातु प्रतिमा (१२) श्रीमहावीरजी:—

स. १४८३ फागुण वदि ११ गुरौ उप. ज्ञातीय सा. देल्हा भा. धर्मिणि पुत्र मोल्हासहितेन श्रीमहावीर-बिंब कारि प्र. मजहड़ियागच्छे श्रीमुनिप्रभसूरिभिः ॥

(३८)

१८. पंच धातु प्रतिमा (१३) श्रीपार्श्वनाथजी:—

सं. १४६१ वर्षे माघ सु. १५ सूरज सा. गोत्रे साबू भा. साबू सा. चावड़ा भार्या चहिणदे पु. पाल्हा-सोल्हा पित्र-मात्र-भ्रात्र श्रे. श्रीपार्श्वनाथ-बिंब का. प्र. श्रीधर्मघोषगछे श्रीमलयचन्दसूरिभिः

(३९)

१९. पंच धातु प्रतिमा (१४) श्रीमुनिसुव्रतजी:—

सं. १५०७ वर्षे जेष्ठ सुदि २ दिने ऊकेशवंशे चौपड़ागोत्रे सा. [illegible]मोण पुत्र सा. देशलेनयुतेन श्रीमुनिसुव्रत-बिंब का. प्रति खरतरगछे [illegible]जिनभद्रसूरिभिः ॥

(४०)

२०. चौबीस ग्रामों की पठाल पर प्रतिष्ठा लेख:—

।।६०।। श्रीलक्ष्मीराणी विलास वक्षतमान श्रीकोटड़ा खेरपुर पृथ्वीराज नराधिप.............

वंदित खरतर साधु चुड़ामणि श्रीमद्‌जिनचन्द्रसूरि सुगुरु पिढ़िपादश स्तुतिः ।।१।।

संवसारं मुनि प्रहग्म रासंदुमान । विशाख मासि सितम नवमी पृधराना सिध वरणो धर्मशालो पठाल ।।२।। युग्मं ।। संवत् १६१४ वर्षे वैशाख सुदि ६ तिथौ बुधवार श्रीकोटड़ा नगरे ।। राणा श्रीपृथ्वीराज विजयराज्ये । श्रीवृहद्‌खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि-संताने श्रीजिनचन्द्रसूरि, श्रीजिनसमुद्रसूरि श्रीजिनहंससूरि श्रीजिनमाणिक्यसूरि पट्ट पूर्वाचलसह सूकरावतार श्रीजिनचन्द्रसूरि सूरीश्वर प्रवरधर्म कषानुयोग श्रवण प्रवण श्रवणान वसति करात्रण जात श्रीजैन । श्रीसुविदितणा हंसघन निर्मापिता पौषधशाला श्रीमद्देवगुरुप्रसादिना चन्द्रार्क चिरंजयतात् । श्रीरस्तु कल्याण-मस्तु ।। श्रीः श्रीः श्रीः

ग्राम कोरना

यह ग्राम बालोतरा आगोलाई बस मार्ग पर है । यहां पर एक जैन उपासरा है । यहाँ पर तातेड़ों का एक मन्दिर बनाया हुआ है । वह मन्दिर अधूरा है । जागीरदारों से लड़ाई-झगड़ा होने पर गाधैया डाल कर तातेड़ यहाँ से चले गये थे । मन्दिर की बनावट सुन्दर है ।

(४१)

१. उपासरा निर्माण का लेख:—

।।श्री पारसनाथजी सहाय छै । उपासरों पंचो महाराजा श्रीभीम-सिंहजी री वार में करायो जागीरी ईदा श्रीजोधसिंघजी री में ।।मु।। भीमों दुगड़ गोत्र सा. वाता भ्राता खेता फता । लिखत जगन्नाथजी गौड़ ।। सं. १८५४ रा वैसाख सुद ३ करायो ।

(४२)

२. पंच धातु प्रतिमा लेख—भाषा गुजराती:—

स्वस्ति श्रीमेहसाणानगरे सं. २०२८ वै. सु. ६ गुरुवारे मुनिराज श्रीधरणेन्द्रसागरजी ना उपदेशथी जोधपुर नि. ज्ञानदेवी हुक्मराज करणमलजी मोहनोत श्रीपार्श्वनाथ पचतीर्थी भराव्या छै। तपा ग्रा. श्रीकैलाशसागरसूरिग्रे प्रतिष्ठा करी छै ।।

(४३)

३. सती लेखः—

संवत् १८३३ वर्षे ग्रासोज सुद १३ दिन मा सती रतनां जात चौपड़ा बेटी हरनाथजी जात चोरडीया जयां रे लारे मा सती हुई तीणां उपरां बैठे बैठ प्रतिमा चढ़ाई तलाई कांठे प्रतिष्ठापितं ।

ग्राम खेड़

यह ग्राम बालोतरा स्टेशन से ८ किलोमीटर पर बाड़मेर-जोधपुर लाइन पर रेलवे स्टेशन है। किसी समय बड़ा नगर था तथा मारवाड़ के राठौड़ों की प्रथम राजधानी थी। ग्राज कोई जैन बस्ती या मन्दिर नहीं है परन्तु पुराने मंदिर के ग्रवशेष जसोल से प्राप्त हुए हैं जो यथास्थान उत्कीर्ण हैं। इससे मालूम पड़ता है कि यहाँ पर दो जैन-मन्दिर थे। एक श्री-ग्रादिनाथजी का तथा दूसरा श्रीमहावीर स्वामी का। इसी श्रीऋषभ-देव मन्दिर के स्तम्भ का लेख श्रीरणछोड़रायजी के मन्दिर के परकोटे में लगा हुग्रा है।

(४४)

१. श्रीरणछोड़रायजी मन्दिर के परकोटे में लगा लेखः—

।। श्री खेटयी भावदेवाचार्य गछे श्रीरिषभदेव-चैत्ये .... वीर-चन्द देसल पुत्र पालूण बालू पुत्र पूनमचन्द्र नागदेव नारायण ...... माणिक पुत्र जिनचन्द्र नेमिचन्द्र पुत्र धनदेव .... वैद्य जसपाल सिंधेल श्रेयार्थ। श्रीरिषभदेव चैत्यै तोरण कारापिता प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंह-सूरिभिः ।। संवत् १२३७ ग्रासाढ़ वदि ७

ग्राम खंडप

यह ग्राम मोकलसर पाली बस मार्ग पर ग्राया हुग्रा है। यहाँ पर दो जैन मन्दिर हैं। एक में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की प्रतिमा विराज-मान है तथा दूसरे में मूलनायक श्रीसुव्रतस्वामी विराजमान हैं।

श्रीपार्श्वनाथ मन्दिर

(४५)

१. श्री मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी प्रतिमा लेख—

संवत् १८६....वर्षे सावण.........गुरु........

(४६)

२. पंच धातु प्रतिमा—

।। संवत् १५२८ वष........उपकेशज्ञातीय छाजेड़गोत्रे सा. पाता भा. सूहवदे पुत्र नरसिंघ-त्रिणांसहितेन श्रीमुनिसुव्रतबिंब कारितं प्रतिष्ठितं पल्लीवालगछे श्रीयशोदेवसूरिपट्टे श्रीश्री श्रीनवरत्नसूरिभिः आत्म पुण्यार्थं ।

श्रीसुव्रतस्वामी मन्दिर

(४७)

३. श्री मूलनायकजी प्रतिमा लेख—

संवत् २०२५ मार्ग शुक्ल ६ चन्द्रे प्रतिष्ठापिता खण्डप श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभिः श्रीमूलनायक स्थापना शा. दलिचंद चम्पालाल फरसराम बिनायकिया ।

(४८)

४. पंच धातु प्रतिमा लेखः—

सं. १५०१ माघे मुंडसलवासि प्राग्वाट श्रे. मणीरसी भार्या पूनादे पुत्र हर्षनाम्ना श्रीअभिनन्दनबिंब कारितं प्र. तपा श्रीसोमसुन्दर-सूरि-शिष्य-श्रीमुनिसुन्दरसूरिभिः

(४९)

५. पंच धातु प्रतिमा लेखः—

संवत् १३३७ वैसाख सुद ७ शा. बारूपाल भार्या वाल्हणदेवी पुत्र वाड़ा भार्या ....पु. बुड़ाकेन पित्रोः श्रेयो श्रीशान्तिनाथबिंब का. प्र. श्रीविजयप्रभ ।।

(५०)

६. जैन जूंझार लेख—

संमत १९४७ मू ।। हीरजी मती असाढ़ सुद १३

ग्राम गुड़ा-मालानी

यह ग्राम आजकल तहसील का मुख्यालय है। यहाँ बाड़मेर तथा बालोतरा से सिणधरी होकर बसें आती-जाती हैं। गांव लूनी नदी के किनारे बसा हुआ है।

श्रीपार्श्वनाथ मन्दिर व दादावाड़ी

(५१)

१. दादावाड़ी प्रतिष्ठा लेख—

सं. २०४२ फा. शु ३ गुड़ामालानीग्रामे श्रीजिनकुशलसूरिप्रतिमा-प्राण-प्रतिष्ठापितं आ. जिनकांतिसागरसूरि-शिष्य-मुनिमणिप्रभसागरेण-खरतरगच्छ श्रीसंघेन कारापितं।

(५२)

२. श्रीमूलनायकजी श्रीपार्श्वनाथजी प्रतिमा लेख—

संवत १५४६ . — श्रीमालसंघे।

(५३)

३. पादुका लेख—

॥ संवत १८३५ मिति फाल्गुन वदि ५ शुक्रे गुढ़ा ... धर्मगणि पं. महिमाधर्ममुनि, पं. राजधर्म मुनि पं. ज्ञानसारादिसहितैः ॥श्री॥

(५४)

४. पादुका लेख—

श्री जिनकुसलसूरिणां पादुका

(५५)

५. पादुका—

श्री जिनदत्तसूरिणां पादुका

(५६)

६. पादुका—

सं. १८३५ मिति फाल्गुन वदि ५ शुक्रे गुढ़ा —.......................... ज्ञानसारादि।

तपागच्छ मन्दिर की प्रतिष्ठा होनी है--

(५७)

७. पादुका लेख--

श्रीपार्श्वस्य पादुके

(५८)

८. पच धातु प्रतिमा लेख--

सं. १५२७ मा. व ७ मउड़ीवासी प्राग्वाट सा. महिपा भा. हर्षू पु. खेताकेन भा. खेतलदे प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रीश्रीश्रीआदि बिंब का. प्र. तपागच्छेश श्रीरत्नशेखरसूरि-पट्टालंकार श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

एक खण्डहर मन्दिर लूनी नदी के किनारे बना हुआ है। यह मन्दिर पूर्ण रूप से इटों से बना है। गर्भगृह व आगे चबूतरा ईंटों का बना हुआ है।

ग्राम चौहटन

यह इसी नाम की तहसील का मुख्यालय है। बाड़मेर से बस से जुड़ा हुआ है तथा बाड़मेर से दक्षिण-पश्चिम आया हुआ है। जैन समाज के दो मन्दिर व एक दादावाड़ी है। एक टीले की खुदाई में कुछ मूर्त्तियें प्राप्त हुई हैं जो सातवीं-आठवीं शताब्दी की हो सकती है। श्री शान्तिनाथजी के शिखरबन्द नवीन मन्दिर व दादावाड़ी की प्रतिष्ठा अभी शेष है। प्राचीन घर मन्दिर श्री पार्श्वनाथजी का है। श्रीमूलनायकजी की श्याम पाषाण प्रतिमा है, लेख कोई नहीं है।

(५९)

१. पंच धातु प्रतिमा लेख--

सं. १४५८ वर्षे फागुण वदि १ शुक्रे उपकेशज्ञातीय चांगा सा. रत्नसी भार्या आकी पुत्र रूपाकेन श्रीशान्तिनाथ-बिंब कारितं प्र. श्री-पल्लिगच्छे श्रीशान्तिसूरिभिः ॥

खुदाई में प्राप्त मूर्त्तियों का विवरण इस प्रकार है—

१. श्री महावीर स्वामी जी की श्वेत पाषाण प्रतिमा पद्मासन। करीब एक मीटर।

२. जिन प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा पैर के पास स्त्री-मूर्ति। श्वेत पाषाण। करीब आधा मीटर।

३. जिन प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा। श्वेत पाषाण। करीब आधा मीटर।

४. कीर्तिमुख। पद्मासन जिन-प्रतिमा। दोनों किनारों पर युगल स्त्री-पुरुष। श्वेत पाषाण।

५. कीर्तिमुख। पद्मासन जिन-प्रतिमा दोनों किनारों पर युगल स्त्री-पुरुष। श्याम पाषाण।

६. श्वेत पाषाण अम्बिका। आधा मीटर

७. श्रीपार्श्वनाथ जिन-प्रतिमा। पद्मासन। मय परिकर। करीब आधा मीटर।

८. देव-प्रतिमा श्वेत पाषाण

९. देवी-प्रतिमा चारभुजा। मकरासन। आधा मीटर।

१०. श्याम पाषाण जिन-प्रतिमा। कायोत्सर्ग मुद्रा।

ग्राम जसोल

यह ग्राम जोधपुर बाड़मेर के बालोतरा रे. स्टेशन से तीन किलोमीटर दूर है। बालोतरा व जसोल के बीच लूनी नदी बहती है। बालोतरा से नाकोड़ाजी जाने वाले बस मार्ग पर स्थित है।

जसोल वृहत्खरतरगच्छीय जैनउपाश्रय यतिजी चुन्नीलालजी लालचन्दजो।

(६०)

१. पोषधशाला-निर्माण लेख:—

श्रीगौड़ीपार्श्वनाथजी सहाय ।। श्रीगौतमस्वामीजी लब्धी ।। श्रीमहालक्ष्मीजी रिद्धि वृद्धि कुरु ।। श्रीभैरू बावन वीर गोरा काला चोसठ जोगिनी सुप्रसन्न भवन्तु ।।श्री।।२४।।श्री।।

श्रीजिनायनमः। ॐ ह्रीम श्रीम् नमः ।। संवत १८४८ वर्षे आसोज सु. ९ नवमी थी उपासरे रो कारखानो शुरु कीनो श्रीवृहतखरतरगच्छे जंगम युगप्रधान विद्यमान भट्टार्क जी. श्री १०८ श्रीश्रीजिनचन्द्रसूरिजी विजयराज्ये श्रीश्रीजिनभद्रसूरि साखायाम उपाध्याय श्री १०८ श्रीकनकचन्द्रजीगणी तत्शिष्यवाचकश्रीश्रामहिमाकल्याणजी तत्शिष्य उपाध्यायजी श्री १०८ श्रीताराचन्दजीगणि तत्शिष्य उपाध्यायश्री-

श्रीगोड़ीदासजीगणी भ्राता वाचकश्रीश्रीरामसिंघजीगणी ततशिष्य विद्यमान पंडितप्रवरश्रीदेवीचन्दजो पडितप्रवर श्रीवषताजी पंडित श्रीमाणकचन्दजी पडित महासिंघजो ततशिष्यपडित रूपचन्द पंडित आनन्द-चन्द पडित सम्भूराम पडित घनरूप चिरू गुलाबचन्द सपरिवार-शिष्य-सहितेन श्रीमहेवादेशे श्रीपाय तखत श्रीजसोलनगरे राठहुड़ रावलजी श्रीभारमलजी ततपुत्ररावलजीश्रीजेतमालजी ततपुत्ररावलजीश्री-कल्याणमलजी तत्पुत्ररावलजीश्रीप्रतापसिंघजी भ्रात श्रीराज श्रीबाघ-सिंघजी राजश्री शीवदानसिंघजी राज श्रोसवाईसिंघजी विद्यमान रावलजी श्रीवषतसिंघजी राज श्रीपृथ्वीराजजी राज श्रीशेरसिंघजी राज श्रीमालदेजी कुंवरजो श्रीशरतसिंघजो विजयराज्ये महेवचा समस्त सिरदारोंसहितेन श्रोवृहतभट्टार्क खरतरगच्छे श्रीसंघ समस्त अग्रदेन नवीन पौषघशाला करापितं श्रीसंघ मोक्ष मुत्ता श्रीढेलरियागोत्रे मुत्ता श्रीगांधीगोत्रे मुत्ता भंसालीगोत्रे श्रीकुंकुम चौपड़ागोत्रे गणधर डोसी चौपड़ागोत्रे श्री कांकरियागोत्रे श्रीसंखवालेचागोत्रे गोलेछागोत्रे पारखगोत्रे बजहड़गोत्रे लुणियागोत्रे नाहटागोत्रे बाफणागोत्रे चतुरगोत्रे फोगटगोत्रे समस्त श्रीसंघ आग्रहेन प्रदेवच पंडित वषता पंडित महासिंघ चिरू रूपचन्द आनन्द शंभु घनरूपचन्द गुलाबचन्द परिवारसहितेन पौषधशाला करापितं। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु श्रीसंघ जयवंता भवंतु ॥

सलावता इसाक पुत्र करीम मेहमद। अभयराम पौषधशाला आदनेन कृत ॥ श्री ॥ श्री ॥

(६१)

२. स्तम्भ लेख:—

॥संवत् १८२५ वरषे भाद्रवा वदि ६ दिने उपाध्यायजी श्रीताराचंद जी गणि कक्ष पादिका ॥ पंडत जैराजेन करावतं ॥

(६२)

३. श्वेत पाषाण परिकर पर लेख। यह परिकर खेड़ के भग्न मन्दिर से लाया हुआ प्रतीत होता है।

सं. १२४३ पोष वदि १ श्रीभावदेवाचार्यगच्छे श्रीखेटिय ऋषभदेव चैत्ये श्र. धांधल सुतविमलचन्द्रेण भ्रातृ-दासल-थिरदेव-मूलदेव आसाणंद-आल्हा सुतमणोहर-सोमदेव-भगिन्यारूपिणी पद्मिन्यादि समस्त कुटुम्बसहितेनआत्मश्रेयार्थे श्रीशान्तिनाथबिंब कारितं ॥

(६३)

जसोल खरतरगच्छ उपासरे का परवाना

।। श्रीरामजी ।।

सही

। राज श्री वाघजी कुवर श्री प्रथीराजजी लिखावतु गाम जसोल में गुरां श्रीताराचन्दजी रा चेला देवीचन्दजी वखतोजी जयराजजी महासंघजो रहे छै सु दरबार सुं रजाबन्दो होयने राखोया छै सो इण बाबत नै इणांरे उपासरे बाबत कोई श्रीपूज सरदार महाजन साकर सुकर रजपूत कोई इणों सुं केवत करण पावे नहीं अे आद अनाद रा म्हारा गुरु छै सो इणा ने कोई कहसी तो जसोल रे धणीयों ने वैराजी करसी. ने इणो रे कोई काम काज परसी तो राज श्रीवाघजी कुवर प्रथीराजजी इणो रो बेटो पोतरो होसी तको इणा रे चेला पोतरों रो गोर बरदाश राखसी ने इणा सु घर वद रो जाब राखसी अो लिखत माऊजो श्रीभटियाणीजी श्रीवाघजी हजूर रजाबन्दी किनो छै सं. १८२६ रा काती सुद ८ लिखतु मुता हुक्मा रा छै। साख १ सोलंकी आद री छै हुक्म सूं।

तपागच्छ जैन मन्दिर

(६४)

५. शिलालेख रंग-रोगन के कारण अस्पष्ट:—

संवत् १८८२ वर्षे भादवा वदि २ दिने रवीवार उ. आ. निखत्रे राउल श्रीवोरमदेवजी विजयराज्ये असाउल नगरे महेवे सेठ अभाजी तेज माल नार (नो)तनजी सुखराजजी लक्ष्मीचन्दजी देवराजजी ... ... श्रीकुंथनाथ श्रीशांतिनाथ........समस्त साहूकारान शुभ दिने भवन करापिता श्री श्रो श्रो

(६५)

६. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

संवत १४७६ वैसाख वदि २ श्रीऊकेशवंशे छाजड़गोत्रे सा. खेता पु. आसधर पु. करमा भा. क्रमादे पु. भारमलेन भा. भरमादे पु. सहणसा सुश्रीआदिनाथबिंब कारितं आत्मश्रेयसे प्रति. श्रीपल्लीवालगच्छे श्रीयशोदेवसूरि।

(६६)

७. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

।। सवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्रीउपकेशगच्छे श्रीकुकुदाचार्यसंताने श्रीउपकेशज्ञातौ विचर गोत्र सा. दादू पु. सा. श्रीवस पु. सा.

सुललित भा. ललतादे पु. साहणकेन भा. संसारादेयुतेन पित्ररौ श्रेय-से श्रीअजितनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीश्रीकक्कसूरिभिः।

(६७)

८. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं. १५१६ माघ सु, १ सोम श्रा. प. सावंत भा. नासलदे पुत्र मुदाकेन भा. वाल्हमाल्ही पु. मेरा-तोलादियुतेन स्वश्रेय से श्रीकुंथुनाथबिंब कारितं प्र. तपा. श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।।

तपागच्छ उपासरा

अक्षरों में गलत तरीके से रंग भरने से लेख खराब हो गया है।

(६८)

६. .... श्री १०८ विजयदेव .... सकल पंडित सिरोमणी श्री १०८ श्रीइन्द्रसागरजी........ श्रीश्रीमाणिकसागरजी तत्शिष्य संजय-सागरजी मिथुनसागरजी शिष्य सुखसागरजीसहितेन कारापिता .... रावलजी श्रीसूरजसिंघजी

श्रीशांतिनाथजी मन्दिर श्रीसंघ खरतरगच्छ

(६९)

१०. २४ तीर्थंकरों की माताएं-श्वेत संगमरमर नामपट्ट संवत् १३५९

(७०)

११. श्रीमूलनायकजी शांतिनाथजी लेख:—

संवत् १२३२..........आल्हणदेव गुणचन्द्र कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः

(७१)

१२. पादुका लेख:—

संवत १७ रा फागुण सुदि २ वाचनाचार्य श्रीहीराणंदजी वाचना-चार्य श्रीजीवराजजी उपाध्याय श्रीकनकचन्द्रजी वाचनाचार्य श्रीमेघराजजी भट्टार्क श्रीलाभसूरि राज्ये जसोल श्रीसंघे करापितं पंडित ताराचन्द उपदेशात।

(७२)

१३. खेड़ के भग्नावशेष श्रीमहावीर मन्दिर का पाषाण पट्ट जो जसोल में प्राप्त:—

१. संवत १२४६ वर्षे कार्त्तिक वदि २ श्रीभाव

२. देवाचार्यगच्छे श्रीखेट्टिय श्रीमहावीर मूल चैत्ये
३ श्रे. सहदेवसुतेन सोनिगेन आत्मश्रेयोर्थं
४. संभवजुगं प्रदत्तं ॥

जूना बाहड़मेर

बाड़मेर से दक्षिण पश्चिम में जूना बाहड़मेर आया हुआ है। १६०० ई. से पहले बाड़मेर के लोग वहीं रहते थे। यह बाड़मेर से लगभग २२ कि. मीटर पर आया हुआ है। बाड़मेर जिले में तीन नगर हैं जहाँ परकोटा व किला बना हुआ है। इसमें जूना बाहड़मेर एक है। बाड़मेर से मुनाबाव जाने वाली गाड़ी से जसाई स्टेशन उतर कर जूना बाहड़मेर जाना पड़ता है। जसाई स्टेशन से लगभग ५ कि. मीटर का रास्ता है। नगर पहाड़ों के बीच में आया हुआ है। यहाँ श्री आदीश्वर भगवान् का उत्तुंग तोरण मन्दिर आजकल खण्डहररूप में विद्यमान है। गर्भगृह व सभामण्डप की कारीगरी देखने लायक है। सभा मण्डप के स्तम्भ पर वि. सं. १३५२ का लेख है वह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

(७३)

लेख इस प्रकार है—

१. ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहड़मेरौ महाराज
२. कुल श्रीसामन्तसिंहदेव कल्याण विजयराज्ये तन्नियुक्त
३. श्री २ करणे वीरासेल वेलाउल भा. मिगल प्रभृतयो
४. धर्माक्षराणी प्रयच्छन्ति यथा श्रीआदिनाथ मध्ये सन्ति
५. ष्ठमान श्रीविघ्नमर्दन क्षेत्रपाल श्री चउण्ड देवाराजयो
६. उभयमार्गीय समायात सार्थं उष्ट्र १० वृष २० उभयादपि उर्द्ध
७. सार्थं प्रति द्वयोर्देवयो: पाइलापक्षे भीमप्रिय दशविंशोपक
८. अर्दोर्द्धेन ग्रहीतव्या। असौ लागो महाजनेन मानित: यथोक्तं
९. बहुभिर्व सुधायुभुक्ता राजभि: सगरादिभि: यस्य यस्य यदा भू
१०. मी तस्य तस्य तदा फलं ॥छ॥

यह लेख इसलिये महत्वपूर्ण है कि इस लेख में जालोर के चौहान राजा सामन्तसिंहदेव का नाम आया हुआ है। इन्हीं के पुत्र कान्हड़देव पर वि.स. १३६७ में अलाउद्दीन खिलजी ने हमला किया था। कान्हड़दे प्रबन्ध के अनुसार उस समय सिवाना, बाहड़मेर व सांचोर पर भी हमला किया गया था। उसी समय यह मन्दिर तोड़ा गया होगा।

इस लेख से मालूम होता है कि कर लगाने में दस ऊंट माल व बीस बैलों पर माल बराबर माना जाता था। कर महाजनों की राय से वसूल किया जाता था।

ग्राम जेठन्तरी

यह ग्राम बालोतरा समदड़ी बस मार्ग पर आया हुआ है। यह ग्राम बाड़मेर जोधपुर रेल मार्ग का भी रेल्वे हाल्ट है। यहाँ पर एक घर मन्दिर है।

(७४)

१. श्रीशीतलनाथजी प्रतिमा—

संवत् १६८१

(७५)

२. पंच धातु प्रतिमा:—

संवत १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ५ रवि प्राग्वाटज्ञातीय सा. जगमाल भार्या अमरी सुतसोमा भार्या सोभागिणि आत्मश्रेयार्थ श्रीआदिनाथ बिंब कारितं श्रीवृघतपागच्छे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(७६)

३. ताम्रपट्ट चारों ओर लेख (तीर्थ पट्टा)—

पंक्ति (१) ॥६०॥ स्वस्ति श्री संवत १६८१ वर्षे श्री स्तंभ तीर्थ नगर वास्तव्य श्री ओसवाल ज्ञातीय सा. देवा भार्या देवलेद पुत्र सा. राजा भा. रमादे ॥

पंक्ति (२) पुत्ररत्न सा. हेमा-खीमा-लाखा भा. गोई पुत्ररत्न जयंतपालाकेन भ्रातृ पुत्र सा. जगमाल्न जिणपाल-महिपाल-उदयकिरण ॥

पंक्ति (३) श्रीविद्याधर-रत्नसी-जगसी-पदभसी पुत्री लाली भ. भरघाई प्रमुख समस्त कुटुंब युतेन स्व श्रेय से ॥ श्रीतपागच्छ नामक श्रीश्रीश्री ॥

पंक्ति (४) हेमविमलसूरिणामुपट्टरान श्रीतीर्थ पितलमयार कारापिता: प. लब्धिश्रुतगणि वारके सा. लाखाकेन कारापिता: ॥

तिलवाड़ा

यह ग्राम बाड़मेर जोधपुर रेल मार्ग पर आया हुआ है। यह लूनी नदी के किनारे बसा हुआ है। यहाँ पर चैत्र मास में भारत प्रसिद्ध श्रीमल्लिनाथजी का पशु मेला भरता है। यहाँ पर आज कोई जैन बस्ती

नहीं है परन्तु पूर्वकाल में रही होगी, ऐसा यहां के खण्डहर जैन मन्दिर से मालूम पड़ता है। यहाँ एक ईटों का बना हुआ शिखरबन्द मन्दिर है जो जमीन में धंस रहा है। उसके दरवाजे में जाने के लिये भी हाथों के बल रेंगना पड़ता है।

थोब

यह ग्राम बालोतरा आगोलाई बस मार्ग पर आया हुआ है। यहाँ पर एक उपासरा है जिसमें एक पंच धातु प्रतिमा है।

(७७)

१. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं. १५६८ वर्षे माह सुदि ४ गुरौ उएके कून्तीयान्तरगोत्रे। सा. साजण भा. सारवई पु. श्रोरग भा. सकतादे पुत्रपदमानंग त्रोरडातेन भ्राता पुण्यार्थ श्रीऋषभबिंब कारितं प्रतिष्ठित श्रीधर्मघोषगछे जति श्रुतसागर-सूरिभिः ततऽट्ट श्रीश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।। श्रुतं ।।

यहाँ पर तालाब पर जैन देवलियां भी प्राप्त हुई है जिनके लेख इस प्रकार हैं—

(७८)

१. ।। श्रीरामजी ।।

संवत १९०१ पोह वद १३ वार सोम दन मु. वागाजी बालसंदाणी जात लुणोया लारे सती हुई संपादे महेवसा कलांणसिघजी री वार में। लीखत रामा दुरगा।

(७९)

२. ।। श्रीरामजी ।।

संवत १९०४ रा सरामण सुद १ रे दन सा. वाला राणांणी जात रा वागरेचा तणां लारे सती हुई १९०४ रा आसोज सुद १२ रे दन हुई मास २ दन ११ पची हुई। मेवसा ढा. श्रीकलाणसीगजी उदेसीगोत।

धोरीमना

यह ग्राम ग्राम बाड़मेर से दक्षिण में आया हुआ है। यह गांव पंचायत समिति का मुख्यालय है तथा गुड़ा मालानी तहसील के अन्तर्गत है। बाड़मेर से यहाँ तक बस सेवा है तथा बाड़मेर सांचोर, बाड़मेर अहमदाबाद बस के रास्ते पर है। यहाँ पर एक जैन मन्दिर है जो घर मन्दिर है। मूलनायकजी श्रीशान्तिनाथजी है। यहां निम्न लेख प्राप्त हैं।

(८०)

१. श्रीमूलनायकजी श्रीशान्तिनाथजी प्रतिमा पर अस्पष्ट लेख—

सवत १६५२ श्रीविजयराजसूरि······

२. दादाजी जिनकुशलसूरिजी प्रतिमा लेख—

।। स. २००१ वेसाख कृष्ण ६ श्रीधोरीमना-संघेन श्रीजिनकुशल-सूरि मूर्ति-प्रतिष्ठितं ।

(८२)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख—

स. १४८१ वर्षे माघ सुद १० सोमे उसवालज्ञातीय संघवी झड़सिल भार्या सुहवदे तयो पुत्रा दुसल वजो नरोया श्रेयार्थं श्रीविमलनाथबिंब का. श्रीअचलगछे श्रीजयकीर्तिसूरि उपदेशेन प्र. श्रीसूरिभिः

(८३)

४. पंच धातु प्रतिमा नवीन भाषा गुजराती—

राँका सेठिया जोधराज प्रतापमलजीयेनि धर्म-पत्नि मीरा बेन, धोरीमना तरफ श्रीदेरासर में सं. २०३५ श्री अंजनश्लाका विधि पू. आ. वि. कनकप्रभसूरिजी तथा पू. आ. वि. भुवनशेखरसूरिजी आ. रत्नशेखर-सूरिजी आ. रत्नशेखरसूरिजी निश्रामां भाव नगर मां वि. सं. २०३५ माध शुक्ल १४ ता. १०-२-७६ ना शुभ लग्ने कराई छे।

नगर

यह ग्राम प्राचीन है। इसका प्राचीन नाम राड़धरा नगर था। एक खण्डहर मन्दिर श्रीमहावीरस्वामीजी पर वि. सं. १२८० का लेख है। इतना पुराना और इतना अलंकृत जैन मन्दिर दूसरा कोई नहीं मिला। मन्दिर में गर्भगृह सभामण्डप इत्यादि भव्य व कलात्मक है। मन्दिर आधा जमीन में धंस चुका है। पास में नया मन्दिर बनाया गया है। मूलनायकजी श्रीअजीतनाथजी हैं। यह ग्राम बालोतरा गुड़ा बस मार्ग पर है। बाड़मेर से भी सिणदरी होकर जाया जाता है।

(८४)

१. जीर्ण शीर्ण श्रीमहावीरजी मन्दिर पर लेखः—

।। सवत् १२८० अश्विनि वदि १४ रवि देव श्री.... ......श्रे. जसहृरि...... आत्म श्रेयार्थं..........

(८५)

२. ।।६०।। संवत १५१६ वर्षे पोस वदि ११ दिने गुरुवारे श्रीराठउड़

राजो श्रीसोनम पुत्र श्रीश्रीवयरसल्ल नरेश्वरेय बांधव सांमल सा. हांसा पुत्र हरीय सुख सपरिवारेय तेजबाई भरतार भाटि महिप पुण्यार्थे गोविन्द-राजेन श्रीश्रीमहावीरचैत्ये वा. मोदराजसूरि उपदेसे........सुभ भवतु ।।नारदेन लखत।।

(८६)

३. मूलनायकजी श्रीअजीतनाथजी मन्दिर लेख:—

पादुका पर लेख: —

सं. १६५२ वर्षे श्रीखरतरगच्छ आचार्य श्रीनुवरत्नसूरिणां पादुका करापित श्रीसूत्रधार पवहण ।

(८७)

४. पादुका लेख:—

।। श्रीपार्श्वनाथ नमः सं. १६५६ वर्षे श्रीअचलगच्छेश श्रीविवेक-मेरुगणि चैत्र सुदि ७ दिने स्वर्गगताः श्रीरायधड़ापुर मध्येएषः पादुका प्रतिष्ठितं श्रीसंघ ।

(८८)

५. पादुका लेख:—

श्रीजिनकुशलसुरिणां पादुका कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीश्रीजिनसिंह-सूरिभिः कल्याणमस्तु ।

(८९)

६. पादुका लेख:—

।।संवत् १६७१........उपाध्याय श्रीदेवशेखरैः ।।श्रीसंघ श्रीवाचक श्रीरत्नशेखराणां पादुकाः कारापिता प्रतिष्ठित च कल्याण लिखतु ।।

(९०)

७. श्रीमूलनायकजी श्रीअजीतनाथजी पर लेख:—

सवत् १७५८ वर्षे वैसाख सुद ६

(९१)

८. छोटी प्रतिमा लेख:—

संवत १५९८ वर्से वैसाख सुद ३ शुक्रस्य

(९२)

९. छोटी प्रतिमा पर लेख:—

श्रीसुपार्श्वनाथबिंब का. प्रतिष्ठितं श्रीजिवचन्द्रसूरिभिः

(६३)

१० पंच धातु प्रतिमा लेख: –

संवत् १४३८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ शनै: श्रीप्राग्वाटज्ञातीय को. पदमा भार्या श्रियादे पुत्रकानाकेन अंबिका कारापिता ।

(६४)

११. पंच धातु प्रतिमा:—

सं. १५६२ वर्षे चेत्र वदि ५ शुक्रे उपकेश सा. नरपाल भा. नामलदे पु. देल्हा भा. भरमादे पु. तेजा-रुपा आत्मश्रेयार्थं श्री ....नाथबिंब का. उपकेशगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीसिद्धिसूरिभि:

(६५)

१२. पंच धातु प्रतिमा:—

सं. १३०६ वर्षे फागुण वदि ४ सा. जिनचन्द्र सुत लक्ष्मण सुत कुमराकेन सुत निजपाल श्रेयार्थं श्रीपार्श्वनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजयदेवसूरि शिष्य श्रीअमरचन्दसूरिभि:

(६६)

१३. पंच धातु प्रतिमा:—

संवत १२०३ फागुण सुदि ६ ब्राह्मणगच्छे मातृ-भृत्य-सिरिश्रेयसे सा. मंजुसेन कारिता ।

(६७)

१४. पंच धातु प्रतिमा:—

॥ संवत १५२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ६ उपकेश वंशे तेलहरागोत्रे म. मदन पुत्र म. बाहड़ पुत्र म. राजा म. देवदतयो म. राजाकेन पुत्रसूरा-सहितेन श्रीसुविधिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगछे श्रीजिन-भद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभि: सुभ भयात् ॥

टापरा

यह ग्राम बालोतरा से सिणधरी जाने वाली बस के रास्ते पर आया हुआ है। यहाँ पर घर मन्दिर है। श्रीमूलनायकजी श्रीपार्श्वनाथजी की श्याम पाषांण प्रतिमा करीब चौथाई मीटर ऊंची है। दूसरी प्रतिमा श्वेत पाषाण की श्रीअम्बामाता की है जो करीब २/३ मीटर है। दोनों प्रतिमाओं पर कोई लेख नहीं है :

डंडाली

यहां पर सिणधरी से प्राईवेट बस जाती है। ग्राम लूनी नदी के किनारे बसा हुआ है।

(९८)

१. स्थापना लेख—

ॐ परम पूज्य मेवाड़ केसरी आचार्यदेव श्रीमद्‌विजयहिमाचल सूरीश्वरजी महाराज के शिष्य रत्न मुनि श्रीलक्ष्मीविजयजी मुनि श्रीमानकविजयजी के उपदेश से डडाली श्रीसंघ द्वारा निर्मित लक्ष्मी भवन—

(९९)

२. पंच धातु प्रतिमा छोटी—

संवत १५३४ वर्षे फागुण सुदि ३ उसवाल जगतसिंह देवराज भार्या भारु पुत्र राजेन्द्र वच्छराज भा. राजलदे पुत्र विजा किरता सहितेन स्व श्रेयार्थं श्रीसुवधिनाथबिंब कारापितं प्र. श्रीवृहदगच्छ श्रीदेवचन्द्रसूरि पट्टे श्रीदेव उजरसूरिभिः ।।

(१००)

३. पंच धातु प्रतिमा बड़ी—

सं. २०२८ ज्ये. शु ४ भृगुवासरे इयं संभवनाथ जिनेन्द्र चतुर्विशतिका हिमाचल स्ते वाली लक्ष्मीविजयो पदेशात डंडाली वास्तव्य मरलीया गोत्र थानमलस्य पुत्र भूरचन्द चंपालाल रिखबचन्द पुत्र पुत्रैः का प्रतिष्ठापिताच सिलंदर श्रीसंघेन प्र. वि. हिमाचलसूरिभिः श्री रस्तु लिः लक्ष्मी विजयः

पचपदरा

यह ग्राम बालोतरा जोधपुर बस मार्ग पर आया हुआ है। बालोतरा से पचपदरा साल्ट रेलगाड़ी भी जाती है। यह गांव इसी नाम की तहसील का मुख्यालय भी है।

मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी भगवान का शिखर बन्द मन्दिर

(१०१)

पंच धातु प्रतिमा लेख—मूलनायकजी शांतिनाथजी जालोर नि. मनरुपचन्द शेठ किशोरचन्द मीठालाल कारित अंजनशलाका स्वस्ति

श्रीपालीनगरे वीर सं २५११ पोष वदी ६ दिन श्रीनवलखा पार्श्वनाथ जैनमंदिर द्रव्येन ह: शेठ नवलचन्द सुप्रतचन्द जैन पेढी पाली कारितं आ. कैलाससागरसूरीश्वरैः प्रतिष्ठितं ।।

(१०२)

२. श्रीपार्श्वनाथजी संगमरमर प्रतिमा—

श्रीम. श्रीजिनराजसुरि गुणचन्द्रः शान्ति ।।

(१०३)

३. श्रीसुमतिनाथजी संगमरमर प्रतिमा—

।। संवत १६७७ वर्षे श्रावण २ दिने मेड़तानगर सा. रत्न भार्या रखणादे पुत्र सा ......भार्या लालनदे नाम्न श्रीसुमतिनाथबिंब कारित प्रतिष्ठितं जुग. प. भट्टारक श्रीम. श्रीजिनराजसूरीश्वरसहित ।।

दादावाड़ी जैन श्वेताम्बर

(१०४)

४. श्रीपादुकाजी लेख:—

।। संवत १९४१ वर्षे शाके १८०६ प्रवर्तमाने जेष्ठमासे शुक्लपक्षे: पंचम तिथौ ५ गुरुवासरे दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिः जिनकुशलसूरिश्वर चरण प्रतिष्ठित ... ...मुता धरमज श्रीसंघउपदेशतः श्रीरस्तु। कल्याण-मस्तु ।।

श्रीपायचन्दगच्छ जिनालय

(१०५)

५. पंच धातु प्रतिमा :—

।। १५३२ वर्षे वैसाख सुदि ३ श्रीजिनम सुराणगोत्रे सा. जयता पुत्रहेमा भ्रात-हाँसलाहस्त श्रीअजितनाथबि. प्र. श्रीधम्मघोषगच्छे श्रीपद्माणादसूरिभिः। श्रीरस्तु ।।

(१०६)

६. पंच धातु प्रतिमा:—

।। सं १५२५ वर्षे मागसिर सुदि १० शुक्रवारे पवित्रे श्रीबाफणा गोत्रे सा. जयतासताने सा. सोनपाल पत्नि सोनलदे पुत्रौ सा. सीधरेण भ्रातृसमुदाययुतेनमू श्रेयसे श्रीकुंथनाथबिंब का. प्र. श्रीवृहद्गच्छीय श्रीमेरुप्रभसूरिपट्टे श्रीराजरत्नेसूरिभिः ।। श्रीरस्तु ।।

उपासरा

(१०७)

७. यक्षदेवलेख:—

प. पू. मेवाड़केसरी नाकोड़ा-तीर्थोद्धारक आचार्यदेव श्रीमद्-हिमाचलसूरीश्वराणां श्रीत्रिमुखयक्षदेव शा. अमीचन्दजी गुलाबचन्दजी पुत्र पौत्रस्य श्रीहजारीमलजी सालेचा पचपदरा वालों ने करा प्रतिष्ठितस्य स्थवीर मालानी देशोद्धारक श्रीलक्ष्मीविजय वि.सं. २०३७ वै. शु. १० गुरौ

(१०८)

८. श्रीमणिभद्र लेख:—

वि. सं. २०३३ फा. कृ. ७ गुरौ अयं तपागच्छरक्षक मणिभद्र यक्षराट पचपदरासंघेन का. प्र. केलवाड़ा प्रतिष्ठित विजय हिमाचलसूरिभिः लि. पं. श्रीविद्यानन्दविजयगणिनां श्रीरस्तु ।

(१०९)

९. वि. सं. २०३३ फा. कृ. ७ गुरो इदं श्रीसंभवनाथबिंब पचपदरा संघेन का. प्र. केलवाड़ा श्रीसंघेन प्र. तपागच्छेश श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वर संतानीय हितांतेवासि विजयहिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु ।

(११०)

१०. प. पू. मेवाड़केसरो नाकोड़ा-तीर्थोद्धारक आचार्यदेव श्रीमद्वि-जयहिमाचलसूरीश्वराणां समुदायस्य शिष्या पुण्यश्री तत्शिष्या उद्योतश्री प्रेरण्यां पचपदरा श्रीसंघेन अस्य क्रियाभवनसहित चतुर्मुखजिनमंदिरस्य नवनिर्माण का. प्र. स्थवीर लक्ष्मीविजयबलभद्र विजयाभ्यां वि. स. २०३७ वै. सु. १० श्रीरस्तु ।

(१११)

११. सं. २०२४ वै. शु. ६ चन्द्रे श्रीऋषभजिनबिंब सादड़ीवास्तव्य पुकराजस्य धर्मपत्नि धापूदेव्या का. प्रतिष्ठापितं घाणेराव श्रीसंघेन प्र. विजयहिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु ।

(११२)

१२. सं. २०२४ वै. सु. ६ चन्द्रे श्रीआदिजिनबिंब पूनमीयागोत्रे किस्तुरचन्दरस्य पुत्रधनराज ततपुत्र मांगीलाल-अचलदास-रंगराजै का. प्रतिष्ठापित च घाणेराव श्रीसंघेन प्रतिष्ठित हितान्तवासी विजयहिमा-चलसूरिभिः श्रीरस्तु ॥

(११३)

१३. वि सं. २०३३ फा. कृ. ७ गुरौ इयं चक्रेश्वरीदेव्यामूर्ति पचपदरासंघेन कारिता प्र. श्रीकेलवाड़ा श्रीसंघेन प्रतिष्ठित विजय-हिमाचलसूरिभि: लि. पं. विद्यानन्दविजयगणिना श्रीरस्तु ।।

(११४)

१४. प. पू. मेवाड़केसरी नाकोड़ा-तीर्थोद्धारक ग्राचार्यदेव श्रीमद्वि-जयहिमाचलसूरीश्वराणां श्रीदुहितादेव्या शा. भंवरलालजी पारसमलजी नरपतराजजी पुत्र पौत्रस्य गुलाबचन्दजा ढेलरिया पचपदरा तपागच्छ प्र. स्थवीर मालानी देशोधारकलक्ष्मीविजय वि. सं. २०३७ वै. सु. १० गुरु

सती देवलियां

(११५)

लेख:—

१५. सं. ।। १९५२ वणयक ग्रमद लालाणी जालरा लुकड़ भादरवा

(११६)

१६. संवत १८४७ फागुण वद ६ वार सनीसर ताराचन्दजी क्रिरपाणी ..... लुकड़ वाणीया ।

(११७)

१७. ।। संवत १८८३ रा वर्षे सेत सुद ५ वार सूरज दन सा. करता गोधाणी जात लुकड़ सरगगत प्राप्त हुये तणरी ग्रस्तरी मुता दोलारी पुत्री उमादे सती हुई वैसाख सुद ७ रे दन । ग्रो पुतली साढ़ी सोमपुरा ।

श्रीरामजी सत छै ।

(११८)

१८ ।। संवत १८७७ रा वर्षे मती वैसाख सुद १५ रे दन सती हुई पड़पोतरा लारे नरसीघ री दादी जात तातेड़ बेटो सारंगजी री जात सालेसा नाम सैनी जेठ सुद ८ सढ़ी ।

(११९)

१९. कबूतरों के चोतरे के पास स्तम्भ लेख:—

।। श्रीजलंधरनाथजी

।। श्रीराजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री श्री १०८ श्रीतखतसिंघजी महाराजकुवार श्री १०५ श्री....... इब वचनाय नांदड़ी

छै पचपदरै रा महाजना समस्त नै श्रीदरबार सू महरवान होयने नड़ विराड माफ कीयौ है श्री आल-औलाद ....जमीन में लेख ।

पादरू

ग्राम पादरू-बालोतरा से बस जाती है। मोकलसर रमणीया से भी बस आती है। यहां पर एक जैन-मन्दिर है जिसका जीर्णोद्धार का काम चालू है। श्री संभवनाथजी मूलनायक का मन्दिर शिखरबन्द है।

(१२०)

१. प्रतिष्ठा लेख —

ॐ अर्हं ते नमः

वि सं. २०२० ज्येष्ठ शुक्ला ५ चन्द्रवासरे पुनर्वशु नक्षत्रे मिथुन-लग्ने श्रीपादरुनगरे श्रीसकलसंघेन श्रीसौधर्मवृहत तपोगच्छीय श्रीमद्-विजयराजेन्द्रसूरीश तत्पट्ट विभूषित श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरि श्रीमद्-विजयभूपेन्द्रसूरि श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरि शिष्य श्रीसंघ प्रमुखगणाधीश मुनिप्रवर विद्याविजय-करकमलोभ्यः प्रकर्ष महोत्सवसह प्रतिष्ठा करापिताः ।

(१२१)

२. श्रीमूलनायकजी संभवनाथजी लेख —

॥ ६ यतेतर ६ सहस्रनिते संवत्सरे माघमासे सितेपक्षे मुणोत सा. हिन्दुजी सुत सोगमलेन श्रीसंभवनाथस्वामिनप्रतिबिंब सिद्ध कारिता च तद अंजनशलाका गदैया माणकजी सुत परागचन्द्रेण एवं कृता श्रीमद्-यतीन्द्रसूरिभिः आहोरनगरे ।

(१२२)

३. श्रीशीतलनाथजी लेख —

सं. २००२ माघ सुद ६ गुरुवासरे मुणोत हिन्दुजी सुत सोगमलेन श्रीशीतलनाथजिनबिंब निर्मापितं तद अंजनशलाका गदैया माणकजी सुत परागचन्द्रेण कारापितं ।

(१२३)

४. श्रीश्रेयांसनाथजी लेख —

विक्रम सं. २००२ माघ सुदि ६ गुरुवासरे नेनावत भगजी सुत मांगीलालेन श्रीश्रेयांसनाथ-जिनालय कारितं गदैया माणकजी सुत

परागचन्द्रेणांजनशलाका कारितं तांच श्रीम. विजययतीन्द्रसूरीश्वर कर-कमल: आहोरनगरे राजेन्द्रसूरि संवत ३९

(१२४)

५. चरणपादुका लेख—

सं. २००० वैसाख धवल ६ श्रीसिवाणा उम्मेदपुरा श्रीसंघेन युगप्रधान दादा श्रीजिनदत्तसूरि श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां चरणयुगलं कारितं च प्रतिष्ठित: खरतरगच्छाचार्य श्रीजिनजयसागरसूरि नेतृत्वे पं. यतिनेमिचन्द्रेण:

(१२५)

६. चरण-पादुका लेख—

श्रीसौधर्म वृहत्तपोगच्छिया क्रियोद्धारक समर्थ प्रभावक श्रीमद्-विजय राजेन्द्रसूरीश्वराणां चरणपादुका श्रीपादरूसंघेन करापिता तत्प्रतिष्ठा वि सं. २०२० ज्ये शु. ५ चन्द्रवासरे श्री यतीन्द्रसूरीश्वर-शिष्य विद्याविजयेनकृतं ।

(१२६)

७. प्राचीन श्रीपार्श्वनाथ प्रतिमा लेख—

।। स. १८६१ साके १७२६ मिगसर सुद ५

(१२७)

८. जैन सती लेख—नव निर्मित कमरे में पुन: स्थापित—

मोनाजी तातेड़ की पत्नी अणादादेवी १८३५ संवत माहा सुद ५ को सती हुई है । मुथा बसरामजो रा बेटा रूपचन्द हरकचन्द दलीचन्द चपालाल घेवरचन्द मुकनचन्द तातेड़-परिवार ने नवीन स्थापना कराया संवत २०३५ वेसाख सुद ७

पाटौदी

यह ग्राम बालोतरा शेरगढ़ बस मार्ग पर आया हुआ है । यहां एक उपासरा तथा श्रीगौड़ी पार्श्वनाथजी का घर मन्दिर आया हुआ है । दोनों खण्डहर अवस्था में है । उपासरा में दो पंच धातु की प्रतिमाएं हैं । एक पर लेख बिल्कुल घिसा हुआ है तथा दूसरी श्रीविमलनाथजी की प्रतिमा है ।

(१२८)

१. चौबीसी श्रीविमलनाथजी प्रतिमा लेख:—

संवत १५२४ वैसाख सुदि ३ महेवावासी उकेश शा. चांपा भा. नानादे मु. सा. बाहड़ेन भा. कर्मादे पुत्र देवराज भा. पार्वतादे लखमादे पौत्र आसा आंबालो आदि कुटुंबयुतेन श्रीविमनाथबिंब चतुर्विंशतीपट्टः का. प्र. तपाश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः

श्रीगौड़ीपार्श्वनाथ मन्दिर

(१२९)

२. चरण-पादुका लेख: —

।। संवत् १८३५ रा आषाढ़ सुदि १५ दिने श्रीजिनकुशलसूरिणा-पादुका पाटौधो नगरे समस्तखरतरसंघेन कारिता वृहतखरतरगच्छे भ. श्रीजिनचन्द्रसूरिभि: प्रतिष्ठितं ।। चतुर्मासकृते ।

(१३०)

३. चरण-पादुका लेख:—

संवत् १८३५ रा अषाढ़ सुदि १५ दिने गुरुवारे श्रीपारसनाथजी रा पादुका पाटौदी नगरे समस्त श्रीसंघेन कारिता वृहतखरतरगच्छे भ. श्री-जिनचन्द्रसूरिभिः उपदेशात् प्रतिष्ठित ।। चतुरमासकृत ।

पारलू

यह ग्राम बाड़मेर जोधपुर रेल मार्ग का स्टेशन है तथा बालोतरा समदड़ी बस मार्ग पर भी आया हुआ है । यहाँ पर श्रीमूलनायकजी श्रीशीतलनाथजी का शिखरबन्द मन्दिर है ।

(१३१)

१. प्रतिष्ठा लेख:—

जयन्तु वीतराग :

श्री सौधर्म वृहततपोगच्छाधिपति, पूज्यपाद भट्टारक गुरुदेव प्रभु श्रीमद्‌विजयराजेन्द्रसूरीश्चरजी मां. के पट्टधर न्याय-चक्रवर्ती श्रीधनचन्द्रसूरीश्वरजी म. के पट्ट साहित्य-विशारद श्रीभूपेन्द्रसूरीश्वरजी म. के पट्ट तीर्थोद्धारक श्रीयतीन्द्रसूरिश्वरजी म. के पट्ट गणाधीश श्रीविद्या-चन्द्रसूरीश्वर म. ने वी. नी. सं० २५०१ वि. सं. २०३१ श्रीराजेन्द्रसूरि

सं. ६६ माघ सुदि १० शुक्रे श्रीशीतलनाथजिन की प्रतिष्ठा की शुभम श्रीपारलूनगरे।

(१३२)

२. श्रीमूलनायकजी श्रीशीतलनाथजी:--

स. २०२७ माघ सु. १० शुक्रे पारलू जैनसंघेन श्रीशीतलनाथबिंब का. मुथा सूरजमल भलेचन्द सरेमल नेमिचन्द माणकचन्द्रेण का. प्रतिष्ठायां प्र. पं. श्रीकल्याणविजय श्रीसौभाग्यविजयादिगणिना प्रतिष्ठा मित्र-परिवारेण श्रीबालवाड़ा स्थाने ।

(१३३)

३. श्रीसंभवनाथजो की प्रतिमाएं श्रीमूलनायकजी के दोनों ओर:--

सं. २०२७ माघ सु. १० शुक्रे पारलू-जैनसंघेन श्रीसंभवनाथबिंब का. मुथा भलेचन्द सिरेमल पुत्र पौत्र का. प्रतिष्ठायां प्र पू. श्रीकल्याण-विजय श्रीसौभाग्यविजययादि गणिनां-मित्र-परिवार श्रीबालवाड़ा स्थाने।

(१३४)

४. श्रीदादाजी जिनकुशलसूरिजी :--

वि. सं. २०३१ माघ शुक्लपक्षे १० तिथौ शुक्रे दादा जिनकुशल-सूरीश्वरस्यबिम्ब निर्मापिता श्रीपारलू-श्रीसघेन प्रा. प्रतिष्ठाकृता च श्रीमद्विजयविद्याचन्द्रसूरीश्वर श्रीसौधर्म वृहततपोगच्छे।

(१३५)

५. प्राचीन मूर्त्ति श्रीशीतलनाथजी :--

संवत १९९१ वर्षे वै. सु. ५ शु. पारलू-संघेन सीतलनाथबिंब का. प्र. मुनिकल्याणविजयेन: गोलनगरे।

(१३६)

६. पंच धातु प्रतिमा लेख:--

सं. १५२८ बर्षे जेठ सु. ५ दिने पोसीनावासी प्राग्वाटज्ञातीय भाशर भार्या भावलदेसुतव्य पेथाकेन भा सोनी भागिनेय-कलादि-कुटुंबयुतेन निजश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंब का. प्रति. तपागच्छे श्रीलक्ष्मी-सागरसूरिभि: श्रीरस्तु ।।

बाड़मेर नगर

बाड़मेर नगर इसी नाम के जिले का मुख्यालय है। इस नगर की आबादी करीब ७० हजार है। यहाँ जन मतावलम्बियों के करीब २ हजार

..र हैं। यह नगर बस मार्ग से जैसलमेर, जोधपुर, जालौर, आबूरोड़, ..यपुर व अहमदाबाद से जुड़ा हुआ है। यहाँ से प्रतिदिन तीन गाड़ियें दो ..ोधपुर व एक आगरा को जाती है। यह नगर वि. स. १६१५ के बाद में राव भीमोजी ने बसाया था। इसके पहले जूना बाहड़मेर आबाद था जो यहाँ से करीब १५ मील पर है। यहाँ पर जैन धार्मिक स्थान निम्न हैं जहाँ प्रतिदिन सेवा पूजा तथा धार्मिक उत्सव मनाये जाते हैं।

१. श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, जूनी चौकी
२. श्रीमहावीर जिनालय, जूनी चौकी
३. श्रीआदेश्वर मन्दिर, खागल मौहल्ला
४. श्रीदादावाड़ी मन्दिर, खागल मौहल्ला
५. श्रीशान्तिनाथ मन्दिर, खागल मौहल्ला
६. श्रीपार्श्वनाथ मन्दिर (ओथरा मन्दिर), खागल मौहल्ला
७. श्रीगौड़ीपार्श्वनाथ मन्दिर, सोननाडो
८. श्रीचन्दाप्रभुजी मन्दिर, गांधी चौक
९. श्री कल्याणपुरा मन्दिर
१०. श्री कल्याणपुरा दादावाड़ी
११. ढाणी बाजार, जैन मन्दिर
१२. पंचतीर्थी, लीलरिया धोरा
१३. सच्चीया माता मन्दिर, ढाणी बाजार

श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय

(१३७)

१. स्थापना लेखः—

मादरेचा बोहरा नेमाजी जीवराजजी दीपचदोत ने श्री मन्दिरजी बनवाकर श्रीसंघ के भेंट किया। प्रतिष्ठा सं. १६६५ में।

(१३८)

२. पंच धातु छोटी प्रतिमा लेखः—

संवत १७१३ वर्षे वैसाख सुदि ७ शुक्रे सिरोही वा. श्री वृ. स.

मोहन सं. करमचन्द स. हरचन्द सं. सामल सं. कुअरजी सं. आसकरण समस्त कुटुम्बयुतेन श्रीनमिनाथबिंब का. प्र. श्रीविजयराजसूरिभिः ।

(१३९)

३. पंच धातु बड़ी प्रतिमा लेखः—

।। संवत १४९६ वर्षे वैशाख सु १३ शुक्रे । श्रीश्रीमालज्ञा. स. राजा स. सुतसम नरसिंह भा. बाई नागलदे सुत सा. सामल ।। स. सामल भार्या-वानूसहितेन पित्री सूधा पितृव्य सा. नापा स. जाटा स. धर्मा ।। पांचएति खात भातृ ।। धना करम च श्रेयांसश्रीआदिनाथचतुर्विंशति-पट्ट कारितंः ।। प्रतिष्ठितः पिप्पलगच्छ भट्टारक श्रीमुनिशेखरसूरिपट्टे श्रीगुणरत्नसूरिभिः ।। श्रीः

(१४०)

४. पंच धातु मंझली प्रतिमा लेखः—

संवत १९०३ महा वदि ५ शुक्रे श्रीउदयपुरवास्तव्य श्रीसहस्र-फणापार्श्वनाथजो श्रीधमंशालासघ समस्त माणकबाई श्रीशांतिनाथ पंच-तीर्थी कारापितं तपागच्छे प. रूपविजयगणिभिः प्रतिष्ठितं च ।

(१४१)

५. प्रतिष्ठा लेख :—

सं. १९७६ मि. आषाढ़ कृष्ण ७ शुक्रवार श्रीबाहड़मेरनगरे श्रीपार्श्वजिनचैत्ये आंचलगच्छे पं. जीणवेदो प्रतिष्ठिता श्रीविवेकसागरसूरि विजमराज्ये श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि-शिष्य पं. जीतसागरोपदेशे व श्रीसघ-श्रीपुण्यार्थ त्रिलोकचन्दमुनिना चिरजदतु :

(१४२)

६ पब्बासन के नीचे लेख :—

सं. १६६५ वर्षे सा. ठाकुरसीकेन कारापिता

(१४३)

७ श्रीमूलनायकजी के पास जिनप्रतिमा लेख :—

इद श्रीअजीतनाथजिनबिंब अचलगच्छाधिपति आचार्यश्रीगुणसागर-सूरीश्वरेण प्रतिष्ठं बाड़मेर आंचलगच्छीय संवत् २०३३ मिगसर शुक्ला ११ बुध ।

(१४४)

८. अजंनशलाका लेख :—

श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जैन मन्दिर की मूर्त्तियों की अंजनशलाका प्रतिष्ठा विक्रम सवत २०३३ मिगसर शुक्ला एकादशी के शुभ दिन में अचलगच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीगुणसागरसूरीश्वरजी महाराजजी ने करवाई। परमपूज्य आचार्य भगवन्त ने बाड़मेर अचलगच्छ जैन श्रीसंघ के आग्रह पर विक्रम संवत २०३३ में बाड़मेर नगर में परम पूज्य आचार्य देव श्रीगुणसागरसूरीश्वरजी म. सा., प. पू तपस्वी रत्न उपाध्याय श्रीगुणोदयसागरजी म. सा., परम पूज्य साहित्य रत्न श्रीकलाप्रभ सागरजी म. सा., परम पूज्य श्रीवीरभद्रसागरजी म. सा., परम पूज्य श्री महोदय सागरजी म. सा., परम पूज्य श्रीसूर्योदयसागरजी म. सा., परमपूज्य श्रीमहाप्रभसागरजी म. सा. परम पूज्य श्रीहरिभद्रसागरजी म. सा., परम पूज्य श्रीराजरानसागरजी म सा., प. पू. पूर्णोदयसागरजी म. सा. ग्यारह साधुओं सहित एवं आचार्यदेव की आज्ञा-वर्त्तिनी साध्वी श्रीप्रियवन्दा श्रीजी म सा., वनलता श्रीजी म. सा. इन्दुकला श्रीजी म. सा. ने यहां चतुर्मास किया। ऐतिहासिक चतुर्मास में आचार्यदेव के सद्उपदेश से बाड़मेर में श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथजी के जैन मन्दिर के प्रांगण में चारों ओर नवीन चार जिनालय बनाने हेतु विक्रमी संवत २०३३ श्रावण शुक्ला तृतीया को शिलारोपण भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ शिलारोपण के चार-पांच मास के पश्चात ही चारों कोनों में लघु जिनालय प्रतिष्ठा के लिये बनकर तैयार हो गये। इन नवनिर्मित चार लघु मन्दिरों के साथ श्रीगौड़ी पार्श्वनाथ की प्रतिमा जो नीचे के छोटे पार्श्वनाथ मन्दिर में विराजमान थी उन्हें बहुमान के साथ श्रीचिन्तामणि पार्वनाथजी के बड़े मन्दिर में शिखर के पीछे नया चौमुखी का मन्दिर बनवाकर अन्य तीन नई श्रीपार्श्वनाथजी की प्रतिमाओं सहित प्रतिष्ठित किया। इसके पास ही अचलगच्छधिपति आद्य आचार्य दादा श्रीआयरक्षितसूरीश्वरजी महाराज साहेब की प्रतिमा मध्य में प्रतिष्ठित की इसी प्रतिमा के जिमणे बाजू इन्हीं के शिष्य लक्ष क्षत्रिय प्रतिबोधक जैन बनाने वाले आचार्य दादा श्रीजयसिंहसूरीश्वरजी और दाहिने बाजू बाड़मेर के श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथजी के उपदेशक व प्रतिष्ठायक आचार्य श्रीदादाधर्ममूर्तिसूरीश्वरजी की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। ये तीनों आचार्य दादा युगप्रधान पदवीधारक हैं। अचलगच्छीय नीचे

पुराने छोटे पार्श्वनाथ मन्दिर में श्रीगौड़ी पार्श्वनाथजी की मूल प्रतिमा के स्थान पर श्रीमहावीर स्वामी की प्रतिमा सहित पांच जिन प्रतिमायें पांच यक्ष यक्षिणी देवियों एवं दादा श्रीकल्याणसागरसूरिश्वरजी की एक भव्य प्रतिमा श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथजी के मन्दिर में प्रतिष्ठित है। संवत् २०३३ मिगसर सुदी ११ बुधवार तारीख २-१२-१९७६

(१४५)

९. ताम्रपत्र लेख:—

परमपूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्रीगुणसागरसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी स्वाध्याय उपासक प. पू साध्वी श्री खीरभद्रा श्रीजी म. सा. की सुशिष्या बा. ब्र. करूणामूर्ति प. पू. निर्मलगुणा श्रीजी म. सा. की सुशिष्या तपस्वी रत्ना ब्र. प. पू. साध्वी श्रीज्योतिष्प्रभा श्रीजी म. सा. एवं बा ब्र. प. पू. साध्वी श्रीवारीषणा श्रीजी म. सा. की प्रेरणा से ... .श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय में ताम्रपत्र पर बारह सौ सूत्र खुदवाकर ज्ञानोपार्जन हेतु दर्शनार्थे सप्रेम।

(१४६)

१०. तीर्थपट्ट लेख:—

श्री बाड़मेर श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालये अचलगच्छापति आचार्यदेव श्रीगुणसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब की प्रेरणा से संवत् २०३७ का चतुर्मास में आचार्य भगवन्त की आज्ञानुवर्तिनी बाल ब्रह्मचारी प. पू निर्मलगुणा श्रीजी म. साहिब की शिष्या बाल ब्रह्मचारी प. पू. साध्वी श्रीज्योतिष प्रभा श्रीजी म. साहिब एवं बाल ब्रह्मचारी प. पू. साध्वी श्रीवरीषणा श्रीजी म. साहिब की निश्रा में तीर्थ ट्रांप की थयेल उच्छामणि प्रसंगे।

श्री महावीरजी का मन्दिर

(१४७)

१. लेख:—

इदं श्रीमहावीरस्वामीजिनबिंब श्रीअचलगच्छाधिपति आचार्य श्रीगुणसागर सूरीश्वर प्रतिष्ठितं .... बाड़मेर अचलगच्छ वि. सं.२०३३ वी. सं. २५०३ मृगसिर शुक्ला ११ बुधवार

(१४८)

२. पगलियाजी लेख टूटा हुआ:—

सं. १७३३ वर्षे फागुण वदि १ सोमवार

दादावाड़ी खरतरगच्छ

(१४९)

१. सोढियों के पास कमरे में पगलियाजी पर लेख:—

संवत् १९०९ रा ......शनिवार गुणो मोतीचन्दजी री छत्री हुई।

(१५०)

२. पगलियाजी लेखः—

।। सवत् १६७१ वर्षे आसू वदि १० रवीवार पुण्य योग श्रीखरतर-गच्छ श्रीजिनमाणिकसूरि पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरि पादुके कारितेऽस्त ।।

(१५१)

३. पगलियाजी लेख:—

संवत् १६४४ वर्षे श्रावण सुदि १३ वार आदित श्रीजिनकुशलसूरि पादिका श्रीखरतरगच्छे।

(१५२)

४. पगलियाजी बड़ा लेख:—

संवत् १६७२ वर्षे फागुण वदि १२ वृहपत दिने भट्टार्क श्री जिन कुशलसूरिसुरानं पादुके सुभभवतु ।।

आदेश्वर भगवान् का मन्दिर

(१५३)

१. शृंगार चौकी लेख:—

संवत १९२८ वर्षे भाद्रपद २ ....वृहत खरतरगच्छे भट्टारक श्रीमातुसूरिरावतजी श्रीवाकोदास कु। जुहारसिंग विजेराज्ये श्रीसुमत-नाथजी री शिणगार चौकी श्रीखरतगच्छ कराई सलावट फूसा ।।

(१५४)

२. प्रतिष्ठा लेख:—

संवन १६७६ वर्षे माह सुदि १५ रविवार पुष नषत्रे राउत श्री उदेसिंहजीविजयराज्ये श्रीसुमतिनाथ ...... श्रीसंघ करावऊ सूत्रधार षीमा नारायण नरसंघ खरतरगच्छ भट्टार्क जिनराज सूरि विजय राज्ये।

(१५५)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं. १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा. श्रे. सहसा भा.

भोली पुत्र जिनदास मेहाजस युतेन स्व. श्रेयांस श्रीकुंथनाथबिंब का. आगमगच्छ श्रीहेमरत्नसूरिणामुपदेशिन प्रतिष्ठितः ।।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर

(१५६)

१. श्री महावीरजी की मूर्ति पर लेखः—
महात्मा किशनलालजी की स्मृति में ।

(१५७)

२. श्री चन्दाप्रभुजी प्रतिमा लेखः—
चन्दा प्रभुजीबिंब टापरा श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं ।

(१५८)

३. श्रीमूलनायकजी पर लेख सीमेण्ट के कारण अस्पष्टः—
संवत १८६२ शाके १७३८

श्रीपार्श्वनाथ मन्दिर (बोथरा मन्दिर)

(१५९)

१. पंच धातु प्रतिमा छोटीः—

सं. १५२७ व माह सु १३ सा. साल्हा भा. हासलदे पु. सा. गुणदत्तेन भा. गेलमदेवु तिहुणा गोपादिक युतेन श्रीसुमतिनाथबिंब का. प्र. तपागच्छे श्रीसोमसुन्दरसूरि सताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।।श्री।।

(१६०)

२. ।। सं. १५८० वर्षे वैशाख सुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमाली ज्ञा. म. हीरा भा. सषी सु. मं. हेमा भा. हमीरदे पुत्र म. भवाकेन भा. वसी सु. अमरा युतेन स्व श्रेय से श्रीसुविधिनाथबिंब श्री प्र. श्रीपुण्यरत्नसूरि पट्टे श्रीसुमतिरत्नसूरिण मुपदेशे कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ।।श्रीः।।

(१६१)

३. श्रीमूलनायक प्रतिमा लेखः—

।। सं. १९२८ शाके १७९३ प्रवर्तमाने मिति माघ सुदि १२ गुरौ श्रीपार्श्वजिनबिंब प्रतिष्टितं श्रीमद्वृहद्खरतरगच्छाधीश्वर जगम युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनयशोसूरिभिः

(१६२)

४. पादुकाजी लेख—

सं. १९६२ शाके १८२७ श्रीपीगलनाम संवत्सरे पोष मासे दिवसे बुधवासरे पुष्य नक्षत्रे ध्रुवयोगे विवे करणे क्षुभ योगे श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा महोत्सवे श्रीजिनकुशलसूरिणां चरण पादुका स्थापितं भट्टारक जंगम युग प्रधान वृहत खरतरगच्छनायक आचार्य गच्छेश श्रीजिन-सिद्धसूरीभि: कारितं गोपा बोहिथरा बाहड़मेर रावत हीरासिंघजी भाराणी वशे राज्य प्रधाना श्रीरस्तु।

(१६३)

५. पादुका लेख—

सवत् १९६२ शाके १८२७ श्री पिंगलनाम संवत्सरे प्रवर्तमाने पोष मासे पुष्य नक्षत्रे बुधवासरे विवे करणे कुकल शुभयोगे श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा महोत्सवे श्रीजिनदत्तसूरि चरण पादुके गोपा वीजा बोहिथरा वास बाहड़मेर भट्टारक जंगम युग प्रधान वृहत खरतरगच्छे श्रीजिनसिद्धसूरिभि: कारितं रावत हीरासिंघजी भाराणी वंसे राज्य प्रधानात श्रीरस्तु

(१६४)

६. यति मूर्ति लेख—

श्री १०८ श्री पं. नेमीचन्दजी यति

जन्म तिथि	स्वर्गवास
विक्रम सवत् १९४८	विक्रम संवत २००९
चैत्र शुकला पूर्णिमा	माघ कृष्ण १३ मंगलवार
	(मेरु तेरस) १३ जनवरी १९५३

संगीत रत्न, विद्याविलास, उपाध्याय, पण्डित श्रीनेमीचन्दजी महाराज साहब का स्मृति स्तूप विक्रम संवत् २०२२ में बनाया गया सन् १९६५

श्रीगोड़ीसा पार्श्वनाथजी मन्दिर

(१६५)

१. पगलियाजी लेख—

सं. १५०८ आषाढ़ सुदि--रा पादुका घरात्री श्रीगोड़ीसा पारस नम:

(१६६)

२. प्रतिमा लेख—

सं. २०४२ ज्ये. सु १२ बाड़मेरनगरे पार्श्वनाथ जिनबिंब प्रतिष्ठा-पितं खरतरगच्छाचार्य जिनकान्तिसागरसूरिभि:

(१६७)

३. सं. २०४२ ज्ये. शु. १२ बाड़मेरनगरे दादाकल्याणसागरसूरिजी की मूर्त्तिबिंब प्रतिष्ठापित खरतरगच्छाचार्य जिनकान्तिसागरसूरिभिः

(१६८)

४. सं. २०४२ ज्ये. सु. १२ बाड़मेर नगरे दादा साहेब कुसल गुरुदेव बिंब प्रतिष्ठापितं खरतरगच्छाचार्य जिनकान्तिसागरसूरिभिः

(१६९)

५. वि.सं. २०४२ ज्येष्ठ शुक्ल १२ शुक्रवासरेः—

बाड़मेरनगरे श्रीगौड़ी पार्श्वनाथ, दादा गुरुदेव, नाकोड़ा भैरवादि बिंबानी प्रतिष्ठापितं खरतरगच्छाचार्य जिनकान्तिसागरसूरिभिः शुभ भवतु श्रीसंघस्य ।

(१७०)

६. श्री गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार लेखः—

प. पू. युग प्रभावक आचार्य श्रीजिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से प. पू. प्रवर्तिनी प्रेम श्रीजी म.सा. की प्रशिष्या साध्वी श्रीसुलोचना श्रीजी म.सा. साध्वी श्रीसुलक्षणाश्रीजी म. सा. के सदुपदेश से हुआ । प्रतिष्ठा सं. २०४२ ज्येष्ठ शुक्ला १२ शुक्रवार तारीख ३१-५-१९८५

(१७१)

७. पगलिया लेखः—

श्री १०८ श्रीचन्दन श्रीजी महाराज सा. श्री १०८ श्रीहेतश्री महाराज की रतनशिष्या स्वर्गवास सं २०२० मुः सादड़ी

(१७२)

८. पगलिया लेखः—

श्री १०८ श्रीचन्दनश्रीमहाराज की रतनशिष्या श्री १०५ श्री प.तेहश्रीमहाराजसाहेब स्वर्गवास २०२४ मुः बाड़मेर

श्रीचन्दा प्रभुजी मन्दिर, गांधी चौक

(१७३)

१. पंच धातु प्रतिमाः—

॥ सं. १५१४ मांगं सु-प्राग्वाट सा. साल्हाकेन चार्या बर्जू सुत सा. वीरा माणिक वसनादि कुटुम्बयुतेन पितृव्य सा. चांपा श्रेयोर्थं सुमतिनाथ

बिंब कारितं प्र. तपा श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीमुनिसुन्दरसूरि पट्टे श्रीरत्न-शेखरसूरिभि: ।।

(१७४)

२. पच धातु प्रतिमा:—

सवत १४६३ वर्ष फागुण वदि १ दिने ऊकेशवंसे रांका गोत्रे श्रे. धीरा पुत्र श्रे. लाखाकेन तत्पुत्र देल्हा तेजा जिणदत्त गुणदत्त परिवार युतेन स्व. पुण्यार्थं श्रीशांतिनाथबिंब कारितं श्रीखरतरगच्छो श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीजयेन्द्रसूरिभि: प्रतिष्ठितं ।।

(१७५)

३. मूर्ति लेख:—

।। सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरु पुष्य योग श्रीवासुपूज्यबिंब मेवा-नगरे श्रीसंघ करापितम प्रतिष्ठितम आचार्य वि. हिमाचलसूरिभि:

(१७६)

४. मूलनायक चन्दाप्रभुजी लेख:——

३ वर्षे माघ सु. १० रवी मांडवला वास्तव्य शा. चन्दनमलजी भार्या मिश्री पुत्र हस्तीमल कांतिलाल अमृतलाल पुत्र पौते स्वपितरौ श्रेयार्थं चन्द्रप्रभु का. श्रे. पूजाजी पत्न्या गजरां श्राविका ....

(१७७)

५. मूर्ति लेख:—-

सुद १० रवो अजमेर वास्तव्य भूरमल चांपा पीरूमल रूपचन्द्र स्व मातल्य श्रेयार्थं........पं. कल्याणविजय गणिन: ।

श्रीदादाजिनकुशलसूरिजी

(१७८)

६. लेख दादाजी:——

संवत २०२६ बाड़मेर शा. आसुलाल सोहनलाल चम्पालाल चन्द्रप्रकाश बोथरा द्वारा प्रतिष्ठ: श्रीमतो मथरी वीस स्थानक तपस्या निमिते संघ भेंट ।

(१७९)

७. शिला पट्ट लेख:——

खरतर गच्छाधिपति प. पू. आचार्य भगवन्त श्रीजिनउदयसागर सूरीश्वरजी एवं जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के आशीर्वाद से

आज्ञानुवर्ती प पू. प्रवर्तनी प्रेमश्रीजी म. सा. की प्रशिष्या सुलोचना श्री जी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म. सा. के सदउपदेश से मन्दिर के केशर, धूप, दाप, दूध के लिये साधारण खातों की नामावली..........

कल्याणपुरा मन्दिर व दादावाड़ी

(१८०)

१. लेख—श्री पार्श्वनाथ जिनालय व तीर्थ की धर्मशाला:—

कल्याणपुरा बाड़मेर श्री आदमल पुत्र श्री ऊमचन्द बोथरा द्वारा श्रीसंघ को भेंट भादवा सुदि ३ संवत २००८

(१८१)

२. दादाजी की प्रतिष्ठा लेख—

वि. सं. २०४० मार्गशीर्ष कृष्ण पंचम्यां बाड़मेर नगरे प्रवर्तिनी प्रमोदश्री पुण्य स्मृतौ तच्छिष्या: साध्वी प्रकाशश्री: रतनमालाजी। विद्युतप्रभाजी: शासन-प्रभाजी ! प्रभृतय: तासां सदुपदेशेन छाजेड़ गोत्रीयो विशनचन्द पुत्र पौत्रै: जीवनमल नेमीचन्द बाबूलाल सम्पतराज पुखराज मदनलाल राकेशकुमारै कल्याणपुरा विभागे नवनिर्मित दादावाटिकायां कारितेयं छत्री । दिनांक २५--१९८३

(१८२)

३. परम पूज्या प्र. स्व श्रीप्रमोदश्रीजी म. सा की पुनीत स्मृति में जैन श्रीसंघ द्वारा इसका निर्माण कराया गया ।

(१८३)

४. प्रवर्तनी स्व. श्रीप्रमोदश्रीजी म. की पुण्य स्मृति में उनकी शिष्या साध्वी श्रीप्रकाशश्रीजी म. के सदुपदेश से शाह जीवनमल, नेमीचन्द, बाबूलाल, सम्पतराज पुखराज, मदनलाल, राकेशकुमार छाजेड़ की तरफ से दर्शनार्थ भेंट दि-२५-११-१९८३

(१८४)

५. पंचधातु प्रतिमा लेख—

संवत १३५९ माघ वदि ११ बुध प्राग्वाट ज्ञातीय उ. यजसीह भा. राजलदे ....श्रीशांतीनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीचित्रगच्छे श्री-धर्मदेवसूरि शिष्ये: श्रीपद्मदेवसूरिभि:

(१८५)

६. संवत १४५० वर्षे माह वदि ६ सोमे श्रीश्रीमाल
वा.व. लूणकरण भार्या ललतोद पुत्र वीकाकेन श्रीचन्द्रप्रभबिंब कारितं श्रीरत्नसागरसूरिणामुप देशेन प्र. श्रीसूरि।

(१८६)

७. *सं. १५०३ वर्षे श्रीश्रीमाल ज्ञा पितृ पूनसिंह मातृ* पदमलदे व भ्रातृ नरसिंह व स्व श्रेयांस सुत वीकाकेन श्री विमल पंच तीर्थी का. प्र. पिप्पल-गणाति भवीग्रा. श्रीधर्मशेशरसूरिभिः

(१८७)

८ सं. १५०६ फागुन सु. २ प्राग्वाट मं. आसा भा. कूजी पुत्र म. जहता केन भार्या मानू पुत्र वीसादि कुटुंब युतेन श्रीधर्मनाथबिंबकारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः

(१८८)

९. संवत १५७३ वर्षे माह वदि १३ उसवालज्ञातीय फोफेलीयागोत्रे सा. जईना भा. पयतलदे पु.सा. भोलानाथ, तोला भा. नारंगदे स्वपुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथबिम्ब कारापितं श्रीधर्मघोषगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीउदयप्रभ-सूरिभिः

(१८९)

१०. सं. १५२७ माघ व. ७ वीरवाटक वा. प्राग्वाट म. हीरा भा. कूअड़ पु म. इलहाकेन भा. दाड़िमदे पु. लूणादिकुटुंबयुतेन श्रीविमलनाथबिंब का प्र. तपाश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मोसागरसूरिभिः ।।

(१९०)

११. संवत १५५८ वर्षे वै. वदि १३ सोमे चंडालीयागोत्रे म. वाघा भार्या राजू पुत्र वना भार्या श्रीवती पुत्र सा. दीभा. प्रमुखपरिवार स्वपुण्यार्थं बिंबकारितं श्रीचन्द्रप्रभसबिंब श्रीषरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरिभिः प्रतिष्ठतं।

(१९१)

१२. नवीन बड़ी प्रतिमा पंचधातु लेख गुजराती भाषाः--
स्वस्ति श्रीशिवगंजनगरे श्रोवीर सं. २५०१ श्रीविक्रम सं. २०३१ वैशाख सुदि १५ तिथौ श्रोशांतिजिनबिंब शिवगंज (राजस्थान) श्रेष्ठिवर्य बाड़मेर निवासो मुता गोत्रीय मालू शाह लूणकरणजो की धर्मपत्नी श्रीमती

गेरीकंवर बाई की तरफ से श्रीमद्विजय श्रीआचार्य हिमाचलसूरिश्वरजी के शिष्य मुनि श्रीलक्ष्मीविजय की प्रेरणा से कारितं आचार्य श्रीकैलाशसागरसूरिश्वरजी प्रतिष्ठितं च शुभंभूयात् श्रीसंघस्य ।

(१६२)

१३. स्वस्ति श्रीवीर सं. २५०५ विक्रम सं. २०३६ नेमी संवत ३० वर्षे वैशाख शुक्ल १३ तिथौ गुरुवासरे सादड़ीनगरे मुनिश्रीलक्ष्मीविजयस्य सदुपदेशाद् बाड़मेर निवासी श्रेष्ठि श्रीजोरावरमलजी लूणकरणजी जनेता गवरीबाई स्मृत्यार्थं श्रीऋषभदेवजिनबिंबे मिदं कारितं प्रतिष्ठितं च शासनसम्राट् तपागच्छीयाचार्य प्रवर श्रीमद्विजय नेमीलावण्यदक्षसूरिश्वराणां पट्टधराचार्य श्रीमदविजयसुशीलसूरिणां ।। शुभंभवतु श्रीसंघस्य ।।

ढाणी बाजार जैन-मन्दिर

(१६३)

१. श्रीविमलनाथजी मूलनायकजी प्रतिष्ठा लेख:—

वि. सं. २०४२ ज्येष्ठ शुक्ल १२ बाड़मेर नगरे श्रीविमलनाथ चौमुख मन्दिरे जिनबिंबानी दादा गुरुदेव प्रतिमान, भेरवबिंब यक्ष-यक्षिणीबिंबे प्रतिष्ठापितं खरतरगच्छाचार्य जिनकान्तिसागरसूरिभिः । सं. २०४२ ज्येष्ठ शुक्ल १० रात्रौ शुभलग्ने अंजन कारित । शुभं भवतु श्रीसंघस्य ।

(१६४)

२. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं १५२७ ... भा. साहलदे स. जावदेन भा. मनकु पुत्र.... ... प्रतिष्ठितं श्रीसोमसुन्दरसूरिशिष्य श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः

१२. पत्रतीर्थी मन्दिर लोलरिया धोरा पर घर मन्दिर खण्डहर के रूप में विद्यमान है । न कोई मूर्ति है और न कोई लेख है ।

श्री सच्चीया माताजी का मन्दिर, ढाणी बाजार

(१६५)

१. प्रतिष्ठा लेख:—

श्रीओसियां सच्चीया माता की प्रतिमा संवत् २०३४ माह सुदि ११ की साल में शा. भंवरलाल पुत्र रतनलाल मदनलाल रामलाल पवनलाल बेटा पोता जेकचन्द पूनमचंदाणी पड़ाईया की तरफ से विराजमान की ।

(१९६)

२. श्रीअचलगच्छाधिपति प. पू. आ. भ. श्रीगुणसागरसूरिश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्ति बा. ब्र. प. पू. ज्योतिष्प्रभा श्रीजी. म. सा. की प्रेरणा से समेतशिखरजी महातीर्थ के अधिष्ठाईदेव श्रीभोमियाजी महाराज का यह बिंब पड़ाईया पोकरदास रूगामलजो के परिवार सहित बाड़मेर श्रीसंघ को भेट संवत २०३८ मिगसर वदि ११ रविवार तारीख २२-११-८१

(१९७)

३. अंचलगच्छाधिष्ठिका महाकालीदेवी के इस बिंब की प्रतिष्ठा प. पू. आ. भ श्रीगुणसागरसूरिश्वर म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी बा. ब्र. प. पू. ज्योतिष्प्रभा श्रीजी. म. सा. के कर-कमलों द्वारा शा. नानबाई जेवत गा. कच्छ बीदड़ावाला ने करवाई तपस्वी दो बहनों की तरफ से यह बिंब भराया एवं कच्छनाना आशंचोआ वाला प्रदीप छेड़ा की तरफ से देहड़ी कारवाई संवत् २०३८ मिगसर वदि ११ रविवार।

बालोतरा

यह ग्राम बाड़मेर जोधपुर रेल्वे लाईन पर आया हुआ है। बाड़मेर जिले का दूसरा बड़ा नगर है। यहाँ से बाड़मेर, जोधपुर, सिवाना, जालोर तथा आसपास के छोटे बड़े ग्रामों को बसें जाती है। प्रसिद्ध जैन-तीर्थ श्री नाकोड़ा जी के लिये यही रेल्वे स्टेशन है जो तीर्थ से ११ कि.मी. दूर है। यहाँ पर कई जैन-मन्दिर, दादावाड़ीयां वगैरा है।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर पारस भवन

(१९८)

१. पद्मासन लेख—

जगती अघ विनाशे, कौशलं श्रीं ह्रीं यतीन्द्रे।
सुकृत गुण निधाने, हिम्मतो धीर वीरे॥
परिमल गुण शोभा, नाम मेवानगरे।
कृत विहित प्रतिष्ठा. धर्मनाथस्तु बिम्बै॥

सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे बालोतरानगरस्थ पार्श्वनाथ-भवने श्रीधर्मनाथबिम्बानि मेवानगरे श्रीसंघेन कारितं प्रतिष्ठितं।

पन्यासजी श्रीहितविजयजी के शिष्य आचार्यदेव विजयश्रीहिमाचल-सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

तगतगढ़वास्तव्य प्राग्वाट संघवी श्रीग्रंचलजी तत्पुत्र केसरीमलस्य, धर्मपत्नी मगीदेवी बालोतरा नगरस्थु पार्श्वनाथभवने श्रीधर्मनाथ-मन्दिरनिमित्ते श्रीनाकोड़ा पार्श्वनाथस्य प्रत्यक्षाधिष्ठाय कन्चरणकमले। ७००१) रुपये निसादर सर्मपितम श्रीरस्तु ।

(१६६)

२. श्रीधर्मनाथजी प्रतिमा लेख—

स. २०१६ माघ सुदि १४ तिथौ गुरुपुष्य योगे श्रीधर्मनाथबिंब बालोतरानगरस्थ श्रीपार्श्वन.थभवने मेवानगर श्रीसघेन कारितम प्रतिष्ठितं आचार्य श्रीहिमाचलसूरिभिः शुभमस्तु ।।

तपागच्छ उपासरा

(२००)

३. मणिभद्र यक्ष मूर्त्ति लेख—

।। सं. १६५५ श्रा. सु. ५ गुरो श्रीमणिभद्रबिम्ब ज. मु. भट्टारक श्रीजिनमुक्तिसूरि प्रतिष्ठितम ।

ओसवाल भवन धर्मशाला-स्टेशन रोड़

(२०१)

४. छत्री—पब्बासन लेख—

श्रीआदिनाथायनमः

श्रीबुद्धितिलक शान्तिचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः परमपूज्य शासन-प्रभावक आचार्यदेव विजय भुवनशेखरसूरीश्वरजी म. सा. तथा मुनिराज श्रीमहिमाविजयजी म. सा. नी शुभ-सानिध्यमां वि. संवत २०३७ ना वैसाख सुद १४ रविवार ता. १७-५-८१ ना शुभमुहूर्त्ते श्रीआदीश्वर भगवान का चरण (स्तूप) प्रतिष्ठा बालोतरा-शुभं भवतु ।

(२०२)

५. चरण-पादुका लेख—

सं. २०१६ माघ सु. १४ गु पु. योगे श्रीआदिनाथ-चरण-पादुका बालोतरा ढ़ेलड़ीया बोरा म.शा. प्रसादोराज, चन्दन, मोती भानीरामाणी,

पुत्र-पौत्रादिसहिते का प्रा मेत्रानगररे श्रीसंघेन । प्रतिष्ठितम विजयश्री-हिमाचलसूरिभिः ।।

श्रीखरतरगच्छ जैन-दादावाड़ी

(२०३)

६. श्रीजिनकुशलसूरिश्वर छत्री लेख—

स्वस्ति श्रीबालोतरानगरे सं. २०३६ ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी तिथौ गुरुवासरे खरतरगच्छसंघेन कारिते कलिकाल कल्पतरु श्रीजिनकुशलसूरि मूर्त्तिः प्रतिष्ठित खरतरगच्छे जिनहरिसागरसूरि-शिष्य अनुयोगाचार्य कान्तिसागरादिभिः-शुभ भवतु श्रीसंघस्य-

(२०४)

७. पादुका लेखः—

स्वस्ति श्रीबालोतरानगरे सं. २०३६ ज्येष्ठ शुक्ल पंचम्यां गुरुवासरे नवांगी टीकाकार खरतरगच्छाचार्यं श्रीअभयदेवसूरिश्वरैण पादुका प्रतिष्ठितं जिनहरिसागरसूरि-शिष्य खरतरगच्छाचार्य श्री-कान्तिसागरादि शुभं भवतु श्री संघस्य ।।

(२०५)

८. पट्ट लेखः—

ॐ ह्रीं श्रीजिनकुशलसूरि सद्‌गुरुभ्यो नमः स्वस्ति श्रीबालोतरा-नगरे श्रीसंघेन कारिते दादावाड़ी मध्ये श्रीजिनकुशलसूरि मूर्तिःपादुकात्व प्रतिष्ठित नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरि संतानीय जिनहरिसागरसूरि शिष्य अनुयोगाचार्य कान्तिसागरैः श्री श्रीखरतरगच्छे संवतः २०३६ ज्येष्ठ शुक्ल पचम्यां गुरुवासरे । शुभं भवतु श्रीसंघस्य ।

श्रीविमलनाथजी जैन-मन्दिर तपागच्छ

(२०६)

९. प्रतिष्ठा लेखः—

अस्याभिनव विमलजिनमन्दिरस्य निर्माणकार्य बालोतरा श्री-संघेन कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छेश शासनसम्राट जगद्‌गुरुदेव श्री-मद्विजय हीरसूरिश्वर संतानीय हितान्तेवासी प. पू. मेवाड़केसरी श्री-*नाकोड़ा तीर्थोद्धारकआचार्यदेव श्रीमद्विजय* हिमाचलसूरिभिः वि. सं. कराग्निखनेत्रे २०३२ *माघ सु. १४ शनौ पुष्य योगे लि.* हिमाचलन्तेवासी पं. श्रीविद्यानन्द विजया गणिक । श्रीरस्तुः-

(२०७)

१०. चौबीसी लेख —

श्रीजैनसघ बालोतरा श्रीऋषभदेव भगवान चौवीसी श्रीअंजनशलाका विधि पू. आ. वि. कनकप्रभसूरिजी तथा पू. आ. वि. भुवनशेखरसूरिजी नी निश्रा मां झाब नगर मां वि. स. २०३५ महा सुद १४ शनिवार ता. १०-२-७६ ना रोज शुभलग्ने कराई छे।

(२०८)

११. श्रीविमलनाथजी पंच धातु बिंब:—

सं. १५३२ वर्षे माग्र सुदि ६ शुक्रे नागपुरवास्तव्य श्रीमाल फोफलियागोत्रे सा. बृहड़ भा. नापाई पुत्रबुढाकेन भा. लालीयेम जगमाल भ्रातृ स. कुटुंबयुतेन श्रीविमलनाथबिंब कारितं प्र. श्रीधर्मघोषगछे श्रीपद्मानन्दसूरिभि:

भावहर्ष गच्छ उपासरा

(२०९)

१२. पीत पाषाण पादुका लेख:—

संवत १८१६ वर्षे चैत्र सुदि ४ दिने रविवारे रोहिणी नक्षत्रे श्रीवीर शाह पादुका कारिता।

(२१०)

१३. पीत पाषाण लम्बा पाषाण दोनों कोनों पर व बीच में लेख:—

एक सिरे पर लेख:—

संवत १७३२ वर्षे चैत्र वदि २ दिने चन्द्रेश श्रीअनंतहंसगणि नां शिष्य पन्यास श्रीविमलोदयां नां पादुके प्रतिष्ठिते श्री पं. जिनचंद्रसूरिभि:

(२११)

१४. दूसरे सिरे पर लेख:—

सवत १७३१ वर्षे चैत्र वदि २ शुक्रे श्रीमद्जिनचन्द्रसूरि नां पादुके श्रीउदयनिधानगणि कारिते च प. पुण्यहर्षेण नंदिनयरतेन ।।

(२१२)

१५. बीच में श्वेत गोलाकार लेख:—

संवत् १७३२ वर्षे चैत्र वदि द्वितीयायां श्रीजिनकुशलसुरिणां पादुके प्रतिष्ठितं श्रीजिनचन्द्रसूरिभि:

मणिभद्रजी का मन्दिर

(२१३)

१६. श्रीपार्श्वनाथजी प्रतिमा लेख—

संवत १८८० ..... रायचन्द पचेसरा

(२१४)

१७. स्थापना लेख:—

वि.सं. २०३२ माघ शु. १४ शनौ पुष्य अस्य मणिभद्रस्य मंदिरे श्री-पार्श्वनाथादि प्रभुणां पुन: प्रतिष्ठा बालोतरा श्रीसंघेन कारिता प्रतिष्ठितं तपागच्छेश हितान्तेवासि विजय हिमाचलसूरिभि: श्रीरस्तु

(२१५)

१८. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

।। सं. १५२५ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ९ शुक्रे श्रीउपकेशज्ञातीय श्री-डूगड़गोत्रे म. ।। नरपाल पु.बछराज भा.पकम्मी पु.सारंग सुदयवत्छीभ्यां पेतु पुण्यार्थं श्रीकुंथनाथबिंब कारितं । श्रे. श्रीरूड़पल्लीय ग. श्रीदेवसुन्दर-सूरिपट्टे भ. श्रीसोमसुन्दरसूरिभि:

श्रीसंभवनाथजी का मन्दिर (खरतरगच्छ)

(२१६)

१९. पब्बासन पर लेख:—

सं. २०४१ माघ शुक्ल त्रियोदश्यां रात्रौ प्रभुसंभवनाथ-पार्श्वनाथादि-बिम्बानां अंजनशलाका कारापितं सं. २०४१ माघ शुक्ल चतुर्दश्यां सोमवासरे पुष्यनक्षत्रे प्रभुसंभवनाथ, पार्श्वनाथ, गौतमस्वामी, दादा जिनकुशलसूरि, नाकौड़ा भैरव, घटाकर्ण महावीर यक्ष-यक्षिण्यादि-बिंबानि प्रतिष्ठापितं खरतरगच्छेश्राचार्य जिनकान्तिसागरसूरि, मणिप्रभ-सागरादिभि: ।। शुभं भवतु श्रीसंघस्य ।।

(२१७)

२०. श्रीसंभवनाथ प्रतिमा लेख:—

सं. २०४१ माघ शुक्ल १४ बालोतरानगरे दादावाटिकायां जैन-श्वे खरतरगच्छसंघेन कारापितं श्रीसंभवनाथजिनबिम्ब प्रतिष्ठापितं खरतर-गच्छाचार्य जिनकान्तिसागरसूरि, मणिप्रभसागरादिभि:

केसरियानाथजी का मन्दिर

(२१८)

२१. स्वस्ति श्रीबालोतरानगरे सं. २०३६ ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी तिथौ गुरुवासरे खरतरगच्छसघेन कारिते कलिकाल कल्पतरु श्रीजिनदत्तसूरि मूर्त्तिः प्रतिष्ठितं खरतगच्छे जिनहरिसागरसूरि-शिष्य अनुयोगाचार्य कान्तिसागरादिभिः शुभं।

खरतरगच्छ दादावाड़ी के पीछे (कमरे में)

(२१९)

२२. पादुका लेखः—

संवत् १७३२ वर्षे चैत्र वदि द्वितीयायां सोमे श्रीमज्जिन श्रीजिन चन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं पादुके वा. श्रीपुण्यनिधानगणिः कारिते च पं. पुण्यहर्षेण।

(२२०)

२३. पादुका लेखः—

प्राचीन समाधि-स्थल वि.सं. २०३२ माघ सुद १४ शनौ श्रीभाव-हरषगच्छेश क्षमारत्नसूरिश्वराणांमियं चरण–पादुका बालोतरासघेन का. प्रा विजय हिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु।

(२२१)

२४. श्वेत पाषाण पादुकाः—

।। सं. १९२३ व शा. १७८९ प्र. मासोत्तम ज्येष्ठ शुक्लपक्षे चतुर्थी तिथौ गुरुवासरे श्रीम. नवरतराणांधिश्वर भट्टार्कायायाम श्रीजिन-कुशल–पादुका प्रतिष्ठितं स्थापितं श्रीम. बालपुरोपाश्रया श्रीभावहर्ष-गच्छयां श्रीजिनपद्मसूरिभिः

बुढ़ीवाड़ा

यह ग्राम बालोतरा पादरू बस मार्ग पर आया हुआ है। यहां एक प्राचीन उपासरा है जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। उपासरे में मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की श्वेत पाषाण-प्रतिमा है जिसका लेख अस्पष्ट है।

(२२२)

१. श्रीआदिनाथ प्रतिमा लेखः—

संवत् १७४९ वैसाख सुदि ३..........

भाडखा

यह ग्राम बाड़मेर से उत्तर में शिव जैसलमेर बस मार्ग पर आया हुआ है। यहां पर पहले जैन-धर्मावलम्बी औसवाल जाति के ४८ गांवों की पंचायतें होती थी। २४ गांव बाड़मेर पंचायत तथा २४ गांव कोटड़ा पंचायत की सम्मिलित बैठक गांव भाडखा में होती थी। यहां पर श्रीनेमिनाथजी का मन्दिर है।

(२२३)

१. श्रीमूलनायकजी प्रतिमा लेख:—

।। संवत १९२८ रा मिति माघ सुदि ६ श्रीजिनमुनिसूरिभिः कारितं समस्त श्रीसंघेन।

(२२४)

२. प्रतिष्ठा लेख:—

भाडखा रा जैनसंघ रो देरासर करावेउ: श्रीजीतसागरजी को वार श्रीमेगनाथजी री में। १९७८ रा वैसाख वद ४ वा: शनीशर।

(२२५)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

।। सं. १५१८ वर्षे ऊकेशवंश माह सु १० सा. देसल सा. कुसला श्रावकेण स्वपुण्यार्थे आत्मश्रेयसे श्रीपद्मप्रभबिंब कारितं। प्रतिष्ठितं श्री-खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः

(२२६)

४. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सवत १५५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ शुक्रे श्रीउएसवंशे श्रे. नंदा भा. तायकदे पुत्र श्रे. आंबा सुश्रावकेण भा. हेमाई पुत्र श्रे, कान्हा लघुभ्राता श्रे. वर्धमानसहितेन स्व-श्रेयसे श्रीअंचलगच्छेशश्री सिद्धान्तसागरसूरीश्वराणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यबिंब कारि. प्र. श्रीसंघेन श्रीअहमदावादे।

मजल

यह ग्राम समदड़ी अजीत बस मार्ग पर आया हुआ है। यहाँ पर श्रीसुमतिनाथजी मूलनायक भगवान् का शिखरबन्ध मन्दिर है। साथ में श्रीसंभवनाथजी, श्रीशांतिनाथजी भगवान् स्थापित हैं। प्रतिमाओं की स्थापना सवत २०३५ में हुई।

(२२७)

१. पूर्व मूलनायक श्रीआदीश्वर भगवान् प्रतिमा लेख:—

सं. १६०६ वर्षे माघ कृष्ण परवा साहि दांग्रव उहसवालज्ञा. श्रे. देल्हड-आल्हणश्रे. वागदेवीसहितेन श्रीऋषभदेवबिंब कारित प्रतिष्ठित:

(२२८)

२. पंच धातु प्रतिमा:—

सं. १५०५ वर्षे मार्गवदि ७ दिने शुक्र सवराशाह साखगोत्रे सा. उगड़ा भार्या पोपहादे पुत्र तीराकेन भा. वाकलदे कारिता प्रतिष्ठित खरतरगच्छे श्रीतितवईसूरि श्रीनिहालगरसूरिभि: श्रीअजीतनाथबिंब ।।

(२२९)

३. पंच धातु प्रतिमा:—

स. १६०५ वर्षे माघवदि ११ गुरौ उशवालज्ञा. बापणागोत्रे सादा भा. सिरीमादे पु. अदा भा. भवकादे पुत्र जोगकेन भा. जयवंतदे पु. जीवा-लाखादिसहितेन स्व:श्रेयोर्थं श्रीकुंथनाथबिंब का. प्र. उशवालगछे श्री-सिंहसूरिभि:

यतियों की छतरियाँ

(२३०)

४. पादुका लेख:—

।। गुरां साहेब श्री श्री १०८ श्री माहा ।। विजेचन्दजी साहेब चरण-पादुका प्रतिष्ठित ।। संवत १९९४ रा वैसाख सुद २ बुधवासरे ।। दीपचन्द।। धनराज प्रतिष्ठितम ।। मजल नग्र स्थापितं ।। सुभ भवतु ।।

(२३१)

५. चरण-पादुका लेख:—

श्रीगुरां साहेब श्री श्री १०५ पं. ।। हुक्मचन्दजी चरणपादुका ।। संवत १९९४ रा वैसाख शुक्ल २ ने बुधवासरे । दीपचन्द धनराज प्रतिष्ठम शुभ भवतु । मजल नग्र प्रतिष्ठिम ।। कल्याणमस्तु ।।

(२३२)

६. चरण-पादुका लेख:—

श्री १००८ श्रीस्वगुरोंसा श्रीदीपचन्दजी स्थापित द्वारा इन्द्रचन्द १९६४ सन्

(२३३)

७. छतरियों की मढ़ी सती लेख:—

।। श्री अमाजी री बोउ दोलारी मा पोतरो पुरमल गोत सोलंकी

सती नाम जतनादे कांकरीयांणी की ।। मु ।। ताराजी री बेटी सं ।। १६०८ मो ।। फागुण सुदी १०

मडली

यह ग्राम बालोतरा आगोलाई बस मार्ग पर आया हुआ है। यहां पर पुलिस थाना है। कोई जैन मन्दिर, उपासरा नहीं है। पास के गांव नेवड़ी के मुत्ता केशाजी मडली की सीमा में डकैतों से लड़ते हुए जूंझार हो गये थे, उनको छतरो है। आजकल नेवड़ो में भी कोई जैन घर नहीं है।

(२३४)

१. जूंझार मुत्ता केशाजी की मूर्ति पर लेख:—

—: श्रीरामजी :—

संवत १८६७ रा काती सुदी ११ वार बुध दिन मुत्ता केसरी रामावत जात हिरण विसनागणजो, जोधा भीमसींग धीरजसींगोत रा वंमरा ऊँठों री वार काम आया संवत १८६७ रा काती सुदी ११ वार बुध री पुतली मुत्ता मुकन केसराणी बैठाई।

मिठोड़ा

यह ग्राम बालोतरा पादरू बस के रास्ते पर आया हुआ है। यहां से काफी जैन-परिवार सिवाना में जाकर बस गये हैं तथा वहां पर मिठोड़ों का बास के नाम से उनका मौहल्ला और मन्दिर है। गांव में एक शिखर बन्द मन्दिर है जिसमें श्रीमूलनायकजी श्रीसुविधिनाथजी की प्रतिमा है।

(२३५)

ॐ अर्हंते नमः

१. प्रतिष्ठा लेख:—

त्रैलौक्य पूजिताय श्रीसुविधिजिनेश्वराय नमः ख नेत्राकाश द्वि विक्रम संवतसरे २०२० ज्येष्ठ शुक्ल १२ बुधवासरे श्रीसुधर्मस्वामिनः सुविहित आचार्यपरम्परायां तपोगच्छप्रवर्तक श्रीमद्जगच्चन्द्रसूरि वद्यमान श्रीविजयरत्नसूरि, विजयप्रमोदसूरीशाणांपट्टे सु शोभायमान क्रियाद्वारक समर्थशासनप्रभावकआचार्यशिरोमणिश्रीमदविजयराजेन्द्र-सूरीश, श्रीमदविजयधनचन्द्रसूरीश, श्रीमद्विजयभूपेन्द्रसूरि, श्रीमद्विजय-यतिन्द्रसूरीश चरणचन्चरीक मुनिराजश्रीविद्याविजयेन श्री मिठोड़ा सकल-

संघकृत महामहोत्सवेन सह श्रीमूलनायक श्रीसुविधिनाथादिजिनबिंबाना प्रतिष्ठिता । श्रीसंघश्रेयार्थे शुभम भूयात ।

(२३६)

२. मूलनायक श्रीसुविधिनाथजी लेख:—

विक्रम सं. २००१ माघसिते ६ भृगुवासरे फोसा मूता सेसमल हजारीमलभ्यां श्रीसुविधिनाथजिनबिंब निर्मापित तदं अंजनशलाका गदैया माणकजी सुत परागचन्द्रेण कारिता, श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वर करकमले: श्रीआहोरनगरे-लि. मुनिनीतिविजयेन ।

(२३७)

३. श्रीसुमतिनाथजी लेख:—

विक्रम सं. २००१ माघसिते ६ भृगुवासरे नेनावत हेमाजी सुत कपूरचन्द्रेण श्रीसुमतिनाथजिनबिम्ब कारित, गदैया माणकजी सुत परागचन्द्रेण अंजनशलाका कारितं कृता च श्रीविजययतीन्द्रसूरिभि आहोर-नगरे राजेन्द्र सं. ३९

(२३८)

४. श्रीसुमतिनाथजी लेख:—

सं. २००१ माघ सुदि ६ भृगौ तलेसरा सोलंकी शा. रामचन्द ताराचन्द्रेण श्रीसुमतिजिनबिंब कारित तद् अंजनशलाका कारिता गदैया माणकजी परागचन्द्रेन श्रीमद्विजययतीन्द्रसूरीश्वर कर-कमलै: आहोरनगरे श्रीराजेन्द्रसूरि सं. ३९

(२३९)

५. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

।। संवत १९५२ माघ सुदि १५ श्रीहरजी नगरवास्तव्य शा. धनाजीके श्रीशांतिनाथपंचतीर्थी करापितं । उद्यापना करापितं श्री-जावालनगरे ।। प्राग्वाटज्ञातीय सा जला करापितं । प्रतिष्ठितं श्रीविजय-राजेन्द्रसूरिभि: ।

मेवानगर

यह ग्राम बालोतरा से ११ कि. मी. तथा जसोल से ८ कि. मी. पहाड़ों के बीच में आया हुआ है । प्रसिद्ध जैन तीर्थ नाकोड़ाजी इसी गांव की सीमा में स्थित है जिनके लेख अलग से नाकोड़ाजी के नाम से दिये गये हैं । इस गांव का प्राचीन नाम शिलालेखों में वीरमपुर लिखा मिलता

है। मन्दिर से गांव एक कि. मी. दूर है। मन्दिर व गांव के बीच एक कुआ आया हुआ है जिसके पास काफी छतरियां बनी हुई हैं उनमें से काफी तो राजपूतों की देवलियां हैं, परन्तु दो जैन सती देवलियां प्राप्त हुई हैं।

(२४०)

१. जैन सती लेख:—

संवत १६८५ वर्षे जेठ सुदि ६ दिने गुरवारि समदरडिया गोत्र बालड़ अचला भार्या सोहागदे पुत्र द्रुजणसाल सरग पुहता मुलतान नग्रए द्रूजणसाल भार्या नवलादे सती श्रीवीरमपुर हुई ।। सुत्रधार धरमसीकृतं।।

(२४१)

२. ।। ६० ।। संवत १६६७ वर्षे: फागुण वदि ६ वार शुक्रे: चिम्रा नषत्रे: सघवी चांगा: पुत्र: सुरताण: भार्या: सतवंती: सीलवती: मांनादे: स्वर्गगतौ: सूत्र कचरा: सूत्र धरमसीकृतं ।।

मोकलसर

यह ग्राम समदड़ी भीलड़ी रेल मार्ग पर रेलवे स्टेशन है। यहां कई स्थानों से बसें आती जाती हैं। तहसील मुख्यालय सिवाना का भी रेल्वे स्टेशन यही गांव है। यहां श्रीपार्श्वनाथजी का मन्दिर है।

(२४२)

१. श्रीमूलनायकजी श्रीपार्श्वनाथश्री प्रतिमा लेख:—

सवत १५४५ वर्षे वैसाख सुदि ३

(२४३)

२. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं. १४९९ फा.सु. २ ऊकेशज्ञातीय सा. कडुआ भा. कीलूण पुत्र सा. रतनाकेन भा. रतनादे पुत्र वीरमयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंब का प्र. श्रीसूरिभिः ।।

(२४४)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं. १५३० वर्षे फागुण सुदि १० उ. कुससगोत्रे सा. भाड़ा भा. पदमिणी श्रीशांतिनाथबिम्ब का. प्र. श्रीसिधसेनसूरिपट्टे श्रीश्री-धनेश्वर सूरिभि ।। प्रतिष्ठितं।

रमणीया

यह ग्राम मोकलसर से पादरू बस मार्ग पर आया हुआ है। मन्दिर

के जीर्णोद्धार का काम चालू था। मन्दिर में मूलनायकजी श्रीसुमतिनाथ जो हैं। मूलनायकजी की प्रतिमा मय परिकर के है।

(२४५)

१. प्रतिष्ठा लेख:—

वि.सं. २०४२ वैसाख शुक्ल अष्ठमी रवि पुष्यनक्षत्रे तपा. आ. विजयराजतिलकसूरि एवं आ. वि. प्रद्योतनसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(२४६)

२. मूलनायकजी प्रतिमा लेख:—

सं. १९९८ मार्ग सुद ६ सोमवासरे गोलनगरे श्रीसंघेय श्रीसुमतिनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्रीविजयसिद्धसूरि-निदर्शन प. कल्याणविजयगणिः॥

(२४७)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख—

॥ सं. १५१२ फागुण सु. १२ बुधवार सा. वारदेव पुत्र देवदत्त-युतेन निजश्रेयार्थं श्रीविमलनाथबिम्ब का. प्र. श्रीतपा आ. श्री-हेमरत्नसूरिभिः

राखी

यह ग्राम मोकलसर खंडप मार्ग पर आया हुआ है। गांव में एक जैन-मन्दिर है जिसमें मूलनायकजी श्रीसुमतिनाथजी विराजमान हैं।

(२४८)

१. श्रीमूलनायकजी प्रतिमा लेख:—

स्वस्ति श्रीपालीनगरे श्रीवीर २५११ वर्षे पोष कृ. ६ दिने श्रीसुमतिनाथजिनबिंब श्रीराखी जैनसंघ कारितं प्रतिष्ठितं च योगनिष्ठ-आ.श्रीबुद्धिसागरसूरीश्वर परम्परक आ. श्रीकैलाससागरसूरीश्वर आ. श्रीकल्याणसागरसूरीश्वर आ. श्रीपद्मसागरसूरीश्वर सहितैः शुभं भवतु श्रीश्रमण संघस्य॥

(२४९)

२. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सवत १५०९ वर्षे पू. सु. ८ बुध श्रीमकाष्ठासंघ गोछ भ. श्रीधमी-मन श्रीभीमा-भोपा गयागोत्रे नारा सहजातीय। ठा. खेता, राण॥ श्रीचन्द्रबिंब करापितं ठा. खेताकृतम।

(२५०)

३. श्रीशांतिनाथजी प्रतिमा लेख:—

।। संवत १९५५ फागुण वदि ५ गुरो राखीनगरेवास्तव्य पोरवाड़-ज्ञातीय सा. जवेरचन्द तिलोकचन्द जीत्केन बिंबकारितं प्रतिष्ठितं। श्रीराजेन्द्रसूरिणां प्रतिष्ठा कारिताग्रोसवाल। मु। जसरूप जीताजीत्केन ग्राहोर नगरे तसं।

राणी ग्राम

यह ग्राम बाड़मेर चोहटन बस मार्ग पर आया हुआ है। बाड़मेर से दक्षिण पश्चिम में है। यहां एक घुमटीवाला जैन-मन्दिर है। मूलनायक जी श्री सुमतिनाथजी विराजमान हैं।

(२५१)

१. श्रीमूलनायकजी श्रीसुमतिनाथजी प्रतिमा लेख:—

सं. २०१६ माघ सुद १४ गुरु पुष्ययोगे श्रीसुमतिनाथबिंब मेवानगरे श्रीसंघेन कारापिता पू. आचार्यदेवविजयहिमाचलसूरिभि:

(२५२)

२. प्रतिष्ठा लेख:—

वि. सं. २०१७ द्वि. ज्येष्ठ सु १३ सोमे राणीगांव श्रीसंघेन श्रीसुमतिनाथ प्रतिष्ठा कारापिता, खरतरगच्छाचार्य श्रीहरिसागरसूरि शिष्याण अनु. यो. आ. कांतिसागरेण प्रतिष्ठितं श्रीसंघस्य श्रेयसे भवतु।

(२५३)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

।। संवत १५३४ वर्षे माह सुदि ५ दिने मोढ़ज्ञातीय मंत्रिदेव प्राग्वाट छकू सुत मत्री सहसहिता नांव धर्मनाथबिंब पित्रो: श्रेयसे कारापितं, प्रतिष्ठितं श्रीविद्याधर गच्छे श्रीहेमप्रभसूरिभि:

रामसर

यह ग्राम बाड़मेर तहसील में है। यह बाड़मेर मुनाबाव रेलवे का स्टेशन है जो बाड़मेर से पश्चिम में आया हुआ है। यहाँ पर एक जैन मन्दिर है जो घर मन्दिर है। प्रतिमा पंच धातु की है तथा श्री पार्श्वनाथ भगवान् की है, प्रतिमा प्राचीन है।

(२५४)

१. श्री मूलनायक जी पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं. १२७० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ रवि श्रीश्रीमाल श्रे. भीमा भार्या तेजूश्रेयसे पुत्र श्रीपार्श्वनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं ग्र. सलाखाग्रे श्रीधनदेवसूरिशिष्य-श्रीधर्मचन्द्रसूरिभिः

विठूजा

बालोतरा से विठूजा बस मार्ग है। यह बस आसोतरा होकर जाती है। आजकल विठूजा में एक जैन घर है। किसी समय जैन-धर्म को मानने वालों की काफी बड़ी आबादी थी। यहां पर आज भी एक खण्डहर रूप में जैन-मन्दिर विद्यमान है। उस पर कोई लेख नहीं है।

विशाला

यह ग्राम बाड़मेर से उत्तर पश्चिम में आया हुआ है। बाड़मेर से हरसाणी व गिराब जाने वाले बस मार्ग पर स्थित है। यहाँ पर पचधातु की बड़ी प्रतिमा है। जो करीब चालीस से. मीटर ऊंची होगी। मन्दिर श्रीविमलनाथजी का है। श्वेत पाषाण प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है।

(२५५)

शिला लेख स्थापना:—

१. श्री गोड़ी पार्श्वनाथ नमः सं. १६८८ वरषे नवो जिनचैत्य करावंत ॥ श्रीवैसाला मध्ये ॥ संवत १८७८ वरषे मासोतममासे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे १३ तिथौ ॥ चन्द्रवारे। धनिष्ठानक्षत्रे सुकरमाजोगे। नवो जीर्णोद्धार करावतं। खरतरगच्छे ।जं.। जुगप्रधान भट्टारकजी श्रीश्री १०८ श्रीजिनहरषसूरिजी विजैराज्ये। समस्त खरतर आंचलगच्छे श्रीसघ पंचायती करावतं। आंचलगछे सा. श्री। मनरूप। आसकरण। महेस। मनरूप। खरतरगछे सा. ठाकरसी। मु. जेठा। सबला। सा. हीरा बेगड़गछे सा. देवा। समस्त श्रीसघ करावत॥ पं.। प्र। मनरूप। पं. धीरहर्षचन्द चतुर्मासीकृत्वा॥ श्री॥ सुभ भवतुः कल्याण राठोड़। बाहड़मेरा। राजश्रीसोभासघजी महासघजी। राजसीयोत विजेराज्ये ॥रु. ५०० लागा छे। वैशाला मध्ये॥ श्री॥

(२५६)

२. पंच धातु प्रतिमा छोटी:—

।। स. १५२० वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शु. उ. सेठिगोत्रे जसा भा. जाल्हणदे पुत्र सीघर भार्या बीजू पुत्र सोगासहितेन श्रीकुंथनाथबिम्ब का. प्र. नाणकी गच्छे भ. श्रीधनेश्वरसूरिभिः ।। श्री ।।

(२५७)

३. पंचधातु प्रतिमा बड़ी—

संवत १६३७ वर्षे माघ वदि ८ शा. श्रीदीववास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीयये । रामईया भार्या लाहु सुत सिंह राउस भार्या राषमादेप्रमुख कुटुंबसंयुक्तेन श्रीआदिनाथबिब करापितं । श्रीमहात्पागछे भट्टार्क श्रीहीरविजयसूरिभि-प्रतिष्ठित । शुभ भवतु ।। श्री ।।

शिव

यह ग्राम बाड़मेर में इसी नाम की तहसील का मुख्यालय है । यहाँ तक बाड़मेर से बस आती जाती है तथा बाड़मेर जैसलमेर, जैसलमेर बस मार्ग में भी पड़ता है । आजकल यहां जैन लोगों के तीन चारघर हैं। पुराना खंडहर जैन-मन्दिर है जिस पर कोई लेख नहीं है ।

सणपा

यह ग्राम बाड़मेर से पूर्व दिशा में आया हुआ है । बाड़मेर सिणदरी रोड पर सणपा घाटा उतरने पर गांव तीन मील पड़ता है । सिणदरी से नोहर जाने वाली बस मार्ग पर है । यहाँ पर एक घर मन्दिर है जिसका नाम लक्ष्मी भवन हैं ।

(२५८)

१. स्थापना लेख:—

।। ॐ ।।

परम पूज्य मेवाड़–केसरी आचार्यदेव श्रीमद्विजयहिमाचल सूरीश्वरजी महाराज के शिष्यरत्न मुनिश्रीलक्ष्मीविजयजी मुनिश्रीमानक विजयजी के उपदेश से सणपा श्रीसंघ द्वारा निर्मित लक्ष्मी भवन—

(२५९)

२. मूलनायकजी श्रीआदिनाथजी पंच धातु प्रतिमा:—

।। संवत १५२८ वर्षे वैसाख वदि ५ महेवावास्तव्य उकेशज्ञा. चोपड़ागोत्रे सा. साल्हा भा. सिरिआदे सुत हेमा राउलीस्या भा. हेमादे

तोली पुत्र वीरम पोपा भा. रूपी-सुतउदादिकुटंबयुतेन स्व श्रेयोर्थं श्रीग्रादिनाथबिंब कारितं। प्रतिष्ठितं श्रीउपकेशगछे कुकदाचार्यसंताने श्रीदेवगुप्तसूरिभि:

समदड़ी जंक्शन

यह नगर बाड़मेर जोधपुर रेल मार्ग पर ग्राया हुग्रा है। यहाँ से रेल की एक लाईन सिवाना जालोर होती हुई भीलड़ी जाती है। यहाँ दो जैन मन्दिर हैं, परन्तु दोनों का जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है। जूना बास में मन्दिर तीन चौथाई बन चुका है तथा नया बास में ग्राधा बना है। ग्रभी पूजायें घर मन्दिरों में हो रही है। जूना बास मन्दिर में कोई लेख नहीं है। नया बास में सुपार्श्वनाथजी के मन्दिर तथा पास ही में बनी दादावाड़ी से लेख प्राप्त हुए हैं।

नया बास मन्दिर लेख

(२६०)

१. श्रीसुपाश्वनाथजी मूर्ति लेख:—

।। मा ६२ ।। १७८६ प्रामाय श्रीगुरुवासरे प्रणामिशतं

(२६१)

२. पंच धातु प्रतिमा लेखः—

संवत १२६६ वर्षे वैशाख सुदि १० बुध श्रा. शालिग पुत्र पार्श्वन श्रीनेमिनाथ-प्रतिमा पितृ: श्रेयार्थं कारिता प्रतिष्ठिता: श्रीपार्श्वदेव: प्रेरित:

(२६२)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

।। सं. १५१४ वर्षे फागुण वदि १२ सोम जाईलवालगोत्रे छाजल यांस खीमा पुत्र सा धीरा पुत्रात्पं ।। सा. भाभण देन सई। श्रीनिजपितृ धीरा पुण्यार्थं श्रीसंभवनाथबिंब का. प्र. तपागच्छे श्रीपूर्णचन्द्रसूरिपट्टे श्रीहेमहंससूरिभि: ।।

(२६३)

४. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

संवत १५५६ वर्ष वैशाख सुदि १३ रवि उपकेशज्ञाति तातहड़गोत्रे सा. हड़ा भा. सुहरादे पु. सामल भा. सुगुणदे पु. समसूर सहसमल ग्रात्म-श्रेयांस श्रीसुविधिनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं उपकेशगछे कुकुंदाचार्य-संताने श्रीश्रीश्रीदेवगुप्तसूरिभि: ।। ☞ ।। नदताय चन्द्राकों ।। श्री ।।

(२६४)

५. वीर संवत २५१० तमे वर्षे विक्रम संवत २०४० तमे वर्षे चैत्र कृष्ण पंचमी दिने शुक्रवासरे प्रातःकाले तपागच्छीय सिध्धांत महोदधि स्व: आचार्य श्रीविजयप्रभसूरीश्वराणां पुण्यप्रभावक श्रीविजयकलापूर्ण सा. गणि श्रीहेमचन्द्रविजयादिभिः प्रतिष्ठितं श्रीगिरनार तीर्थ सहस्राम्रवने श्रीसमवसरणमंदिरे श्रीसहषावन कल्याणभूमि तिर्थोधार समिति करितां जनरालाकां विधिप्रतिष्ठामहोत्सवे कारापितं श्रीचोबीसी शांतिजिनबिंबमिदं राजस्थान समदड़ीग्रामस्य संप्रति महेसाणावास्तव्य मुलतानमलजी पुत्र रूपचन्द-सपरिवारेण ।

समदड़ी दादावाड़ी लेख

(२६५)

६. धातु मूर्त्ति लेख भाषा गुजराती:—

शीव (मुबई) उपनगरे वी. सं. २४९५ जे. शु. ५ दिने समदड़ी (मारवाड़) नि. बी. श्रो. कंकुगोत्रीय स्व; श्रीदयारामजी सुपुत्री मुल्तानमलजी तथा मुकनचंदजी सुपत्नी समादेवी सुपुत्र नरपतलाले श्री-वासुपुज्यस्वामी-पंच तीर्थी भराव्यां। तपा. आ. श्रीकैलाशसागरसूरीश्रे प्रतिष्ठित कर्या छे।

(२६६)

७. दादा जिनदत्त सूरि जी:—

वि. सं. २०२४ का वैशाख शुक्ला ६ को शा. गणेशमल पुखराज ... श्रीजिनदत्तसूरि की मूर्त्ति भरवाई आचार्य श्रीप्रेमसूरिजी मुनियोन जिनप्रभविजयजी प्रतिष्ठा करापितं ।।

(२६७)

८. सिद्ध-चक्र-यन्त्र लेख:—

।। सं. २०३६ माघ सुद १४ गुरु पुष्य योगे श्रीसिद्धचक्रयन्त्र-लुणावत समदड़ी वा. शाह सानीत पुत्र प्रतापमल करापितम मेवानगरस्य नाकोड़ा तीर्थ श्रीसंघेन श्रीहिमाचलसूरिभिः।।

(२६८)

९. श्याम पाषाण प्रतिमा श्री ऋषभदेवजी लेख:—

संवत १७७५ वर्षे मिति वैसाख सुदि ३ श्रीरीषबदेवजीबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीपूजजी श्रीरधोसीघजी ।

(२६९)

१०. श्रीआदिनाथजी श्वेतपाषाण लेख:—

सं. २०११ मार्ग सु. ६ बुधे जाबालिपुरवा. सा. भीमराजने स्व-भार्या गजीश्रेयसे आदिनाथबिंब का. सा. जोधाजी मनीराम का. प्रतिष्ठायांम पं. कल्याणविजयगणिना मांडवला

(२७०)

११. श्रीसुमतिनाथजी श्वेत पाषाण लेख:—

२०१३ वर्षे माघ शुल्क १० रवि गोलनगरीय मु. ऋषभचन्द्रेन स्वपितृ जुहाराजी स्वमातृ देवीचन्द हस्तीमलयो स्वस्यब श्रेयार्थ श्री-सुमतिनाथ: कारित: श्री पुंजाजी पत्नया गजरां श्राविकया स्वपुत्र देवीचन्द नेनमल चम्पालाल छगनलाल सहितयां कारितं प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठित: ! पं. कल्याणविजयगणि नामनि सौभाग्यविजयादिपरिवारेण।

(२७१)

१२. श्रीशीतलनाथजी लेख:—

२०१३ वर्षे माघ सु. १० रवौ गोलनगरीय माणकजी पुत्र घेवर-चन्द्रेण स्वमातु धापुश्रेयार्थ श्रीशीतलनाथसामी सा. पूजाजी भार्या गजरां श्राविका का. प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठित: पं. कल्याणविजयगणि नामनि सौभाग्यविजयादि।

(२७२)

१३. श्याम पाषाण श्रीसुमतिनाथजी लेख:—

संवत् १४६८ वर्षे चेत्र सुदि ५ प्राग्वाट उसासी भं. । .. ..श्री-सुमतिनाथबिंब कारिता प्रतिष्ठितं।

सिणधरी

यह ग्राम बाड़मेर से पूर्व में बाड़मेर बालोतरा बस मार्ग पर आया हुआ है। यहां पर एक तपागच्छ का दूसरा खरतरगच्छ का मन्दिर आया हुआ है।

(२७३)

१. श्री ऋषभदेव मन्दिर के मूलनायक जी पर लेख—

॥ऋषभदेवजीबिंब स्थापितं

(२७४)

२. श्रीमहावीरजी प्रतिमा लेख—

।। सं. १८८४ मा. सुद ५ श्रीजिनहर्षसूरि, पं. वा. माणिक्यहंसगणि श्रीमहावीरजिनबिंब प्रतिष्ठित ।

(२७५)

३. प्रतिमा लेख—

।। सं. १९५५ रा फागुणमासे कृष्णपक्षे ५ तिथौ गुरुवासरे जिनमुक्तिसूरिभिः। प्रतिष्ठापित श्रीम्राहोरनगरे।। श्रीचन्दाप्रभ सिणधरी ।

(२७६)

४. पादुका लेख—

सं. १९६४ रा फागुण सुदि २ भृगुवासरे स्थापितं । श्रीजिनकुशलसूरि गुरुचरण स्थापितं सिणधरीग्रामे पं. प्र. हीमतमल ।

(२७७)

५. प्रतिष्ठा लेख —

।।श्रीऋषभदेवस्वामी ने नमः । श्रीः।।

।। सं. १९५५ शाके १८२० रा प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे पौषमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यायां तिथौ सोमवासरे शुभलग्ने श्रीभावहर्षगच्छे सीभोतः उ. प. पू. श्रीजुहारमलजो सोमपुरा केवलरामः वाः वाः कोसेलाव वाला मन्दिर उपदेसित श्रीहोरविमलजो श्रीसिणधरीनगरे समस्त श्रीसंघेन नीबड़ा वाले मन्दिर श्रीऋषभस्वामीबिंब स्थापितः अथ प्रतिष्ठा हुई तीनरे चढ़ावा री वीगत। ...... दाः पं. हिमतमल रा छै श्रीभावहर्षगच्छे ।। सकलसंघ सुखदायक ।

श्रीहरि विहार उपासरा

(२७८)

६. यह श्रीहीर विहार प. पू. मेवाड़ केसरी श्रीनाकोड़ाउद्धारक आचार्यदेव श्रीमद्विजयहिमाचलसूरीश्वरजी महाराज साहेब के शिष्यरत्न पू. मुनिराज श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराज के उपदेशों द्वारा निर्मित कराया ।।श्रीरस्तु।।

सियाणी

यह ग्राम बाड़मेर से पश्चिम में आया हुआ है। बाड़मेर से यहाँ पर प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान किराडू होकर बस जाती है। यहाँ पर

श्रीआदीश्वर भगवान का मन्दिर है। यहाँ पर एक चरण–पादुका पर इस जिले का सबसे प्राचीन जैन लेख अंकित है।

(२७९)

१. श्रीमूलनायकजी आदिनाथजी प्रतिमा लेख:—

स. १९१० सावण प्रथम मासोत्तममासे ५ गुरुवार श्रीऋषबदेजी

(२८०)

२. मन्दिर में शिलालेख:—

।। श्रीआदिनाथ:खर कर्मजाल हन्तार को दुस्तर संकट छै:सुरेन्द्र भू भृजण संस्तुताने पायाद्मवात्तव मत शिष्ठ रक्तमान। सीहाणी पूरे श्रीवृद्धिचन्द ततशिष्यकपूंरविजय ततशिष्य धन्यविजयोन सदुपदेशेन तत्रस्य संघ कारापित चैत्ये श्रीआदिनाथ प्रतिमा स. १९७७ ज्येष्ठ सुद ५ तिथौ शनो श्रेयोनिमित्तं स्व-परहिताय प्रतिष्ठापिता पुनस्तत्र धर्मशाला कारितिति ।। इष्टदेवाय नम ।।

(२८१)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

संवत १४३८ वर्षे असाढ सुदि ९ शुक्रे माह वाशव्य:सांडा भार्या संसारदे भा. सूमलदेसुतसहितेन सामलपितृश्रेयार्थं महिपाल श्रीपार्श्व-नाथबिंब कारितं आगमगच्छ श्रीजयतिलकसूरिउपदेशात।

(२८२)

४. श्याम पाषाण प्रतिमा श्रीमल्लिनाथजी पर लेख:—

संवत १४९३ वर्षे फागुण वदि १ दिने श्रीमल्लिनाथबिंब प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे।

(२८३)

५. चरण-पादुका लेख:—

सं. १०७२ वर्षे मिति अषाढ वदि ५ बुधवार श्रीमुनिधर्मसीगणी पादन्यास कारापिता श्रोपतविकरणशिष्य-अमरसी भा. शान्तिदेवीकोट-मध्ये।

सिवाना

यह ग्राम इस जिले का प्राचीन गांव है। यह इसी नाम की तहसील का मुख्यालय है। यहां किला तथा नगर का परकोटा बना हुआ है। इस गांव का इतिहास जितना पुराना है उतना पुराना कोई मन्दिर या शिलालेख नहीं मिला। इसका कारण मुसलमानों के हमलों के समय

मन्दिरों का तोड़ना तथा मूर्तियों का खडित करना हो सकता है। यहाँ पर अलाउद्दीन खिलजी ने चौहान सांतलदेव पर, अकबर ने राव चन्द्रसेन पर तथा औरंगज़ेब ने वीर राठौड़ दुर्गादास पर हमले किये थे। अकबर ने राठौड़ राव कल्याणमल रायमलोत पर भी हमला किया था।

यहाँ के मन्दिरों की विगत इस प्रकार है:—

१. गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर-पोल के अन्दर
२. दादावाड़ी जिनकुशलसूरिजी-पोल के अन्दर
३. गुणेशमलजी भीमराजजी का मन्दिर श्रीपार्श्वनाथमन्दिर
४. चौमुखजी श्रीपार्श्वनाथजी मन्दिर
५. मिठोड़ों का बास-जैन मन्दिर
६. पादरू का बास-जैन मन्दिर
७. मोकलसर रोड, जैन मन्दिर
८. राज मन्दिर
९. जैन पेढ़ी में निर्माणाधीन मन्दिर

श्रीगौड़ी पार्श्वनाथजी मन्दिर

(२८४)

१. प्रतिष्ठा लेख:—

श्रीवितरागाय नमः

।। अस्य मन्दिरस्य पुनरुद्धार गढ़सिवानावास्तव्य समस्त श्रीसंघेन कारितः प्रतिष्ठापितश्च प्रतिष्ठितं जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरसंतानीय हितसत्कविजय हिमाचलसूरिभिः संवत रसकरा अ नेत्रं मार्ग शुक्ल षष्ठया मूर्त्तियो अर्कवासरे श्रीरस्तु ।। लिपिकृतं विद्यानन्दविजयः

(२८५)

२. पंचधातु प्रतिमाः—

।। सं १५१० वर्षे माह वदि ५ दिन उ. बलाहड़ीयागोत्र सा. वीसल भा. धानी पुत्र लाषा भा. लषमश्री पु. हालू भिः सह सा. ऊधरण मित्र श्रीशांतिनाथबिम्ब कारापितं प. श्रीपल्लिकायगछे श्रीयशोदेवसूरिभिः ।। शुभभवतु ।।

(२८६)

३. गुरांसा की छतरी:—

संवत १७६९ वर्षे शाके १६३५ प्रवर्तमाने असाढ़ सुदि—सोमवारे

भट्टारकश्रीजिनसुंदरसूरिजी विजयराज्ये पादुका प्रतिष्टितं श्रीमहाराजाधिराज माहाराज श्रीअजीतसिंघजी विजयराज्ये श्रीसिवाणगढ़ महादुर्गेपादुका करापिता ।

(२८७)

४. एक ही शिला पर चार पादुका लेख:—

(i) भट्टारक श्रीजिनसमुद्रसूराधिराज पादुका
(ii) वा. श्रीसामीदासजी केन पादुका
(iii) भवानीदासजीकेन पादुका
(iv) प. श्रीदेवीदासजीकेन पादुका

(२८८)

५. पादुका लेख:—

।। संवत १९२२ रा शाके १७८७ वर्षे माघ वदि तिथौ दिन दिसु पांचम बुधवासरे पूर्वाषाढ़ानषत्रे गुरां साहिबजो श्रीश्रीराधाकिशनजी तत्शिष्य अखेचन्दजो तत्शिष्य ताराचन्द पादुका प्रतिष्ठितं ।।

श्रीदादाजी जिनकुशलसूरिजी दादावाड़ी

(२८९)

१. पातुका लेख पीत पाषाण:—

।। संवत १६९१ वर्षे वैसाख सुदि ३ दिने गुरुवारे रोहिनी नक्षत्रे खरतरगछे श्रीजिनकुशलसूरीश्वरांणि पादुका प्रतिष्ठितं ।

स्थानकवासी धर्मशाला

(२९०)

१. पादुका लेख:—

संवत १९०८ रा माह सुदि ५ विवेकविजेजी शिष्य विनैविजे गुरांसा नौहरविजेजी ।

श्रीवासुपूज्य भगवान का शिखरबन्द मन्दिर

(२९१)

१. प्रतिष्ठा लेख:—

अस्य नूतन जिनमंदिरस्य निर्माणितं उम्मेदपुरा (गढ़ सिवाना)-वास्तव्य समस्तश्रीसंघेन प्रतिष्ठापितश्च प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छीय

आचार्य श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वराणां पट्टधर आचार्य श्रीमजिज्न जयसागरसूरीश्वरेण नेतृत्वे वि. सं. २००० रा वैसाख सुद ६

(२६२)

२. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

।। सं. १६०२ फागुण वदि २ लोढ़ागोत्र संघ धिरपाल भार्या लाछी स्वश्रेयार्थ कारिता:

(२६३)

३. पंच धातु प्रतिमा लेख:—

सं. १७६८ वैसाख सुद ५ बुधवारे श्रीवासुपूज्य कारापित:

अमृतीया बेड़ा श्रीरतनलालजी बालड़

(२६४)

१. श्रीआसापुराजी प्रतिमा लेख:—

यह देवली नई पारकर बाई भंडारीजी रतनमलजी प्रेमराजजी सूरजमल बेटा पोतरा हरखमलजी रा १६८२ रा मिति जेठ सुद १० सा प्रेमराज।

श्रीसुमतिनाथजी का मन्दिर शामरणा शिखर

(२६५)

१. प्रतिष्ठा लेख:—

प्रतिष्ठा संवत २०४० माघ वद ६ आचार्यश्रीविजयसोमचन्द्र-सूरीश्वरजी मुलतानमल कुन्दनमल धार्मिक ट्रस्ट द्वारा बनवाया गया।

झंडा का चौक-पोल के अन्दर

(२६६)

१. शिला पट्ट लेख:—

।। श्रीजालंधरनाथजी ।।

सही

।। सिधश्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री १०८ श्री श्रीतखतसिंघजी देववचनायतु कसबै सिवाणा रा महाजनां समस्तौ ने मेहरबान होयने दंण्ड विराड माफ कियो है सो आल औलाद कदेही लिरासी नही दुवायती रावराजा बाहादर लोढ़ा रिधमलजी री संवत १६०० रा फागुण सुद ३

राजमन्दिर श्रीकुन्थुनाथजी शिखरबन्द (न्याति नोहरे के पास)

(२६७)

१. प्रतिष्ठा लेख:—

वि. सं. २०४१ वैशाख कृष्ण ५ शुक्रवासरे निमाजनगरे श्रीकुंथनाथजिनबिंब सिवानात्रास्तव्य श्रीमदराजचन्द्र मुमुक्षुमंडलेन कारापितं तथा तपा. आचार्य पद्मसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं च शुभ भूयात श्रीसंघस्य च ।।

सुमतिनाथजी का मन्दिर-न्याति नोहरा, मोकलसर रोड

(२६८)

१. प्रतिष्ठा लेख—

श्रीगढ़सिवानानगरे वि. सं. २०४० माघमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ बृहस्पतिवासरे श्रीसुमतिनाथजिनबिंब श्रेष्ठिवर्यं मुल्तानमलजी-श्रेयोर्थे अमीचन्द प्रवीणकुमार हीराचन्द जिनेशविवल महावीर विक्रम बागरेचा सपदियारेण श्रीतपागच्छीय आ. भ. श्रीमद्विजयसोमचन्द सूरीश्वरजी पं. श्रीजिनचन्द्रविजयजी सपरिवारस्य शुभनिश्रामम अंजनम कारितम् ।। तथैव कृष्णपक्षे षष्ठि तिथौ चन्द्रवासरे प्रतिष्ठितम । । इति शुभं भवतु ।।

श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर-पादरू का बास

(२६६)

१ प्रतिष्ठा लेख—

जयन्तु वीतरागाः श्रीसौधर्म वृहत्तपोगच्छाधिपति पूज्यपाद भट्टारक गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वर जी मा. के पट्टधर न्याय चक्रवर्ती श्रीधनचन्द्रसूरीश्वर जी म. के पट्ट साहित्य विशारद् श्रीभूपेन्द्र-सूरीश्वरजी म. के पट्ट तीर्थोद्धारक श्रीयतीन्द्रसूरीश्वर म. के पट्ट गणाधीश श्रीविद्याचन्द्रसूरीश्वरजी ने. वि. सं. २५०१ वि. सं. २०३१ श्रीराजेन्द्रसुरि सं. ६६ पौष सु. १४ के दिन शुभ लग्नांश में चौमुख चैत्य की प्रतिष्ठा की ।।

चौमुखजी का मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजी

(३००)

१. प्रतिष्ठा लेख—

ॐ

श्री पार्श्वनाथ प्रभु की स्थापना इस मन्दिर की प्रतिष्ठा परम

पूज्य सकल आगम रहस्य वेदी बाल ब्रह्मचारी स्व. आ. देव विजयहर्ष सूरीश्वर जी म. के आज्ञाकारी पूज्य पाद मुनिराज श्रीकस्तूरविजयजी महाराज (देहलावाला) के कर कमलों से सम्पन्न हुई वि. सं. २०२२ मीगसर शुक्ल १० वार शुक्र चौधरी चुन्नीलाल सरदारमल संतोकचन्द्र पुखराज पारसमल सुरजमल जवाहरलाल बेटा पोता अणदाजी बागरेचा की तरफ से ।

(३०१)

२. पंच धातु प्रतिमा—

सं. १५०८ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ रा सुराणा गोत्रिय भा. सीमाकेन स. सहसराज निमित्तो

श्रीसुपार्श्वबिंब कारित प्र. पं. श्री राज गच्छे श्री..........

(३०२)

३. पंच धातु प्रतिमा—

।। सं १५०८ वर्षे जेष्ठ सुदि १३ बुधे उपकेश ज्ञातोय बालड़ गांगा स. दीता भा. कमीदे पु. रूपा भा. मोहणदे पु. वरडा सहि. श्रेयस श्री शान्तिनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं वोकड़ी गच्छे श्रीमलयचन्द्रसूरिभिः ।

हरसाणी

यह ग्राम बाड़मेर से उत्तर पश्चिम आया हुआ है। यहाँ तक बाड़मेर से बस जाती है। यहाँ पर श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर है।

(३०३)

१. मन्दिर पर लेख:—

श्री जैन श्वेताम्बर श्रीशान्तिनाथजी का मन्दिर हरसाणी सं, २०१० चैत्र सुदि १५ वी २४८०

(३०४)

२. पंच धातु प्रतिमा :—

सं. १३२५ माघ सुदि ५ सनै श्री सुरता श्री श्रीमाल सा, मूलदेव भार्या मुजल पुत्र सा. कालऊ भार्या तयजलदेवी पुत्र सा. घतऊ भा सोमऊ ए तिष्णं श्रेयसे श्रो आदिनाथ प्रभृति पंचायतन कारित प्रतिष्ठितं पल्लि गच्छे श्री - सूरिभिः

(३०५)

३. पंच धातु प्रतिमा:—

सं. १५२३ बर्षे दिवे कातीय सुद ६ बुधे मोदाई प्राग्वाट ज्ञातीय सा. लापाजी भा. राणी सुत श्रे, कालाकेन भा. कर्मादे सुत ह्वीग भा. राजि

कुटुंब युतेन स्वश्रेयेस श्रीशांतिनाथबिम्ब कारितं प्रतिष्ठतं राद्रगच्छे श्री-क्षमाचन्द सूरभि :

(३०६)

४. पंच धातु प्रतिमा:-

॥ सवत १५२५ वर्षे मार्ग सुद १० उवेश सो. राना भा. रानोद्व पु. सो. नगराज भा. नयणदे पु. सो. मांकाकेन भा. धनाई पु. कमलसी बछराज हांसादि कुटुंब युतेन श्रीविमलनाथबिम्ब का. प्र. तपागछे श्री रत्नशेखरसूरिराजे पेट्ट श्रीतपागच्छनायक श्रीलक्ष्मीसागरसूरि राजे अहमदाबाद ॥ श्रीः ॥

(३०७)

५. श्री दादाजी प्रतिमा लेख:-

सं. २०३६ जे. सु. ६ शुक्रवासरे हरसानी नगरे पू. श्रीजिन-कुशलसूरिबिम्ब खरतरगच्छाचार्य श्रीआनन्दसागरसूरि शिष्यरे उदयसाग प्रतिष्ठितं: श्रेष्ठि बिकचन्द शेरमलाणी छाजेड़ सत्र स्थापी छै।

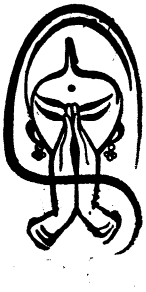

श्रीनाकोड़ा तीर्थ–मेवानगर

(३०८)

१. तीर्थ की पेढ़ी श्रीपाश्र्वनाथ प्रतिमाः—

संवत १०६ ......(१०६०) वैशाख वदि ५ घर्मेण प्रतिमा कारितेति ।।

श्री पाश्र्वनाथ मन्दिर लेख

(३०६)

२. कीर्त्तिरत्नसूरि मूर्त्तिः—

संवत १५३६ वर्षे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि गुरुभ्यो नमः सा. जेठा पुत्री रोहिणी प्रणमति ।

(३१०)

३. श्री पार्श्वनाथ मन्दिर चौकीः—

।। स्वस्तिश्रीर्जयो मंगलाभ्युदयश्च । संवत १६७८ वर्षे शाके १५४४ प्रवर्तमाने । द्वितीय आसाढ़ सुदि २ दिने रविवारे । राउल श्री जगमालजी विजयराज्ये ।

श्री पल्लिकीयगच्छे भट्टारक यशोदेवसूरि जी विजयमाने श्री महा· वीर चैत्ये श्रीसंघेन चतुषिका कारिता श्रीनाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादात् शुभं भवतु उपाध्याय श्री कनकशेखर शिष्य पं. सुमतिशेखरेण लिखितं श्रीछाजहड़ देवशेखरजी संयन कारापिता सूत्रधार ! ऊजल भ्रातृ झांझा घड़िता मंत्रिज कचरा ।

(३११)

४. श्री पार्श्वनाथ मन्दिर रंग मंडपः—

।।६०।। आषाढ़ादि संवत १६८१ वर्षे चैत्र वदि ३ दिने भोगवारे हस्त नक्षत्रे वीरमपुरे राउल श्री जगमालजी विजयराज्ये श्री पल्लिवाल गच्छे भट्टारक श्रीयशोदेवसूरिजी विजयमाने श्रीपार्श्वनाथजी चैत्ये श्री-पल्लिगच्छ संघेन गवाक्षत्रय

सहिता सुशोभना निर्गम चतुष्किका कारापिता उपाध्याय श्री हरशेखराणां पट्ट प्रभाकरो उपाध्याय श्री कनकशेखर तत्पट्टालंकारोपाध्याय श्री देवशेखरे स्वर्गते उपाध्याय श्री कनकशेखर हस्त दीक्षिते उपाध्याय श्री सुमतिशेखरेण स्वहस्ते—

(३१२)

५ नालिमण्डप का शिलालेख:—

संवत १६८१ वर्षे आषाढ़ वदि ६ सोमवारे। राउल श्रीजगमालजी राज्ये श्रीपल्लिगच्छीय श्रीसंघेन श्रीपार्श्वनाथजी चैत्ये नालिमण्डपं कारापित उपाध्याय श्री शिवा लिखितं। सूत्रधार मेघा सूत्र कचरा सूतारा कारीगर कमांण। शुभंभवतु श्री संघस्य श्रेयोस्तु ॥

(३१३)

६. श्री पार्श्वनाथ मूर्ति पर:—

सं. २०१६ माघ शु १४ तिथौ गुरु पुष्य योगे वेलूर वा. जवानमल गणेशमल परिवार सहितेन श्रीपार्श्वनाथबिंब कारितं प्र. मेवानगरे श्रीसंघेन. प्रतिष्ठितं श्रीविजयहिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु ॥

(३१४)

७. परिकर पर:—

सं. २०१६ माघ शु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीपार्श्वनाथ परिकरं प्र. वि. हिमाचल सूरिभिः श्री

(३१५)

८. परिकर मूर्त्तियो पर:—

सं. २०१६ माघ शु १४ गुरु पुष्य योगे श्रीपार्श्वनाथस्येदं परिकरं तखतगढ़ वा. जवानमल सांकलचन्द भुरमल रामचन्देन कारितं प्रतिष्ठितं मेवानगरे श्रीसघेन, प्रतिष्ठितं आचार्य विजयहिमाचलसूरिभिः कल्याणमस्तु शिल्पज्ञं सरेमल चाणोद श्री।

(३१६)

९. श्री पार्श्वनाथ सपरिकर मूर्त्ति पर:—

सं. २०१६ माघ शु १४ तिथौ गुरु पुष्य योगे तखतगढ़ वास्तव्य जवानमल सांकलचन्द भूरमल रामचन्द पुत्र पौत्रादि सहिते: श्रीपार्श्वनाथ परिकर सहितं बिम्बं कारितं प्र. मेवानगरे श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं प्र. आचार्य विजयहिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु।

(३१७)

१०. परिकर पट :–

सं. २०१६ माघ शु. १४ गुरु पुष्प योगे श्रीपार्श्वनाथ परिकरं प्र. वि. हिमाचलसूरिभिः श्रीः

(३१८)

११. परिकर मूर्तियों पर :—

सं. २०१६ माघ शु. १४ गुरु पुष्य योगे श्री पार्श्वनाथेदं परिकरं वेलूर वास्तव्य जवानमल गणेशमलेन कारितं प्रतिष्ठितं मेवानगरे श्री संघेन प्रतिष्ठितं आचार्य विजयहिमाचलसूरिभिः कल्याणमस्तु शिल्पज्ञ सरेमल सोमजी चाणोद (राजस्थान)

(३१९)

१२. शांतिनाथ पंचतीर्थी :

रोहिड़ावाला श्री शिवगंज निवासी (राज.) पोरवाल वजरीय परमार गोत्रिय ज्ञातीमा श्रीचुन्नीलालजी ध. प. कंकुबाई सुपुत्र श्री-देवीचन्दजी तेमनी ध. प. बगसीबाई ना पुत्र श्री अनराज सम्पतराज सरदारमल कन्हैयालाल आदि परिवारे श्रीशान्तिनाथ पंच तीर्थी भरावी प्रतिष्टा पू. आ. श्रीविजय जिनेन्द्रसूरिजी महाराजे शिवगंज मां करावी स्वस्ति श्री २४९९ वीराब्दे सं. २०२९ वि. वर्ष मार्ग सुद १० ता. १५-१२-१९७२ शुक्रवार

श्रीपार्श्वनाथ मन्दिर गर्भ गृह (१)

(३२०)

१. ।। सं. १८६१ माघ शुक्ल ५ श्रीमाल गोत्र श्रीराम............ श्रीरीषभदेवजी

(३२१)

२. शिलापट्ट प्रशस्तिः—

।। सवत् १८६४ वर्षे माघ वदि ५ सूर्जवासरे श्रीवृहत खरतरगच्छे सकल भट्टारक सिरोमणि जंगम युगप्रधानम। श्री श्री १०८ श्री श्री श्रीजिन हर्ष सूरिजी सूरीश्वरराज श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथजी श्रीमहावीर जी सकल श्रीसघ सहितेन श्रीपाताल चैत्य नौतन कारापित प्रतिष्ठितं ।वा। जराज लिपिकृतं देहरारी दरोगाई सुप्रसादति सानक पंच दत। श्री राठौड़ वंशे राज श्रीजैसिंगदेजी विजै राज्ये। सूत्रधार गजधर सम्भू कृतः जोध हरदेवाजी रो बेटो ।

(३२२)

३. यक्षमूर्तिः—

स. १९९१ माघ शु. १३ दिन।

(३२३)

४. देवीमूर्ति:—

सं. १६६१ माघ शु. १३ दिने।

(३२४)

५. आदिनाथ:—

स्वस्ति श्रीमहेसाणानगरे वि. सं. २०२८ वर्षे वैशाख सु. ६ दिन श्रीआदिनाथबिंब म. हरिचन्द सुपुत्र रघुनाथ सुपुत्र कल्याणजी सुपत्नी लीलावन्त्या कारितं प्रतिष्ठितं च तपा. आ. श्रीकैलाशसागर सूरिणा।

(३२५)

६. सुपार्श्वनाथ:—

श्रीमहेसाणानगरे श्रीवीर सं. २४६८ वर्षे वैशाख सु. ६ दिने श्रीसुपार्श्वनाथ जिनबिंब शेरगढ़ नि. चौपड़ा पुखराज सुपुत्र संपतमलेन कारितं प्रतिष्ठित च. तपा. आ. कैलाससागर सूरिणा ॥

(३२६)

७. महावीर:—

स्वस्ति श्रीमहेसाणानगरे २०२८ वर्षे वैशाख सुद ६ दिन श्रीमहावीर स्वामी जिनबिंब रसिकलाल सुपुत्र देवेन्द्र श्रेयोर्थं कारितं च तपा. आ. श्रीकैलाससागर सूरिणा ॥

श्री पार्श्वनाथ मन्दिर गर्भगृह (२)

(३२७)

१. शिलापट्ट प्रशस्ति:—

॥ उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजयराज्ये ॥

॥६०॥ संवत १६ आषाढ़ादि ६७ वर्षे भाद्रप शुक्लपक्षे श्री नवमी दिने शुक्रवासरे श्रीवीरमपुरे श्रीपारसनाथ श्रीमहावीर भूमिगृहं

श्रीपल्लिवालगच्छे भट्टारिक श्रीयशदेवसूरि विजयराज्ये, राउल श्रीतेजसीजी विजयराज्ये कारितं श्रीसंघेन पण्डित श्रीसुमतिशेखरेण लिपिकृत। सूत्रधार दामा तत्पुत्र मनाधना वरजांगनेकृतम ॥ भ्रातीज सोमा मेघा कला पुत्र कल्याण ॥ भाणेज नासण। श्रीपारसनाथ श्रीमहावीर श्रीरक्षा शुभं भवतु : ॥ सू. गजधर

(३२८)

२. सुपार्श्वनाथ:—

सं. १८८० माघ सुदि ५ दिन गुरो..........

(३२६)

३. शान्तिनाथः—

सं. १६५५ माघ शु............

(३३०)

४. धर्मनाथः—

सं. १६५५ फा. ५ गुरौ श्रीधर्मनाथ जिनबिम्ब प्र. वृ. ख. भ श्रीजिनमुक्तिसूरिभिः—

(३३१)

५. महावीरः—

सं. १६५५ फागुण वदि ५ प्रतिष्ठितं राजेन्द्रसूरिभिः सियाणासंघेन बिम्ब कारितं सौधर्म तपागच्छे प्र. जसरूपजीतेन आहोर ।

(३३२)

६. संभवनाथः—

सं. १६६१ मा. शु. १३ श्रीसंभव बि. का..........

(३३३)

७. सुमतिनाथः—

सं. १६६१ मा. शु. १३ सुमतिबिंब का. श्रीसंघेन मेवानगरे

(३३४)

८. सुपार्श्वनाथः—

सं. १६६१ मा. शु. १३ सुपार्श्व बि. का. श्रीसंघेन—

(३३५)

६. चन्द्रप्रभः—

।। स. १६६१ माघ सुदि १३ दिने श्रीचन्द्रप्रभुजीबिम्ब कारापितं श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरजी के संतानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी महाराज के पंन्यास श्रीहिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे । श्रीरस्तु ।।

(३३६)

१०. श्रेयांसनाथः—

।। सवत १६६१ माघ सुदि १३ दिन श्रीश्रेयांसस्वामीबिम्ब कारापितं श्रीसघेन प्रतिष्टितं जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरजी के सन्तानीय । अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी महाराज के पन्यास श्रीहिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे । श्रीरस्तु ।।

(३३७)

११. शांतिनाथः—

॥ संवत १९९१ माघ शुक्ल १३ दिने श्रीशान्तिनाथबिम्ब कारापितं श्रीसंघेन जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरजी के सन्तानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी मा. प. प्र. श्रीहिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे। श्रीरस्तु।

(३३८)

१२. चन्द्रप्रभः—

स्वस्ति श्रीमहेसाणानगरे वि. सं. २०२८ वर्षे वैशाख सु. ६ दिन श्रीचन्द्रप्रभबिम्ब....करसन बेनश्रेयार्थं ..

(३३९)

१३. पार्श्वयक्ष—

श्रीमहेसाणानगरे श्रीवीर सं. २४९८ वर्षे वैशाख सुद ६ दिन श्रीपार्श्वयक्षबिम्ब ...सागरमल सुपुत्र रूपचन्देन कारितं प्रतिष्ठितं आ. कैलाससागरसूरिणा।

(३४०)

१४. पद्मावती:—

श्रीमहेसाणानगरे श्रीवीर सं. २४९८ वर्षे वैशाख सुद ६ दिन श्री-पद्मावतीदेवीबिंब ...

(३४१)

१५. मणिभद्रः—

श्रीमहेसाणानगरे श्रीवीर सं. २४९८ वर्षे वैशाख सु. ६ दिन श्री-मणिभद्रबिम्ब शेरगढ़ निवासी मिश्रीमल सुपुत्र भूरामलेन कारितं प्रति-ष्ठितं च. आ. कैलाससागरसूरिणा।

(३४२)

१६. श्रीप्रासाददेवी:—

श्रीमेहेसाणानगरे श्रीवीर सं. २४९८ वर्षे वैशाख सुद ६ दिन श्री-प्रासाददेवीबिम्ब....... प्रतिष्ठितं आ. कैलाससागरसूरिणा।

श्यामला पार्श्वनाथ मन्दिर

(३४३)

१. सरस्वती मूर्ति, पीत पाषाण:—

॥ संवत १६८१ वर्षे प्रथम चैत वदि ५ दिने गुरुवारे स्वातिनक्षत्रे तद्दिने प्रतिष्ठितं ॥ सांघीदास कारितं सूत्रकल्याण रुचरा

(३४४)

२. सुपार्श्वनाथ:—

मीती बसा. सुद ३ संमत १७ छासटा के रा........प्रणमति

(३४५)

३. शिलापट्ट प्रशस्ति:—

श्रीचक्रेश्वरिजीये नमः ।। सं. १९९१ वर्ष माघ सु. १३ मंदबासरे तिष्य ऋक्षे श्रीमेवानगरे श्रीनाकोड़ा पार्श्वनाथचैत्ये दक्षिणभागे शाल और छत्री अजनशालाका प्रतिष्ठा समये प्रतिष्ठितं पूज्य वयोवृद्धानुयोगाचार्यदेव श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्रीहितविजयजी महाराज के पट्टालंकार अनुयोगाचार्य श्री श्री श्रीहिम्मतविजयेन गुरुभक्त्यर्थे कारितं शा. कपूरचन्द हजारीमल भीखचन्द ऋषभदास सोनमल देवीचन्द सरेमल बाबुलाल गुलाबचन्द सिरदारमल लालचन्द मोहनलाल बेटा पोता हुक्माजी रा की तर्फ से मोटावाड़ा वाला मु. वरद रा उपरोक्त तीर्थोद्धारिका साध्वीजी सुन्दर श्रीजी के सदुपदेश से स्वश्रेयार्थे कारितं गजधर सोमपुरा सूत्रधार कीस्तुरचन्द दीपचन्द सिरेमल बेटा पोता भगवानजी ।मु। चाणोद ।

(३४६)

४. आदिनाथ:—

सं १९९१ माघ शु, १३ दिने श्रीऋषभजिनबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्र. जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरिश्वरजी के सन्तानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी ....

(३४७)

५. आदिनाथजी:—

।। सं. १९९१ रा माघ शुक्ल १३ दिने श्रीऋषभदेवजीबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्र. जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरिश्वरजी के सन्तानिया अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी मा. के शिष्य पन्यास श्रीहिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे ।

(३४८)

६. अजितनाथ:—

सं. १९९१ माघ शु. १३ दिने श्रीअजितनाथजिनबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्र. जगद्गुरुदेव श्रीमदविजयहीरसूरिश्वरजी के सन्ता नीया अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी..........

(३४९)

७. सुमतिनाथ:—

सं. १९९१ माघ शु. १३ श्रीसुमतिनाथबिंब कारापितं सा. पनालालजी असताजी मु. गोदणवाला की तरफ सु. थापितं जगतगुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरिश्वरजी के संतानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी के प. श्रीहिम्मतविजय।

(३५०)

८. पद्मप्रभ:—

॥ सं, १९९१ माघ शु. १३ दिने श्रीपदमप्रभुजीबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्र. जगदगुरुदेव श्रीमद्विजय हीरसूरिश्वरजी के सन्तानीया अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी मा. के पं. श्रीहिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे श्रीरस्तु।

(३५१)

९. पद्मप्रभ:—

॥ सं. १९९१ मा. शु. १३ दिने श्री पदमप्रभुजीबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्र. जगदगुरुदेव श्रीमद्विजय हीरसूरिश्वरजी के सन्तानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी म ....

(३५२)

१०. सुपार्श्वनाथ:—

सं. १९९१ मा. शु. १३ श्रीसुपार्श्वनाथबिंब कारापितं सा. पनालालजी असताजी मु. गोदणवाला की तरफ सु थापीतं जगदगुरुदेव.......

(३५३)

११. शांतिनाथ:—

सं. १९९१ माघ शु. १३ दिने श्रीशांतिनाथजिनबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्र. जगदगुरुदेव श्रीमदविजय हीरसूरिश्वरजी के सन्तानीया अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी म. के प. हिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे श्रीरस्तु।

(३५४)

१२. शान्तिनाथ:—

सं. १९९१ माघ सु. १३ दिने श्रीशान्तिनाथबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं प. हिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे

(३५५)

१३. पार्श्वनाथ:—

सं. १९९१ माघ सु. १३ श्रीपारश्वनाथजीबिंब सा. पनालालजी

असताजी सू. गोदणवाला की तरफ सु. थापित जगदगुरुदेव श्रीमद्हीर-सूरीश्वरजी के सन्तानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी के शिष्य हिम्मत-विजयेन श्रीमेवानगरे

(३५६)

१४. पार्श्वनाथ–

।।सं. १९९१ रा माघ रा शुक्ल १३ दिने श्रीपारश्वनाथजीबिम्ब कारा-पितं श्रीसघेन प्र. जगदगुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरजी के सन्तानीया अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी मा. के प. श्रीहिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे श्रीरस्तु ।

(३५७)

१५. चक्रेश्वरीदेवी–

।। सं. १९९१ माघ शु १३ दिने श्रीचक्रेसरीजो की मूर्त्ति श्रीवलद रा वास्तव्य शा. मनरूपजी हुक्माजी वालों की तरफ ने कारापिता प्रतिष्ठिता अनुयोगाचार्य श्रीमद्हितविजयजीमहाराज के शिष्य पन्यासजी श्रीहिम्मत-विजयेन स्व-पर-कल्याणार्थे श्रीमेवानगरे श्रीरस्तु ।

(३५८)

१६. पद्मावतीदेवी–

।।सं १९९१ माघ शु. १३ दिने श्रीपद्मावती वलदरा वास्तव्य शा. मनरूपजी हुक्माजी वालों की तरफ से कारापिता प्रतिष्ठिता अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी म. के शिष्य पन्यास हिम्मतविजयेन स्व-पर-हितार्थं श्रीमेवानगरे ।

(३५९)

१७. हितविजयः—

।। सं. १९९१ माघ शु. १३ दिने श्रीमद् प्राचीन अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी महाराज की मूर्त्ति कारापितं मलादर वास्तव्य शा. नोपोजी तथा गुड़ा वास्तव्य शा. अचलाजी की तर्फ से दर्शनार्थं प्रतिष्ठितं, आपका ही शिष्य हिम्मतविजयेन गुरुभक्त्यर्थे स्थापितं ।। श्रीमेवानगरे श्रीरस्तु ।।

(३६०)

१८. स्वरूप श्रीपादुका:—

।। सवत १९९१ रा माघ शु. १३ शनिवारे गुरणीजी स्वरूपश्रीजी चरण-पादुका साध्वी सुन्दरश्री स्वपरदर्शनार्थं कारापितं तपागच्छाधिप अनुयोगाचार्य श्रीमद् स्वर्गस्थ गुरुदेव पं. हितविजजी महाराज के शिष्य श्री पं. हिम्मतविजयेन प्रतिष्ठित मेवानगरे लि. पं. चतुरसागर

(३६१)

१९. सणगारश्रीपादुका:--

संवत १९९१ माघ शुक्ल १३ शनिवारे गुरुणीजी श्रीसणगार श्रीजी चर्ण-पादुका साध्वी सुन्दरश्री स्व.परदर्शनार्थं करापितं तपागच्छाधिप अनुयोगाचार्य श्रीमद् स्वर्गस्थ गुरुदेव श्री पं. हितविजयजी महाराज के शिष्य पं. हिम्मतविजयेन प्रतिष्ठितं श्रीमेवानगरे लि. पं. चतुरसागर पीपाड़ निवासी।

(३६२)

२०. सुन्दरश्री मूर्त्तिः--

।। सं. १९९६ कार्तिक कृष्ण पक्षे ८ दिने गुरुपुष्ययोगे तीर्थोद्धारक साध्वी श्रीसुन्दर श्रीजी महाराज की मूर्त्ति स्थापित।।

(३६३)

२१. सुन्दरश्री की छत्री परः--

श्री श्री श्री १००८ श्रीहितविजयजी महाराज के समुदाय की स्वर्गस्थ स्थविरा साध्वीजी श्रीसणगार श्रीजी की सुशिष्या स्वर्गीय सुशीला प्रवर्तिनी साध्वीजी श्रीसुन्दर श्रीजी ने महान परिश्रम द्वारा अनेका अनेक भविजनों को सदुपदेश देकर इस महान प्राचीन पवित्र तीर्थ का पुनरुद्धार कराया है। विशेष यह है कि उक्त सदगुरुदेव महाराज के शिष्य रत्न प्रतिष्ठा-

अंजनशलाकादि विविध क्रिया-कुशल प्रवर श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्रीश्री आचार्य महाराज श्री—

हेमाचलसूरीजी महाराज और उक्त साध्वीजी श्रीमाणक्य श्रीजी तथैववत शिष्या साध्वी—

जी श्रीप्रसन्न श्रीजी के शिष्या करणश्री भुवनश्री आदि संवत १९९६ सु.—

इस प्राचीन पवित्र तीर्थ की आज दिन तक देख-रेख करते हैं लेख सं. २०११ मिति मगसर ७

(३६४)

२२. सुमतिनाथ:--

। २०१६ माघ सु. १४ गुरु-पुष्ययोगे श्रीसुमतिनाथबिम्ब पुण्यपतन, शिवाजीनगर वा. सघवी केसरीमल तत्पत्नी मगीदेवी तत्पुत्र सूरजमले लीलादेवीपत्नीसहितेन कारित प्रति. मेवानगरस्य श्रीनाकोड़ातीर्थे

श्रीसंघेन । प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभिः ।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु । शिवं भवतुः ।।

(३६५)

२३. वासुपूज्यः—

।। स. २०१६ माघ शु १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीवासूपूज्य बिम्ब पुण्यपतन शिवाजीनगरे वा. संघवी केमरोमल तत्पत्नी मगीदेवी तत्पुत्र सूरजमले लीलादेवीपत्नीसहितेन कारितं प्रतिष्ठितं मेवानगरस्य श्रीनाकोड़ातीर्थे श्रीसंघेन । प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभिः ।। श्रीरस्तु।। कल्याणमस्तु ।।

(३६६)

२४. वासुपूज्यः—

।। सं २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीवासुपूज्यबिम्ब मेवानगरे श्रीसंघेन कारापितं प्रतिष्ठितं आचार्यदेव वि. हिमाचलसूरिभिः शुभमस्तु

(३६७)

२५. कुन्थुनाथः—

।। सं. २०१६ माघमासे शुक्लपक्षे १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीकुन्थुनाथ-बिम्ब पुण्यपतन शिवाजीनगरे वा. संघवी केसरीमल तत्पत्नी मगीदेवी तत्पुत्र सूरजमले लीलादेवीपत्नीसहितेन कारितं प्रतिष्ठा मेवानगरस्य श्रीनाकोड़ा तीर्थे श्रीसंघेन । प्रतिष्टितं विजयहिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।। शिवं भवतुः ।।

(३६८)

२६. कुन्थुनाथ :—

।। सं. २०१६ माघ शु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीकुन्थुनाथबिम्ब पुण्यपतन शिवाजीनगरे वा. संघवी केसरीमल तत्पत्नी मगीदेवी तत्पुत्र सूरजमले लीलादेवीपत्नीसहितंन कारितं प्रतिष्ठा मेवानगरस्थ श्रो-सघेन । प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभिः ।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।। शिवं भवतु ।

(३६९)

२७. मुनिसुब्रतस्वामीः—

।। सं. २०१६ माघ शु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीमुनिसुव्रतस्वामी बिम्ब मेवानगरे श्रोसंघेन कारापितं प्रतिष्ठितं आचार्यदेव विजय-हिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु।।

(३७०)

२८ श्यामला पार्श्वनाथ :—

सं २०१६ माघ सु १४ तिथौ गुरुपुष्ययोगे सप्तफणान्वितं श्री-पार्श्वनाथप्रतिबिम्बं मेवानगरे श्रीसंघेन कारितं प्रा. शान्ति- लक्ष्मी-भव्य-मानक- विद्याविजयेन सुछत्रैःसह हितान्तेवासी-आचार्यदेवविजय हिमाचलसूरिभिः । कल्याणमस्तु ।

(३७१)

२९. श्यामला पार्श्वनाथ छत्री पर :—

सं. २०१६ गुरुपुष्ययोगे श्रीश्यामलापार्श्वनाथबिम्ब मेवानगरे प्रतिष्ठितं आचार्यदेव-विजयहिमाचलसूरिभिः

(३७२)

३०. सरस्वती:—

ॐ श्रीसरस्वतिदेव्यो नमः ।

स. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्पयोगे श्रीसरस्वती-मूर्ति कारापितं प्रतिष्ठापित च मेवानगरे श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं विजयहिमाचल-सूरिभिः श्रीरस्तु । नामस्ते शारदादेवी कश्मीरप्रतिवासिनी त्वामहं प्रार्थये । माता विद्यादानं प्रदेहिम् । विद्यानन्दविजय श्रीरस्तु श्री ।।

(३७२)

३१. सुमतिनाथ :—

श्री महेसाणानगरे श्रीवीर सं. २४९८वर्षे वैशाख सु ६ दिन श्री-सुमतिजिनबिम्ब शेरगढ़ नि. चौथमल सुपुत्र टाणचन्देन कारित प्रतिष्ठितं च तपा. आ. कैलाशसागरसूरिणा ।।

(३७४)

३२. शान्तिनाथ :—

स्वस्ति श्र महेसाणानगरे वि. सं. २०२८ वर्षे बैशाख सुद ६ दिन श्री शांतिनाथजिनबिम्ब भावनगर नि. मगनलाल सुपुत्र रामचन्द्र सुपत्नी चन्दनलक्ष्म्या कारितं प्रतिष्ठितं च तपा. आ. श्रीकैलाससागर-सूरिणा ।

पंचतीर्थी मन्दिर

(३७५)

१. पार्श्वनाथ-अग्रभाग:-

संवत् १५०४ वर्षे वैशाख सुदि ७ छाजहड़गोत्रे श्रीपार्श्वनाथबिंब मह कुन्तपालेन कारितं ।।

पृष्ठ भाग लेख:-

।।६०।। संवत १५०४ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे श्रीखेड़भूम्यां ।। श्री-महेवास्थाने ।। श्रीग्रोसवंशे–महं लखमा पुत्र महं. वयरा पुत्र महं तील्हा भार्या गोइणि पुत्र ४ सं. राजसिंह मह. नरा महं ठाकुरसी–

–महं नरा भार्या पेमलदेव्या पुत्र महं. कुन्तपाल भार्या कश्मीरदे पुत्र महं गुणदत्त महं श्रीकुन्तपालेन आत्मपुण्यार्थे कारिता ।। प्रतिष्ठितां श्रीपल्लिकीयगच्छे श्रीनन्नाचार्यसन्ताने ।

–श्रीशांतिसूरि तत्पट्टे श्रीयशोदेवसूरि ।। श्रीनन्नसूरि श्रीउद्योतन-सूरि ...... पट्टालंकारश्रीशांतिसूरि तत्पट्टे पूज्य श्रीयशोदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितम । सुभं भवतु .... महं चोला सुखा । श्रीरस्तु ....सूत्र महं रामदो सुखाः समस्तदोषास्तु समाप्तं ....

(३७६)

२. शान्तिनाथ अग्रभाग-शान्ति देवदत्त:—

पृष्ठ भाग

सं- १५१३ वर्षे माघ मासे... ...मा. प्रीमलदे पुत्र सा. देवदत्तेन भा. दे ... ...माई पुत्रो-पुत्र-सकुटुम्ब ......तपा. श्रीसोमसुन्दरसूरि–शिष्य श्री-लक्ष्मीसागरसूरिभिः ।।

(३७७)

३. महावीर:—

श्रीमहावीर बिंब श्रीछाजहड़ गोत्रे शुभं भवतु ।।

(३७८)

४. आदिनाथ मूलनायक:—

सं. १६६१ रा माघ सुद १३ दिने आदिनाथबिंब कारापितं श्रीसंघेन पू. जगद्गुरुदेव श्रीमदविजयहीरसूरीश्वरजी के सन्तानीय । अनुयोगा-चार्य श्रीहितविजयजी म. के प. पं. श्रीहिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे ।

(३७९)

५. वेदी पर शिलालेख :—

श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथपंचतीर्थमन्दिरं श्रीनाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रत्यक्षाधिष्ठायकस्य चरणकमले किंचितभक्तेन सप्रणतिपुरशरं समर्पित प्रतिष्ठापितं मेवानगरस्थ नाकोड़ातीर्थे श्रीसंघेन, प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभिः संवत २०१६ वर्षे ६२०० रूप्यकानि देवालय निर्मितं ।।

(३८०)

६. नेमिनाथ :—

।। सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीनेमिनाथबिम्बं प्र. मेवानगरस्थ श्रीनाकोड़ातीर्थ श्रीसंघेन । प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभि(।। श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । शिवं भवतु :

(३८१)

७. सिद्धाचल पट्ट :—

विक्रम संवत २०१८ के मगसर वदि ७ से इस तीर्थस्थान पर पूज्य अनेक संस्थाओं के संस्थापक विश्ववंद्य जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्रीमज्जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब के शिष्यरत्न व्याख्यान वाचस्पति शासनप्रभावक श्री १००८ श्रीकांतिसागरजी महाराज एवं व्याकरण न्यायतीर्थ साहित्यशास्त्री मुनिराज श्रीदर्शनसागरजी महाराज के सानिध्य में उपध्यानतप शुरु होकर पोष सुदी १४ को माल उत्सव के उपलक्ष में उपध्यान तपस्वीयों की ओर से यह पट बनवाया गया ।

पंचतीर्थी मन्दिर की आलमारी में

(३८२)

१. वासुपूज्य:—

।।सं. १६८१ वर्ष फा. शु. १० बु. । समरथ वरधमान । वासुपूज्य कडुआमती ।

(३८३)

२. पार्श्वनाथ:—

।। सं. १७१६ वर्षे पंचोली कृष्णा भार्या सरखमादे श्रीपार्श्वनाथबिम्ब ।

(३८४)

३. आदिनाथ:—

।। सं. १७१८ वर्षे सा. रामजीसुत डोसा आदिनाथबिम्ब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयगच्छे कल्याणसागरसूरिसुमतिसागरसूरिभिः पुण्यार्थे श्री।

(३८५)

४. अष्टमंगल:—

सं. १६६१ शा. १८५६ मार्ग शुक्ल १३ दिने मेवानगरे

(३८६)

५ अष्टमंगल:-

।।सं. २०१६ माघ शु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीअष्टमंगलपाट श्रीमेवानगरे नाकोड़ातीर्थं श्रीसंघेन कारि. प्र. आचार्यदेव विजयहिमाचलसूरिभि: ।

(३८७)

६. अजितनाथ-चतुर्विंशतिका:-

वि. सं. २०२८ ज्येष्ठ शु. ४ भृगु. इ ं अजितनाथचतुर्विंशतिका घाणेराव वा. गुदेचागोत्रीय केसरीमलस्य पुत्र ओटरमलेन स्वमातु पानी देव्या: स्मृतौ कारिता प्ररिष्ठापिता च सीलदर संघेन प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभि: लि. विद्यानन्दविजय श्रीरस्तु ।

(३८८)

७. पार्श्वनाथ:—

श्रीधोरीमना रा वासी रांका रोडीया जोधराज प्रतापमलजी की तरफ से उजमणानीमिते विजयहिमाचलसूरिभि: वि. सं. २०२८ ज्येष्ठ शु. ४ भृगु.

(३८९)

८. अष्टमंगल:-

वि. सं. २०२८ ज्ये. शु. ४ भृगु. इयं श्रीअष्टमंगलपट्टिका घाणेराव वा. गुन्देचागोत्रीय केसरीमलस्य पुत्र ओटरमलेन (वर्त्तमान विद्यानन्दविजय:) स्व- मातु पानीदेव्या: स्मृतौ कारिता प्रतिष्ठापितं च सीलदरसंघेन प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभि: लि. संपतविजयश्रीरस्तु ।

(३९०)

९. अष्टमंगल:—

वि. सं. २०२८ ज्ये. शु. ४ भृगु इदं अष्टमंगल धोरीमना रा वासो रांका रोडीया जोधराज प्रतापमलजी तरफ से उजमणानमित्त भार्या मीराबाई तरफ थी उजवणानिमत्ते का. भेंट प्र. सिलदरसंघेन प्र. वि. हिमाचलसूरिभि: सीलदरनगरे श्रीरस्तु लि. लक्ष्मीविजय ।

(३९१)

१०. महावीर-चतुर्विंशतिका:—

दोहिड़ावाला श्रीशिवगंजनिवासी (राज.) पोरवाल जाजरिया परमारगोत्रीया ज्ञातिया श्रीचुन्नीलालजी ध. प. कंकुबाई सुपुत्र श्रीदेवी-

चन्द तेमनी ध प बगसोबाई ना पुत्र श्रीअनराज संपतराज सरदारमल कन्हैयालाल आदि परिवारे श्रीमहावीरस्वामीजी बि. का चौवीशी प्रतिष्ठा पू. आ. श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिजी महाराजे शिवगंज मां करावी । स्वस्ति-श्री २४९९ वीराब्दे २०२९ वि. वर्षे मार्ग सुद १० शुक्रवार तारीख १५ १२-१९७२

(३९२)

११. अष्टमंगल:—

रोहिडावाला श्रीशिवगंजनिवासी (राज) पोरवाल जाजरिया परमार गोत्रीया ज्ञातीया श्रीचुन्नीलाल ध. प ककुबाई ना पुत्र श्रीदेवीचन्द तेमनी ध. प. बगसीबाई ना पुत्र श्रीअनराज संपतराज सरदारमल कन्हैयालाल आदि परिवारे श्रीअष्टमगल भरावी प्रतिष्ठा पू आ. श्रीविजय जिनेन्द्रसूरिजो महाराजे शिवगजमां करावो स्वस्तिश्री २४९९ वीराब्दे २०२९ वि. वर्षे मार्ग सुद १० शुक्रवार ता. १५-१२-१९७२

(३९३)

१२. नवपद मन्त्र:-

वि. सं. २०३२ माघ सु. १४ शनौ पुष्ये इदं श्रीसिद्धयंत्रसादड़ी श्रीविकासंघेन का. प्र. वि. हिमाचलसूरिभिः बालोतरानगरे श्रीरस्तु ।

(३९४)

१३. अष्टमंगल:—

वि. स. २०३२ माघ सु. १४ शनौ पुष्ये इदं अष्टमंगल पाटली सादड़ी श्राविकासंघेन का. प्र. वि. हिमाचलसूरिभिः बालोतरानगरे श्रीरस्तु ।

केसरघर के पास की शाल

(३९५)

१. महावीर:—

श्रीखेड़ वर्द्धमानं नमामि

(३९६)

२. आदिनाथ:—

आदिनाथ हांपा कारितं-श्रीविजयसेनसूरिभिः प्रति. ।

(३९७)

३. श्रेयांसनाथ:—

।। सं. १९५५ फागुण वदि ५ गुरौ शेरगढ़वास्तव्य संघेन बिंब कारितं प्रतिष्ठा कृता भ. राजेन्द्रसूरिणा कारापिता.... ...

(३९८)

४. पार्श्वनाथ:—

।। सं. १९५५ फागुण वदि ५ गुरौ शेरगढ़वास्तव्य संघेनबिंब कारितं प्रतिष्ठा कृता भ. राजेन्द्रसूरिणा कारापिता जशरूपजी........

(३९९)

५. आदिनाथ:—

सं. १९९१ रा माघ सुद १३ दिने आदिनाथबिंब कारापितं श्रीसंघेन पू. जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरजी के सन्तानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी म. के प. पं. हिम्मतविजयेन श्रीमेवानगरे।

(४००)

६. पार्श्वनाथ:—

सं. १९९१ माघ सुद १३ दिन श्रीपारसनाथजीबिंब कारापितं श्रीसंघेन प्र. जगद्गुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरजी के सन्तानीय अनुयोगाचार्य श्रीहितविजयजी ....

(४०१)

७. पार्श्वनाथ:—

सं. २०१६ माघ सुद १४ तिथौ गुरुपुष्ययोगे श्रीपार्श्वनाथबिंब तखतगढ़ वा. प्राग्वाट संघवी ऋषभचन्द केशरीमल तत्पुत्र शांति सुनील नन्दकुमारादि माता उनीदेवी सह:... लि. मुमुक्षु भव्यानन्दविजयेन श्रीरस्तु।

(४०२)

८. पार्श्वनाथ:—

श्रीमहेसाणानगरे श्रीवीर सं. २४९८ वर्षे वैशाख सु. ६ दिन श्रीपार्श्वनाथ जिनबिंब शेरगढ़नि उदेचन्द सुपुत्र चुन्नीलालेन कारितं प्रतिष्ठितं च तपा. आ. कैलाससागरसूरिणा।

(४०३)

९. चन्द्रप्रभु:—

वि. सं. २०२९ माघ सुद १३ गुरो पुष्ये इदं चन्द्रप्रभबिंब कारा. श्रीसंघेन ....

(४०४)

१०. श्रेयांसनाथ:—

वि. सं. २०२९ माघ सु. १३ गुरौ पुष्ये इदं श्रीश्रेयांसनाथबिंब कारा. श्रीसंघेन ...

(४०५)

११. मुनि सुव्रतस्वामी:--

वि. स. २०२९ माघ सु १३ गुरौ पुष्ये इदं मुनिसुव्रतस्वामीबिंब.....

श्रीआदिनाथ मन्दिर

(४०६)

१. शांतिनाथ का उसग्गीया :—

संवत १२०३ वैसाख सुदि १२ श्रीवच्छक चैत्ये दा. सोलंकिक-वंशजै :

उद्धरण--वराह पेषुक: श्रीमतुपेसकीयगच्छ प्रतिष्ठितं श्री-सिद्धाचार्यणांगच्छे पापनसुत-जेसल-साढा-देल्हा-मातृमोहिणीसहित कारितं ।।

(४०७)

२. नेमिनाथ का उसग्गीय :--

संवत १२०३ वैशाख सुदि १२ श्रीवच्छकचैत्ये सोलकिकवंशजै सा. उद्धरण--बारहपेष्षुकै श्रीसंडेरकीमगच्छे श्रीशान्तिभट्टाचार्य-सूरणिां-वासुदेव सह-केशेन सबंश्रेपोर्थं कारितं । जिणचन्द

(४०८)

३. महावीर :—

सं. १५१३ वर्षे माघ सुदि

(४०९)

४. विमलनाथ परिकर (ऊपर के हिस्से में):-

स. १५२४ वर्षे ज्ये. शु. ६ वीरमपुरवासी उसवाल सा. बाहड़ चाहड़ चण्डा जेठा नामके: श्रीविमलनाथ परिकरं कारितं प्रतिष्ठितं श्री-सोमसुन्दरसूरि-शिष्य श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि:

(परिकर के नीचे के हिस्से पर)

सं. १५२४ वर्षे ज्येष्ठ सुद ६ ऊकेशवंशीय लिंगागोत्रे सा. चांपा भा. कुरांदे पु. सा. बाहड़ चाहड़ चण्डा-भा. कपूरदे पु सना दत्तपुत्र सा. देवराज लाखण हीरो दत्रीमा कुंरा मेघा आपा दवंमराजादि कुटुम्बयुतः श्रीविमलनाथ परिकरं कारित: प्रतिष्ठित श्रीतपागच्छे श्रीसोमसुन्दर सूरिशिष्य श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभि:

(४१०)

५. शिलापट्ट प्रशस्ति:--

॥ सं. १५६२ वर्षे आसु. सुदि १० दिन राउल श्रीवीरसिंघविजय-राज्ये श्रीविमलनाथप्रासादे।

श्रीतपागच्छाधिराज परमभट्टारिक श्रीश्रीश्रीहेमविमलसूरिशिष्य पं. लावण्यसमुद्रगणिनामुपदेशेन।

श्रीवीरमपुरनिवासी श्रीसकलसंघेन कारापिता।

नवचतुष्किता सूत्रधार हालाकेनकृतं चिरंनन्दतु॥

श्रीरस्तु॥ श्रीसकलसंघस्य:। सूत्रधार राउत भाइला करति॥

(४११)

६. शिलापट्ट प्रशस्ति:--

॥ संवत् १५६८ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिन गुरुपुष्ययोगे। राउल श्रीकुम्भकर्णविजयराज्ये

श्रीविमलनाथे प्रासादे श्रीतपागच्छनायकभट्टारकप्रभुश्रीश्रीश्री हेमविमलसूरिशिष्य पं. चारित्रसागरगणिनामुपदेशेन श्रीवीरमपुरवासि सकलश्रीसंघेन कारापितो रंगमण्डप: सूत्रधार हालाकेनकृत। चिरनन्दतु।श्रीरस्तु॥

(४१२)

७. शीतलनाथ:--

श्रीशीतलनाथबिं. का. श्रीमेरुप्रभसूरिभि:

(४१३)

८. आदिनाथ:—

स. १६०६ व. अ. कृ............

(४१४)

९. महावीर:—

स, १६३२........सुद ५... ....

(४१५)

१०. शिलापट्ट प्रशस्ति: —

॥ स. १६३७ वर्षे माह वदि ७ दिने। राउलश्रीमेघराजजीविजय-राज्ये। श्रीतपागच्छे श्रीगच्छाधिपतिभट्टारक श्रीश्री५हीरविजयसूरिविजय-राज्ये श्रीवीरमपुरिवास्तव्य श्रीसकलसघेन नवाउद्धार कारापितां॥ सूत्रधार घणसी पुत्र सूत्रधार राउतकेन कृतं श्रीरस्तु: शुभं भवतु। मूल गम्भारा थकी नवू उधार कीधा सकलसंघेन। सूत्रधार किसना।

(४१६)

११. अजितनाथ:—

।।सं. १९५१ मा. शु. ५ श्रीअजितजिनबिम्बस्य अंजनशलाका श्रीविजैक........रापिता ।

(४१७)

१२. आदिनाथ (श्याम पाषाण):-

सं. १९५८ माघ सित १३ गुरौ........श्रीऋषभदेवबिम्ब कारितं प्रतिष्ठितं भ. श्रीविजयराजेन्द्रसूरि ....

(४१८)

१३. शान्तिनाथ:-

सं. १९५८ माघ सित १३ सियाणावास्तव्य बालाभार्या मगनी बिंबकारितं प्रतिष्ठितं भ. राजेन्द्रसूरिभि:..........

(४१९)

१४. संभवनाथ:—

सं १९९१ मा. शु. १३ श्रीसंभवबिंब का. श्रीसंघेन प्र. हिम्मतविजयेन मेवानगरे ।

(४२०)

१५. सम्भवनाथ:—

सं. १९९१ मा. सु. १३ संभवबिंब का. श्रीसंघेन ।

(४२१)

१६. संभवनाथ:—

सं. १९९१ मा. सु. १३ दि. संभवबिं. का. श्रीसंघेन..........

(४२२)

१७. पार्श्वनाथ:—

सं १९९१ मा. सु. १३ दि. पार्श्वबिं. का. श्री.......

(४२३)

१८. सुविधिनाथ:—

सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरौ पुष्ययोगे श्रीसुविधिनाथबिंब मेवानगरे श्रीसंघेन कारापिता ....

गर्भगृह-आदिनाथ मन्दिर

(४२४)

१. शीतलनाथ:—

शीतल थाह

(४२५)

२. शांतिनाथ:—

शांति देवलदे

(४२६)

३. सं. १६५५ फा. व. ५ सिवाणावास्तव्य समस्तसंघेन बिंब-कारितं.......

पुण्डरीक गणधर की देहरी

१. पुण्डरीक गणधर देहरी के सभामण्डप की दीवार का लेख:—

(४२७)

।।६०।। संवत चन्द्रकला पक्ष वृषे मासे श्रीवणिके तिथौ च विशदे श्रीपचमीवासरे हस्तकि श्रीतपागच्छे हीरविजयपुण्यदयाचार्ये मुदा । १ प्रासादे विमलनाथे.......... कल्पद्रुम ।

रगद्रग विद्रंग चित्रकलित श्रीमण्डपोनूतन: श्रीमत्संघ कदम्बकाय-विदितो भूयात श्रिये सम्पदामुप चित्रित पुत्रिका परिधिना संशोभिते श्रीयुते ।।२।। सवत १६४७ वर्षे आषाढ़ वदि ८ दिने राउल श्रीवीरमदेवजी पाटे तपागच्छसघेन मण्डप: कारित: ।। सूत्रधार क्रिसनाकेनकृत ।। चेला शिवा लिखित । सूत्रधार सीमा पंचाईण ।। शुभं भवतु ।।

(४२८)

२. पुण्डरीकगणधर के पीछे की चौकी:—

संवत १६३७ वर्षे शाके १५३३ प्रवर्तमाने द्वितीय आषाढ़ सुदि ६ दिने शुक्रवारे—

उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रे राउल श्रीतेजसीजीविजयराज्ये श्रीविमल-नाथप्रासादे श्रीतपागच्छेभट्टारिक श्री ५श्रीविजयसेनसूरिविजयराज्ये आचार्य श्रीविजयदेवसूरिविजयराज्ये श्रीवीरमपुरवासि सकलश्रीसंघकारापितं शुभं भवतु ।।

सूत्रधार कृसना पंचाइणकेन कृतं । मुनिसामीदास लिखितं भवतु ।।

(४२९)

३. पुण्डरीक गणधर की देहरी भीतर की दीवार का लेख:—

। संवत १८६५ वर्षे फागुण वदि १३ रविवारे श्रीबृहत्खरतरगच्छे जंगन युगप्रधान सकल भट्टारिकशिरोमणि भट्टारिकजी श्रीश्री१०८श्री-जिनहरकसूरिजी—

सूरीश्वरेण सकलश्रीसंघेनसहितेन नालमण्डप नोतनं कारापितं ।।चैत्य सर्वेषु जीर्णोद्धार कारापिता लिखतं वा. । जयराज ।। सूत्रधारराम-चन्दजी-पुत्रढ़ालजीकृत वास जोधपुर ।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।।

(४३०)

४. सुविधिनाथ:-

।। स. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीसुविधिनाथबिंब मेवा-नगरे श्रीसघेन कारापितं प्रतिष्ठितं आचार्यदेव-विजयहिमाचलसूरिभि: श्रीरस्तु:

(४३१)

५. शान्तिनाथ:—

।। सं. २०१६ माघमासे शुक्लपक्षे १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीशान्ति-नाथबिम्ब मेवानगरे श्रीसंघेन कारापितं प्रतिष्ठितं आचार्यदेव विजयहिमा-चलसूरिभि: श्रीरस्तु ।

(४३२)

६. पुण्डरीक गणधर:—

। वि. सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ये श्रीपुण्डरीकगणधर-मूर्ति बलाणावास्तव्य प्राग्वाट श्रीभीकमचन्द चेनाजी ताराचन्द मूलचन्द चन्दन-मल माता चुनादेव्येसह श्रीपुण्डरीकगणधर प्रतिमेयं कारिता प्र. मेवा-नगरे श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं हितान्तेवासीविजयहिमाचलसूरिभि: श्रीरस्तु ।।

(४३३)

७. पुण्डरीकगणधर की छत्री:—

।।श्री।। श्रीपुण्डरीकगणधरेभ्यो नम: ।। माधेमासि सिते दलं ऋतु-वरं शम्भुप्रिय शुभतिथि माने मानसधारित प्रभुवरं श्रीमद्विजयहिम्मतम । मेवानाम सुनामधन्यनगरं सर्वेश्वरभासितं । पुण्डरीक गणनायक जिनवर देवं च संस्थापितम स. २०१६ माघ शुक्ल तिथौ गुरुपुष्ययोगे श्रीरस्तु ।

चौमुखजी की देहरी

(४३४)

१. आदिनाथ:—

।। समत् १५४३ रा वसख सुदी ३ वार गुरु ऋषभदेव... ...

(४३५)

२. महावीर:—

।। सं १९२८ शा. १७९३ माघ सुदि १३ गुरौ .....

(४३६)

३. सुमतिनाथः—

।। सं. १९५५ फागुण वद ५ गुरौ अगवरीनगरवास्तव्य प्राग्वाट-ज्ञा । वृ । केरा सुतो राजा वनाकेन बिंबकारितं प्रतिष्टितं भ. राजेन्द्रसूरिभिः प्र. का जशरूप जीतमलेन सुधर्म तपागच्छे आहोरनगरे ।

(४३७)

४. चन्द्रप्रभः—

सं. १९५५ व. । फाल्गुन कृष्ण ५ गुरौ अगवरीनगरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा । वृ. सा केरा सुतो राजा वनाकेन बिंबकारितं प्र. भ. राजेन्द्र-सूरिणा प्रति. कारापिता जशरूप-जीतमलाभ्यां सुधर्म तपागच्छे आहोर-नगरे :

(४३८)

५. मल्लिनाथः—

।। सं. १९५५ व. । फाल्गुन कृष्ण ५ गुरौ अगवरीवास्तव्य प्राग्वाट-ज्ञा । वृ । सा केरा सुतो राजा वनाकेन बिंबकारितं प्रतिष्ठितं । राजेन्द्र-सूरिणा प्रति. कारापिता जशरूप जीतमलाभ्यां सुधर्म तपागच्छे आहोर नगरे ।

(४३९)

६. पार्श्वनाथ-पादुकाः—

।। संवत १९९९ माघशुक्ला १० श्रीमंडवारीयावास्तव्य सा. खूमा सुत जेठा-डाहा-विनयचन्द्र कारापितांजनशलाका महो. जोधपुरनिवासी ओसवंशीय टाटीया सुत सिरदारमल माणकचंदेन श्रीपार्श्वनाथ-पादुकां-जनशलाकासह प्रतिष्ठा कारापिता कृता श्री श्री १००८ श्रीमद्विजय-राजेन्द्रसूरीश्वर शिष्य भ. श्रीधनचन्द्रसूरिभिः श्रीसौधर्म वृहत्तपागच्छे श्रेयते भवतु । श्री ।।

(४४०)

७. पार्श्वनाथः—

सं. १९९१ मा. शु. १३ दि. पार्श्वबिं. का.......

(४४१)

८. ब्रह्मयक्षः—

ॐ नमः सं. २००३ रा फाल्गुन कृष्ण ७ बुधे ....

(४४२)

९. वेरोश्यादेवी:—

ॐ नमः सं. २००३ रा फाल्गुण कृष्ण ७ बुधे अगवरीनगरे श्रीमल्लीनाथजिनचैत्ये वेरोश्यादेवी विजय आणंदसूरिगच्छे यति. पं. राजविजय प्रति.

(४४३)

१०. आदिनाथ:—

सं. २००५ माघ सु ५ जालोरवास्तव्य सा. छोगालाल पुत्रेण शा. हिम्मतमलेन पुत्र हर्षचन्द्रादिसहितेन श्रीआदिनाथबिंब कारितं मं- देवीचंद मिश्रीमलेन कारितं प्रतिष्ठायां पं. प्र. कल्याणविजयगणिना जाबालिपुरे।

(४४४)

११. अजितनाथ:—

सं. २००५ माघ सु. ५ जालोरवास्तव्य सा. छोगालाल पुत्रेण सा. हिम्मतमलेन पुत्र हर्षचन्द्रादिसहितेन श्रीअजितनाथबिंब कारितं मं देवीचन्द मिश्रीमलेन कारितं प्रतिष्टायां पं. प्र. कल्याणविजयगणिना जाबालिपुरे।

(४४५)

१२. शांतिनाथ:—

स. २००५ माघ सु. ५ जालोरवास्तव्य सा. छोगालाल पुत्रेण शा. हिम्मतमलेन पुत्र हर्षचन्द्रादिसहितेन श्रीशांतिनाथबिंब कारितं मं. देवीचन्द मिश्रीमलेन कारितं प्रतिष्ठायां पं. प्र. कल्याणविजयगणिना जाबालीपुरे।

(४४६)

१३. श्रेयांसनाथ :—

स. २००५ माघ सुद ५ जालोरवास्तव्य सा. छोगालाल पुत्रेण सा. हिम्मतमलेन पुत्र हर्षचन्द्रादिसहितेन श्रीश्रेयांसनाथबिम्ब कारित मं. देवीचन्द्र मिश्रीमलेन कारितं प्रतिष्ठायां पं. प्र. कल्याणविजयगणिना जाबालिनगरे

(४४७)

१४. चौमुख जी की छत्री पर :—

॥ श्री ॥ स. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीश्रीऋषभादि-चतुर्मुखदेवबिम्ब जालोरनिवासी हिम्मतमल सोगाजी देवप्रसादसहितं कारितं प्रतिष्ठा मेवानगरे श्रीसंघेन कारिता प्रतिष्ठितं आचार्यदेवविजय-हिमाचलसूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥ ले. लक्ष्मीविजय

(४४८)

१५. सुमतिनाथ :—

।। स. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीसुमतिनाथबिम्ब तखतगढ़ वा. हिमतमल हीराचन्द्रस्य पत्नी छोगीदेवी कारापितं प्र. मेवानगरे श्रीसघेन प. वि. हिमाचलसूरिभि:

(४४९)

१६. सुमतिनाथ :—

स. २०१६ माघ सु. १४ गुरु पुष्ययोगे श्रीसुमतिनाथबिम्ब पोमावा वा. रांकागोत्रीय राईचन्द...........

(४५०)

१७. सुपार्श्वनाथ :—

स. २०१६ मा. सु. १४ गुरुपुष्ययोगे ....का. प्र. मेवानगरे श्रीसघेन प्र. वि. हिमाचलसूरिभि:

(४५१)

१८. सुविधिनाथ :

।। सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरौ पुष्ययोगे श्रीसुविधिनाथबिम्ब मेवानगरे श्रीसघेंन कारापितं

(४५२)

१९. सुविधिनाथ :—

सं २०१६ माघ सु १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीसुविधिनाथबिम्ब पोमावा वा. रांका गोत्रीय राईचन्द...........का. प्र. मेवानगरे श्रीसंघेन प्र. वि. हिमाचलसूरिभि:

(४५३)

२०. वासुपूज्य :—

।। सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीवासुपूज्यबिम्ब तखतगढ़ वा. हिम्मतमल हीराचन्दस्य पत्नि छोगीदवी कारापित प्र. मेवानगरे श्रीसंघेन प्र. वि. हिमाचलसूरिभि: श्रीरस्तु :

(४५४)

२१. मुनिसुव्रत :—

।। सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीमुनिसुव्रतस्वामीबिम्ब मेवानगरे नाकोड़ातीर्थे श्रीजैनश्वेताम्बरसंघेन कारापितं प्रतिष्ठितं विजयहिमाचलसूरिभि: श्रीरस्तु ।

(४५५)

२२. पार्श्वनाथ :—

॥ सं. २०१६ मा. सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीपार्श्वनाथबिम्ब ?वानगरस्थ नाकोड़ातीर्थे श्रीजैनश्वेताम्बरसंघेन कारापितं प्रतिष्ठितं-बिजयहिमाचलसूरिभिः

चौमुखजी की देहरी की आलमारी

(४५६)

१. पार्श्वनाथ पंचतीर्थी:—

संवत १३१६ वर्षे माघ वदि ३ गुरौ श्रीयशोभद्रसूरि-सन्तान ऊदा पु. बोसरि वस्ता भा. कुंरासहितेन श्रीपार्श्वनाथबिंब प्रतिष्ठितं श्रीशालिभद्रसूरिभिः ॐ रीं

(४५७)

२. महावीर पंचतीर्थी:—

संवत १३२१ वर्षे माघ वदि ५ बुधे श्रे. कुंअरपाल भार्या पदमसिरि पु. जसकर्ण प्राणचन्द्रेण मातृ-पितृ-श्रेयोर्थं श्रीमहावीरबिंब कारितं प्र. सूरिभिः ॥

(४५८)

३. महावीर पंचतीर्थी:—

संवत १३४६ वर्षे वैशाख सु ५ श्रे. सहदेव भा. साजणि पु. महणसिंह पुत्र गज भा. सापू तिणिकाया श्रीमहावीरबिंब प्र. श्री त्रि. जयप्रभसूरिभिः

(४५९)

४. संभवनाथ पंचतीर्थी:—

संवत १४६४ वर्षे फागुण वदि ११ गुरौ उ. व्यव. कडूआ भा. कपूरदे पुत्र वीरम भा. विजलदे पित्रोः श्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंब कारितं वो. प्रतिष्ठितं श्रीधर्मचन्द्रसूरिभिः

(४६०)

५. चन्द्रप्रभ पंचतीर्थी:—

सं. १५०९ वर्षे वे. सुदि ७ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि हेमा भार्या मेचु सुत वीराकेन स्वपितृव्य श्रेष्ठि गेला पुण्यश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंब कारित प्रतिष्ठित श्रीसूरिभिः ॥ बड़ालम्बीवास्तव्य ।

(४६१)

६. पार्श्वनाथ पंचतीर्थी:—

।। संवत १६२१ वर्षे माघ सुद ७ गुरौ श्रीग्रंचलगच्छे पूज्यभट्टार्क श्रीरत्नसागरसूरीश्वराणामुपदेशात् श्रोकुंकणदेशे नरसि नाथा तथा संघ समस्तेन प्रतिष्ठितं श्रीपार्श्वनाथबिंब भरावितं ।।

आदिनाथ मंदिर की शाल में

(४६२)

१. पीतपरिकर की मूर्त्ति पर:—

।। सं. १५१८ वर्षे माह सुदि १० सोमे उपकेश ज्ञातीय वरहडीया-गोत्रे सा. अमर भा. ऊमादे पु. दुसल भा. दूषलदे पुत्र सा. खीमा भा. खेतलदे पु. सा. माडा सा. धर्मा तया माडा भा. माणिकदे तथा धर्मा भा. धरमलदे ...श्रीमहावीरपरिकत करित' प्रतिष्ठित'....

(४६३)

२. पीत परिकर की मूर्ति पर:

।। सं. १५१८ वर्षे माह सुदि १० सोमे उपकेशज्ञातीय वरहडीया-गोत्रे सा. अमर भा. ऊमादे पु. दुसल भा. दुषलदे पु. खीमा भा. खेतलदे पु. सा. माडा सा. धर्मा तथा माडा भा. माणिकदे तथा धर्मा भा. धरमलद

(४६४)

३. पार्श्वनाथ परिकर मूर्त्तिः—

सं. १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ सोमे। छाजहड़गोत्रे । मं. कुन्तपाल पुत्र गुणदत्तेन अन्य पुण्यार्थं । परिकरं ।। प्रतिष्ठितं श्रीपल्लीकीयगच्छे भ. श्रीउज्जोयणसूरिभिः मं. गुणदत्तेन ।

(४६५)

४. आदिनाथ पादुका:—

सं. २०१६ माघ सुद १४ गु. पु. योगे श्रीआदिनाथ चरणपादुका वादन-वाड़ी नि. भण्डारी नेमाजी तत्पुत्र लुभचन्दस्य पुत्र सागरमलेन कारापित । प्र. मेवानगरस्थ नाकोड़ातीर्थ श्री संघेन प्रतिष्ठापित विजयहिमाचल-सूरिभिः ।।कल्याणमस्तु।।

श्री शान्तिनाथ मन्दिर

(४६६)

१. नेमिनाथ का उसग्गीया :—

सुखड वेवल देल्हा वाछिगा
सुहड़ी रुपिणी वालदेवी जामुणी

(४६७)

उजोवण रासल सुमति श्रे. वीरा
देऊ हेमन्ती कावी जिनदेवा

(४६८)

३. कीर्तिरत्न सूरि-पादुका :—

।। संवत १५२५ वर्षे वैशाख वदि ५ दिन श्रीवीरमपुरे श्री-खरतरगच्छे श्री कीर्तिरत्न सूरीणां स्वर्गः तत्पादुके संखवालेचा गोत्रेसाः काजल पुत्र साह त्रिलोकसिंह खेतसिंह जिणदास गउडीदास कुसलाकेन भरापितै सं. १६३१ वर्षे मार्गशिर वदि ३ प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र-सूरिभि : ।।

(४६९)

४. रंगमण्डल के उपरः—

।। ६० ।। संवत १५८९ वर्षे कार्तिक वदि ८ दिन ।

(४७०)

४. शिलापट्ट प्रशस्तिः—

।। संवत १६....४ वर्षे भाद्रवा सुदि १२ सोमे राउल श्री मेघराज विजै राज्ये श्रीखरतरगच्छे जिनचन्द्रसूरिविजैराज्ये सूत्रधार जोधा सूत्रधार सामल सुरताण उदा सोजिग गोरा रूपा ईसर श्री थीपा । उजल

(४७१)

।। संवत १६१४ वर्षे श्रीवीरमपुरे ।। श्रीशान्तिनाथचैत्ये मार्गशीर्षमासे प्रथम द्वितीया दिने ।। श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरि विजय राज्ये ।। सश्रीक वीरमपुरे विधि चैत्यराजे । प्रोतुंगचंगशिखरे नुतदेवराजे ।

सोवर्ण वर्ण व पुषं सुविशुद्धपक्षे । श्रीशान्तितीर्थ प्रतिमाकृत शुद्ध पक्षं ।।१।।

।। अर्हतन्नमर्हत गतातन्तलतान्तभवत्या । श्रीशान्तिनामकमनन्तनितान्ति भक्त्या । श्रीविश्वसेनतनुज भजतात्मशक्या । सारंगलक्षणजिन स्मरतोत्तयुक्त्या ।। २ ।।

यस्यातीत भवेऽप्कारि महता शक्रस्तवामर्षि श्येनाकारभृता कपोत तनुभृद रक्षापरिक्षार्हत : भोक्ता यौगिक थोयिचक्रीपादवी साम्राज्यश्रिय: । स श्रीशान्तिजिनोऽस्तु शर्मिकनृणां दातात्म सम्पच्छ्रिय: ।। ३ ।।

श्रीशान्तिदेवीऽवतु देवदेवौ धर्मोपदिष्टा मुदयायिसेव: । नन्तास्ति यस्यादिमवर्णनामा राज्योपमास्तस्य सुभक्तिनामा ।।४।। श्रीधनराजोपाध्यायानामुपदेशेन पण्डित मुनिमेरू लिखितं ।। सूत्रधार जोधा रंगा गदा नरसिंगकेन कोरितानि काव्यानि चतुष्किका मूलमण्डपे ।। शुभ भूयात् ।। राउल श्रीमेघराजविजयराज्ये श्रीशान्तिनाथ नालिमण्डपौ निष्पन्नत: ।।

(४७२)

७. शिलापट्ट प्रशस्ति:—

।। ई० ।। ॐ नम: सिद्धं । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अ: क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ । मंगलमहेसरी देहि विद्या परमेसरी ।। सूत्रधार अजाम

.... भिन्नाक्षरों में........

।। सं. १६३८ वर्षे असाढ़ सुदि ८ दिने गुरुवारे श्रीसमस्तसंघेन उधार कारापिता शुभं भवतु ।

(४७३)

८. युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि-पादुका:—

।। संवत १६८४ वर्षे । वैसाख सुदि ८ । गुरौ । श्रीवृहतखरतराधीश युगप्रधान युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिश्वराणां पादुके । कारिते । कां । राघव । चांदा । सुरताण । जसवंत । कमलसी । भ्रातृव्य राजसीसहितै: । भट्टारकश्रीजिनराजसूरि विजयराज्ये । आ. श्रीजिनसागरसूरि योवराज्ये । प्र. श्रीधर्मनिधान महोपाध्याये: । श्रीवीरमपुर सकलसंघस्य शं स्यात । प्रणमति । वि. धर्मकीर्तिगणी: । सूत्रधार मेघाकेन ।।

(४७४)

६. पद्मप्रभु:—

।।स. १८८० । व । मार्ग सुदि ५ गुरौ । भ. श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभि: पद्मप्रभदेवबिंब प्रतिष्ठितं । श्रीवडगाम ना समस्तसंघ ....

(४७५)

१०. शांतिनाथ मूलनायक:—

।। सं. ।। १९१० रा शाके १७७५ रा प्रवर्त्तमाने माशोत्तममासे माघमासे धवलपक्षे ५ तिथौ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजाजी श्री-तखतसिहजी

कु । श्रीजसवन्तसिधजी विजयराज्ये श्रीपालीनगरे समस्तश्रीसंघ महामहोच्छवेनांजनसिलाकाकृतं ।।

जोधनगरे वास्तव्य श्रीग्रोसवंशे मुं । श्रीग्रखेचन्दजी तत्पुत्र मु. ।। श्रीलक्ष्मीचन्दजी तत्पुत्र मुं. ।। श्री ।।

मुकनचन्दजी धर्मानुरागेन महोछव कारापित श्रीमहेवापडगने श्रीविरमपुरनगरमध्ये संखलेचा माला सा. कारापित श्रीजिनालये श्री-शान्तिनाथविम्ब प्रतिष्ठितं जगदगुरु ड़िरुदधारक क. खरतरगच्छ भावहर्ष-गच्छेश । भ । श्रीजिनक्षमासूरिपट्टे । भ । श्रीजिनपद्मसूरिभि प्रतिष्टित सकल श्रेयोर्थम ।।

(४७६)

११. सुपार्श्वनाथ:—

।।सं. १९१० रा शाके १७७५ रा पवर्त्तमाने मासोत्तमासे माघ-मासे धवलपक्षे ५ तिथौ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजाजी श्रीतखत-सिंहजी । कु । श्रीजसवन्तसिंहजा विजयराज्ये श्रीपालीनगरे समस्तश्रीसंघ महामहोच्छवेनांजनसिलाकाकृतं मुं. ।। श्रीमुकुनचन्दजी धर्मानुरागेन महोच्छव कारापितं श्रीमहेवापरगने श्रीवीरमपुरनगर मध्ये संखवालेचा माला सा. कारापित श्रीजिनालये श्रीसुपार्श्वनाथबिंब प्रतिष्ठितं ...... भ. श्रीजिनपद्मसूरिभिः ....

(४७७)

१२. चन्द्रप्रभ:—

।। सवत १९१० शाके १७७५ प्र. मासोत्तममासे माघमासे शुक्लपक्षे ५ तिथो गुरुवासरे श्रीपालीनगरे अंजनशलाकाकृतं । समस्तसंघ सयुक्तेन स्वश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रबिम्ब कारितं । प्रतिष्ठितं । भ । श्रीजिन-पद्मसूरिभिः खरतर श्रीभावहर्षगच्छे । श्रीमदवीरमपुरनगरे जिनालये स्थापित ।।

(४७८)

१३. कुन्थुनाथ:—

सं १९९५ फागुन कृ. गुरो सिवानावास्तव्य संघेन बिम्ब कारित प्रतिष्ठितं भ. राजेन्द्रसूरिभिः प्र. जसरूप जीताभ्यां.........आहोर नगरे।

(४७९)

१४. वासुपूज्यः—

संवत १६६१ माघ सुदि १३ दिने वासूपूज्यजीबिम्ब कारापितं श्रीसघेन प्र. जगदगुरुदेव श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वरजी के ...

(४८०)

१५. जिनदत्तसूरि-मूर्त्तिः—

वि सं. २००८ मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरौ गढ़ सिवाना निवासी ललवानी जैन कुटुबेन खरतरगच्छाचार्य जंगम युगप्रधान भट्टारक दादा श्रीजिनदत्तसूरीश्वराणां मूर्ति कारिता श्रीजिनरत्नसूरिणा च प्रतिष्ठा मेवानगरे। पेढ़ी द्वारा पुनः स्थापित सं. २०२६ मिति मार्ग शुक्ल ६

शांतिनाथ मन्दिर गर्भगृह

(४८१)

१. जिनभद्रसूरि-मूर्त्तिः—

संवत १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदी ५ दिने ऊकेशवंशे व्य. कुशलाकेन सपरिकरेण श्रेयोर्थं श्रीजिनभद्रसूरीश्वराणां मूर्तिः कारिता। प्रतिष्ठिता श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ।।

(४८२)

२. शिला पट्ट प्रशस्तिः—

संवत १६६६ वर्षे। भाद्रपद शुक्ल पक्षे। श्रीद्वितीया दिन। शुक्रवारे श्रीवीरमपुरे। श्रीशांतिनाथप्रासादे। भूमिगृहे। श्रीखरतरगच्छे। युग-प्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये। आचार्यश्रीजिनसिंहसूरि योवराज्ये। श्रीराउल श्रीतेजसीजी विजयराज्ये। कारितं श्रीसंघेन।। लिखितं वा श्रीगुणरत्न गणीनां विनयेन रत्नविशालगणिना।

सूत्रधार चांपा पुत्र। रत्ना पुत्र। जोधा दामा। पुत्र मन्ना धन्ना। वरजांगेन कृता भत्रीज सोमा किल्याण। केला। मेघा। श्रीरस्तु।

शांतिनाथ मन्दिर आदिनाथ देहरी

(४८३)

१. वासुपूज्यः—

श्रीवासूपूज्य सा. मेघाकेन....संवत १५१३ वर्षे माघ सुदि ३ दिन ..

(४८४)

२. आदिनाथः--

सं. २०१६ माघ शु. १४ तिथौ गुरुपुष्ययोगे श्रीऋषभजिनबिंब बाड़मेर वा बोथरा लक्ष्मणदास सागरमल सरदारमल आसू सोहन चपालाल पुत्र-पौत्रादिसहितैः घनसुख स्मृतो कारित प्र. मेवानगरे श्रीसंघेन प्रतिष्ठित आचार्यदेव विजय हिमाचलसूरिभिः श्रीरस्तु ।।

शांतिनाथ मन्दिर नेमिनाथ देहरी

(४८५)

१. संवत १५२४ वर्षे ज्येष्ठ वदि......... श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः सा. माला पुत्र भाऊ।

(४८६)

२. नेमिनाथः--

सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुण्ययोगे श्रीनेमिनाथप्रतिमेयं मेवानगर श्रीसंघेन कारिता प्रतिष्ठितं श्रीजगदगुरुदेव श्रीमदविजयहीरसूरीश्वर सन्तानीय हितान्तेवासि आचार्यदेव विजयहिमाचलसूरिभिः ।। ले. श्रीभव्यानन्दविजयः श्रोरस्तु । सरेमल ।

शांतिनाथ मन्दिर पार्श्वनाथ देहरी

(४८७)

१. आदिनाथः—

संवत १४०९ वर्ष............

(४८८)

२. शांतिनाथः—

संवत १५२४...........

(४८९)

३. पार्श्वनाथः—

वि. सं. २०२९ माघ सु. १३ गुरो पुष्ये इदं जीरावला पार्श्वनाथबिंब वादनवाड़ी वा. सालेचागोत्र पूनमचन्दस्य श्रेयोर्थं मगराज बाबूलाल राजमल ताराचन्दस्य पुत्र पौत्रैः का. प्र. नाकोड़ातीर्थे श्रीसंघेन प्र. वि. हिमाचलसूरिभिः लि. पं. विद्यानन्दविजय ।

शांतिनाथ मन्दिर महावीर देहरी

(४६०)

१. पार्श्वनाथ:—

संवत १५१३ वर्षे... ....

(४६१)

२. आदिनाथ:—

संवत १५१८ वर्षे माघ सुदि १० गुरो....... प्रतिष्ठितं श्रीमेरुप्रभ-सूरिभि:

(४६२)

३. महावीर: –

सं. २०१६ माघ सु. १४ गुरुपुष्ययोगे श्रीमहावीरबिंब मेवानगरे श्रीसंघेन कारित प्रतिष्ठित जगदगुरुदेव श्रीमदविजयहीरसूरीश्वर सन्तानीय हितान्तेवासी आचार्यदेव विजयहिमाचलसूरिभि: । ले. भव्यानन्दविजय: ।

श्रीनेमिनाथजी की टूंक

(४६३)

१. नेमिनाथ-पादुका:– –

।। ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजीनेश्वरजी नेमीश्वर भगवान री चरणपादुका मु ।। सीरदारमल पारसमल वा. जोधपुर वाला टाटीयागोत्रे खरतरगच्छे वाला थापीतं बीरमपुर नगर मध्ये: संवत १९८८ रा साके १८६२ रा मासोत्तममासे आसोजमासे सुक्लपक्षे द्वादशी रविवारे ।

(४६४)

२. शांतिनाथ-पादुका:—

वि.सं. २०२६ माघ सु १३ गुरो पुष्ये इयं श्रीशान्तिनाथचरण-पादुका नाकोड़ातीर्थे श्रीसंघेन का. प्रतिष्ठापितां च प्रति. तपागच्छेश-जगद्गुरु श्रीमद्विजयहीरसूरीश्वर सन्तानीय हितान्तेवासी विजय श्रीहिमा-चलसूरिभि: श्रीरस्तु लि. पन्यास श्रीविद्यानन्द विजय ।

(४६५)

३. पार्श्वनाथ-पादुका:—

वि.सं. २०२६ माघ सु. १३ गुरो पुष्ये इदं श्रीपार्श्वनाथचरण-पादुका नाकोड़ातीर्थे श्रीसंघेन कारिता प्रतिष्ठापिता च प्रति: तपागच्छेश जगद्गुरु

श्रीमद् विजयहीरसूरिश्वर सन्तानीय हिनान्तेवासी विजय श्रीहिमाचल-सूरिभिः श्रीरस्तु लि. पन्यास श्रीविद्यानन्द विजय।

श्रीदादाजी की टूंक

(४९६)

१. जिनकुशलसूरि-पादुका:--

जंगम युगप्रधान भट्टारक छोटादादा साहेब श्रीजिनकुशलसूरिजी वि.सं. १३३० सिवाणा गांव में छाजेड़ गोत्रनामंत्री जिल्हागार की धर्म पत्नि माता जयतश्री की कुख से जन्म, व सं. १३४७ में श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरजी के पास दिक्षा, व सं. १३६६ अणहिलपुर पाटण में आचार्य पद, स. १३८९ माह वदि-- देरा. स. ..

श्रीजिनदत्तसूरि दादावाड़ी

((४९७)

१. जिनदत्तसूरि-पादुका:--

स २००० वर्षे वैसाखशुक्ला ६ श्रीगढ़सिवाना उम्मेदपुरा श्रीसघेन जं. (यु.) दादा श्रीजिनदत्तसूरीश्वराणां चरणपादुके कारितं खरतरगच्छाधीश्वर श्रीजिनजयसागरसूरि नेतृत्वे पं. यति नेमिचन्द्रेण।

(४९८)

२. जिनदत्तसूरि-पादुका:--

ॐ ह्रीं श्रीं दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजीगुरुभ्यो नमः

(४९९)

३. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि पादुका.--

ॐ ह्रीं श्रीं दादाजी श्रीमणिधारीजीजिनचन्द्रसूरिजीगुरुभ्यो नमः

(५००)

४. जिनकुशलसूरि-पादुका.--

ॐ ह्रीं श्रीं दादाजी श्रीजिनचन्द्रसूरिजीगुरुभ्यी नमः

(५०१)

५. जिनचन्द्रसूरि पादुका:--

ॐ ह्रीं श्री दादाजी श्रीजिनचन्द्रसूरिजी गुरुभ्योनमः--

कीर्तिरत्नसूरि-स्तूप के लेख

(५०२)

१. स्तूप के खण्डित छज्जे पर:—

...रतिपति नरपति चरणं....सुमयनमचय परिचय हरणं

(५०३)

२. स्तूप के पीताम पर:—

॥६०॥ श्रीसूरिमन्त्राहृत विघ्नराजा श्रीकीर्त्तिरतनाभिघ्तसूरि राजा श्रीसंघ राजोन्नति हेतु राजा श्री..........

(५०४)

३. स्तूप की चौखट पर:—

॥ ६० ॥ श्रीमतश्रीजिनभद्रसूरिगणमृतपाण्याम्बूजाप्तोदया ।
धन्याचार्य पदावदात वदिता : श्रीकीर्त्तिरत्नाहुया: ।
नम्नानम्रशिरत शिरोमणिविभा प्रोदभासिताहिर्दया ।
राजानन्दकरा जयन्तु विलसत्त श्रीशंखवालान्वया ।

(५०५)

४. षोदशदल कमल गर्भित चित्र काव्य:—

सुरंसारं चरं स्वरं वारं कारं निरन्तरम् ।
सारं सारतरं स्मरं हरं शरं ज्वरं चरम् ॥

(५०६)

५. स्वस्तिक पर चित्रकाव्य:—

मभास्वरगवनद दमि कीर्त्तिराज:
मदे प्रदस्तरुब्रदं दम कीर्त्तिराज: –
म—श्रुतपदं दमिता मिताक्ष:
मद मानंति....घरोक्ष:—
ज्ञानं नं सुतं पुनं सुनं चनं यनं डनं
घनं स्मान वनं वीनं मेमं-नंमनं स्वनम् ।

५०७

६. षोडसदल कमलगर्भित काव्य:—

हारं हीर तिरस्कारं वैरं वार हरं स्वरम् ।
--र पुर ...र स्मेरं स्मर सूर धुरं धुरम ॥

(५०८)

७. स्तूप की देहली के नीचे के हिस्से पर:—

सं वर्षे सुदि ५ दिन रविवारे श्रीनगरे राउल श्री....विजयराज्ये आचार्यश्रीकीर्त्तिरत्नसूरिसन्तानीयोपाध्याय श्री५श्रीक्षान्तिरत्नगणि .... रामचन्द्र-मेघराजसहितेन कारितं श्रीरस्तु ।

(५०९)

८. जिनकीर्त्तिरत्नसूरि-पादुका:—

वि.सं. २००८ मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरो श्रीखरतरगच्छेश्रीजिन-कीर्त्तिरत्नसूरिचरणपादुका श्रीसंघेन कारिता श्रीजिनरत्नसूरिणा च प्रति.

(५१०)

९. जिनकीर्त्तिरत्नसूरि मूर्त्तिः—

वि. सं. २००८ मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरो मेवानगरे जैनसंघेन श्री-जिनकीर्तिरत्नसूरिश्वराणांमूर्ति कारिता श्रीरत्नसूरि प्रतिष्ठिता च सुविहित श्रीखरतरगच्छाचार्य श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिणां शिष्य श्रीजिनजय-सागरसूरीश्वराणामुपदेशेन श्रीजिनकीर्तिरत्न-स्तूप जीर्णोद्धार निर्मापितः ।

(५११)

१०. जिनकृपाचन्द्रसूरि-पादुका :—

वि. सं २००८ मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु मेवानगरे श्रीखरतरगच्छ-संघेन खरतरगच्छाचार्य श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिपादुका कारिता श्रीजिनरत्न-सूरिणा च प्रतिष्ठिता

(५१२)

११. जिनजयसागरसूरि-पादुका :—

वि. सं. २००८ मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु मेवानगरे श्रीखरतर-गच्छसंघेन खरतरगच्छाचार्यश्रीजिनजयसागरसूरिपादुका कारिता श्री-जिनरत्नसूरिणा च प्रतिष्ठिता ।

श्रीनाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ मेवानगर के परिसर में स्थित श्री रणछोड़रायजी के मन्दिर में राठौड़ क्षत्रियों की ऐतिहासिक प्रशस्ति

(५१३)

१. ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः । सूरिजवंशी कनोजीया राठोड़

सीहा सोनिग एणे गोहिलां पास खड़गबले लीधी, महाराजा सीहाजी पु. राजा आसथान पु. धूहड़ नी देवी नागणेची अविचल राज दीधू ।

२. राजा श्रीधूहड़ पु. रा. राईपाल पु. रा. कन्हराउ, कन्हराउ पु. रा जाल्हणसिंह पु. रा. छाडा पु. रा. तीडा पु. रा. सलखा द्वितीयाचन्द्र आराधित राऊ श्रीमाला पु. रा. जगमाल पु. राउल

३. मंडलिक पु. रा. श्रीभोजराज पु. रा. वीदा पु. रा. नीसल पु. रा. वरसींग पु. रा. हापा पु. रा. श्रीमेघराज पु. मांण दुरजोधनराज श्रीदुजण-सालजी राणी मोढी संतोषदे पु राउ. श्रीतेजसींघ

४. द्वितीय भार्या सत्यवती रांणी श्रीसीसोदणी दाड़िमदे कुक्षि पुत्र-रत्न छत्रीस राजकुली सिणगार गोत्र गोवाल प्रजापाल परमदयाल गो ब्राह्मण प्रतिपाल कण्ठ शोभित विजयश्रीवरमाल महाराउल

५. श्रीजगमालजी विजयराज्ये तद्‌गृहे राणी भठियाणी जीवंतदे चहुआणी जमणादे सोढ़ी चउरगदे देवड़ी अमोलकदे भटियाणी सताणदे राणी ५ पटराणी देवड़ी कुक्षि रत्न प्रधान कुंअर श्रीभारमलजी

६. उदयमान राउलजी स्वपुण्यार्थे स्वकुल वृध्यर्थे स्वश्रेयसे परमेश्वर भक्त्यर्थे सं. १६८६ वर्षे उत्तर गोल गते श्रीसूर्ये कुम्भ संक्रान्तो वसन्तऋतौ चेत्र वदि ७ भोमवासरे

७. अनुराधानक्षत्रे रवियोगे श्रीरिणछोड़देवगृहं कारापितं चिर-स्थेयात् । राजा श्रीआसथान पुत्र १३ तीयांरी १३ साखि राठोड़ां री हुई प्रथम सूहड़ १ धांधल २ ऊहड़ ३ वानर ४

८. वाजा ५ गोइंदरा ६ अणतरा ७ गूडाला ८ चाचिग ९ आसहोल १० जोपसा ११ वहपसा १२ खीमसा साखि १३ ।। : ।। सूत्रधार गजधर कल्याण सूत्र. सोभा सूत्र. मेघा

९. सूत्र. तारा सूत्र. गोआल सूत्र. हेमा ।

राठोड़-वंश की वंशावली

राव सीहाजी

आसथान — सोनिग

आसथान

धूहड़

राईपाल

कन्हराउ

जाल्हणसी

छाडा

तीडा

सलखा

मल्लिनाथ

जगमाल प्रथम

मंडलिक

भोजराज

वीदा

नीसल

वरसींग १५६२

- राउल कुम्भकर्ण १५६८
- हापा

मेघराज

मांण दुरजोधन एवं सुजनसाल

तेजसिंह

जगमाल द्वितीय १६८६

भारमल

परिशिष्ट (१)

लेखानुसार गच्छ नामावली

१. आगम गच्छ
२. उपकेश गच्छ
३. उशवाल गच्छ
४. अंचल गच्छ
५. खरतर गच्छ
६. चित्र गच्छ
७ तपागच्छ
८. त्रिभवीया गच्छ
९ धर्म घोष गच्छ
१०. नाणकीय गच्छ
११. नाणावाल गच्छ
१२. पल्लि गच्छ
१३. पल्लिकीय गच्छ
१४. पल्लिवाल गच्छ
१५. पायचन्द गच्छ(पार्श्वचन्द्र गच्छ)
१६. पिप्पल गच्छ
१७. बृहद् गच्छ
१८. बृहद् खरतर गच्छ
१९. बृहद् तपागच्छ
२०. बृहद् ब्राह्मणीया गच्छ
२१. ब्राह्मण गच्छ
२२. बोकरीया गच्छ
२३. भावदेवाचार्य गच्छ
२४. भावहर्ष गच्छ
२५. मजहड़ीया गच्छ
२६. मलधार गच्छ
२७. राज गच्छ
२८. राद्र गच्छ
२९. रूद्र पल्लीय गच्छ
३०. विजय गच्छ
३१. विजयआनन्दसूरि गच्छ
३२. विद्याधर गच्छ
३३. वृध तपागच्छ
३४. सिद्धाचार्य गच्छ
३५. सौधर्म बृहद् तपागच्छ
३६. संडेरक गच्छ

परिशिष्ट (२)

संवतानुसार लेखों की सूची

संवत	ग्राम-नाम	लेखांक	संवत	ग्राम-नाम	लेखांक
१०७२	सियाणी	२८३	१४५२	कोटड़ा	३४
१०९०	नाकोड़ा तीर्थ	३०८	१४५८	चोहटन	५९
१२०३	,, ,,	४०६	१४६१	कोटड़ा	३८
,,	,, ,,	४०७	१४६८	समदड़ी	२७२
,,	नगर	९६	१४७६	जसोल	६५
१२३२	जसोल	७०	१४८१	घोरीमना	८२
१२३७	खेड़	४४	१४८३	कोटड़ा	३७
१२४३	जसोल	६२	१४९३	बाड़मेर	१७४
१२४६	,,	७२	,,	सियाणी	२८२
१२६९	समदड़ी	२६१	१४९४	नाकोड़ा तीर्थ	४५९
१२७०	रामसर	२५४	१४९६	बाड़मेर	१३९
१२८०	नगर	९४	१४९९	मोकलसर	२४३
१३०६	,,	८५	१५०१	खंडप	४८
१३१९	नाकोड़ा तीर्थ	४५६	१५०३	बाड़मेर	१८६
१३२१	,, ,,	४५७	१५०४	नाकोड़ा तीर्थ	३७५
१३२५	हरसाणी	३०४	१५०५	मजल	२२७
१३३७	खंडप	४९	१५०७	कोटड़ा	३९
१३४६	नाकोड़ा तीर्थ	४५८	१५०८	बाड़मेर	१६५
१३५२	जूना बाहड़मेर	७३	,,	सिवाना	३०१
१३५९	जसोल	६९	,,	,,	३०२
,,	बाड़मेर	१८४	१५०९	नाकोड़ा तीर्थ	४६०
१४०९	नाकोड़ा तीर्थ	४८७	,,	राखी	२४९
१४३८	नगर	९३	१५१०	सिवाना	२८५
,,	सियाणी	२८१	१५१२	कोटड़ा	३८
१४५०	कोटड़ा	३३	,,	रमणीया	२४७
,,	बाड़मेर	१८५	,,	बाड़मेर	१५५

१५१३	कोटड़ा	३५
,,	समदड़ी	२६२
,,	नाकोड़ा तीर्थ	३७६
,,	,, ,,	४०८
,,	,, ,,	४८३
,,	,, ,,	५९०
१५१४	बाड़मेर	१७३
१५१६	नगर	८५
१५१७	जसोल	६६
१५१८	कनाना	१३
,,	भाडखा	२२५
,,	नाकोड़ा तीर्थ	४६२
,,	,, ,,	४६३
,,	,, ,,	४७१
,,	,, ,,	४९१
१५१९	जसोल	६७
१५२०	कर्मावास	१८
,,	विशाला	२५६
१५२२	आसोतरा	८
१५२३	कनाना	१४
,,	हरसाणी	३०५
१५२४	कनाना	१५
,,	,,	१६
,,	नगर	९७
,,	पाटौडी	१२८
,,	नाकोड़ा तीर्थ	३९६
,,	,, ,,	४८५
,,	,, ,,	४८८
१५२५	हरसाणी	३०६
,,	बालोतरा	२१५
,,	पचपदरा	१०६
१५२७	बाड़मेर	१५९
१५२७	बाड़मेर	१८९
,,	,,	१९४
,,	गुड़ामालानी	५८
१५२८	खडप	४६
,,	पारलू	१३६
,,	सणपा	२५९
१५३०	मोकलसर	२४४
,,	कोटड़ा	२७
१५३२	बालोतरा	२०८
,,	पचपदरा	१०५
१५३४	डंडाली	९९
,,	राणीग्राम	२५३
१५३५	कर्मावास	१७
१५३६	जेठन्तरी	७५
,,	बाड़मेर	१८७
,,	नाकोड़ा तीर्थ	३०९
१५३७	कोटड़ा	२६
,,	नाकोड़ा तीर्थ	४६४
१५४१	कोटड़ा	३२
१५४३	नाकोड़ा तीर्थ	४३४
१५४५	मोकलसर	२४२
१५४६	गुड़ामालानी	५२
१५५५	कोटड़ा	२९
१५५६	समदड़ी	२६३
,,	भाडखा	२२६
१५५७	कोटड़ा	३१
१५५८	बाड़मेर	१९०
१५५९	कोटड़ा	३१
१५६२	नाकोड़ा तीर्थ	४१०
१५६७	आसोतरा	९
१५६८	थोब	७७
,,	नाकोड़ा तीर्थ	४११

१५७३	बाडमेर	१६८
१५७५	कोटड़ा	३६
१५७६	अजीत	४
१५८१	कोटड़ा	२३
१५८९	नाकोड़ा तीर्थ	४६९
१५९२	नगर	९४
१५९८	नगर	९१
१६००	कोटड़ा	२५
१६०२	,,	२४
,,	सिवाना	२९२
१६०४	नाकोड़ा तीर्थ	४७०
१६०५	मजल	२२९
१६०६	,,	२२७
,,	नाकोड़ा तीर्थ	४१३
१६१४	कोटड़ा	४०
,,	नाकोड़ा तीर्थ	४७१
१६३२	,,	४१४
१६३७	,,	४१५
,,	,,	४२८
,,	विशाला	२५७
१६३८	नाकोड़ा तीर्थ	४७२
१६४४	बाड़मेर	१५१
१६४७	नाकोड़ा तीर्थ	४२७
१६५२	घोरीमना	८०
,,	नगर	८६
१६५३	कोटड़ा	३०
१६५६	नगर	८७
१६६४	अजीत	३
१६६५	बाड़मेर	१४२
१६६६	नाकोड़ा तीर्थ	४६९
१६६७	,,	३२७
१६७१	नगर	८९
,,	बाड़मेर	१५०
१६७२	बाड़मेर	१५२
१६७६	,,	१५४
१६७७	पचपदरा	१०३
,,	कोटड़ा	२२
१६७८	नाकोड़ा तीर्थ	३१०
१६८१	,,	३११
,,	,,	३१२
,,	,,	३४३
,,	,,	३८२
,,	जेठन्तरी	७४
१६८४	नाकोड़ा तीर्थ	४७३
१६८५	बाड़मेर	१३७
,,	मेवानगर	२४०
१६८६	नाकोड़ा तीर्थ	५१३
१६८८	बिशाला	२५५
१६९१	कनाना	११
,,	सिवाना	२८९
१६९७	मेवानगर	२४१
१७००	जसोल	७१
१७१३	बाड़मेर	१३८
१७१६	नाकोड़ा तीर्थ	३८३
१७१८	,,	३८४
१७३१	बालोतरा	२११
१७३२	,,	२१२
,,	,,	२१०
,,	,,	२१९
१७३३	बाड़मेर	१४८
१७४९	बुढ़िवाड़ा	३२२
१७५८	नगर	९०
१७६६	नाकोड़ा तीर्थ	३४४
१७६८	सिवाना	२९३
१७६९	,,	२८६

१७७५	समदड़ी	२६८
१७८६	,,	२६०
१८१६	बालोतरा	२०९
१८२५	जसोल	६१
१८२६	,,	६३
१८३३	कोरना	४३
१८३५	गुड़ामालानो	५६
,,	पादरु	१२७
,,	पाटौड़ी	१२९
,,	,,	१३०
१८४८	जसोल	६०
१८५४	कोरना	४१
१८६१	पादरु	१२६
,,	नाकोड़ा तीर्थ	३२०
१८६२	कल्याण पुरा	१९
,,	बाड़मेर	१५८
१८६४	नाकोड़ातीर्थ	३२१
१८६५	,,	४२९
१८६७	मडलो	२३४
१८६..	खण्डप	४५
१८७७	पचपदरा	११८
१८७८	वि\ाला	२५५
१८८०	बालोतरा	२१३
,,	नाकोड़ा तीर्थ	३२८
,,	,,	४७४
१८८२	जसोल	६४
१८८३	पचपदरा	११७
१८८४	सिणधरी	२७४
१९००	सिवाना	२९६
१९०१	थोब	७८
१९०३	बाड़मेर	१४०
१९०४	थोब	७९
१९०८	बाड़मेर	१४९
,,	मजल	२३३
,,	सिवाना	२९०
१९१०	नाकोड़ा तीर्थ	४७५
,,	,,	४७६
,,	,,	४७७
,,	सिय:णी	२७९
१९२१	आसोतरा	६
,,	न'कोड़ा तीर्थ	४६१
१९२२	सिवाना	२८८
१९२३	बालोतरा	२२१
१९२८	बाड़मेर	१५३
,,	बाड़मेर	१६१
,,	भाडखा	२२३
,,	नाकोड़ा तीर्थ	४३५
१९४१	पचपदरा	१०४
१९४७	खण्डप	५०
१९५१	नाकोड़ा तीर्थ	४१६
१९५२	मिठोड़ा	२३९
,,	पचपदरा	११५
१९५५	आसोतरा	५
,,	,,	७
,,	बालोतरा	२००
,,	राखी	२५०
,,	सिणधरी	२७५
,,	,,	२७७
,,	नाकोड़ा तीर्थ	३२९
,,	,,	३३०
,,	,,	३३१
,,	,,	४३६
,,	,,	४३७
,,	,,	४३८

१९५५	नाकोड़ा तीर्थ	३६७
”	”	३६८
”	”	४२६
”	”	४७८
”	”	४१७
”	”	४१८
१९६२	बाड़मेर	१६२
”	”	१६३
१९६६	नाकोड़ा तीर्थ	३६३
१९६९	”	४३९
१९७६	बाड़मेर	१४१
१९७७	सियाणी	२८०
१९७८	भाडखा	२२४
१९८१	जेठन्तरी	७६
१९८२	सिवाना	२९४
१९८९	नाकोड़ा तीर्थ	४९३
१९९१	अजीत	२
”	पारलू	१३५
”	नाकोड़ा तीर्थ	३२२
”	”	३२३
”	”	३३२ से ३३७
”	”	३४५ से ३६१
”	”	३७८
”	”	३८५
”	”	३९९
”	”	४००
”	”	४४०
”	”	४७९
”	”	४१९ से ४२२
१९९४	मजल	२३०
”	”	२३१
”	सिणधरी	२७६
१९९६	पादरू	१२१
”	नाकोड़ा तीर्थ	३६२
१९९८	रमणीया	२४६
१९९९	कल्याणपुरा	२०
२०००	पादरू	१२४
”	सिवाना	२९१
”	नाकोड़ा तीर्थ	४९७
२००१	घोरीमना	८१
”	मिठोड़ा	२३६
”	”	२३७
”	”	२३८
२००२	पादरू	१२२
”	”	१२३
२००३	नाकोड़ा तीर्थ	४४१
”	” ”	४४२
२००५	” ”	४४३ से ४४६
२००८	” ”	४८०
”	” ”	५०९ से ५१२
”	बाड़मेर	१८०
२००९	कनाना	१२
२०१०	हरसाणी	३०३
२०११	समदड़ी	२६९
२०१३	अजीत	१
”	समदड़ी	२७०
”	”	२७१
२०१६	बाड़मेर	१७५
”	”	१९८
”	बालोतरा	१९९
”	”	२०३
”	राणीग्राम	२५१
”	नाकोड़ा तीर्थ	३१३ से ३१८
”	” ”	३६४ से ३७२

२०१६	नाकोड़ा तीर्थ	३७९
"	" "	३८०
"	" "	४०१
"	" "	३८६
"	" "	४२३
"	" "	४३० से ४३३
"	" "	४४७ से ४५५
"	" "	४६५
"	" "	४८४ से ४८६
"	" "	४९२
२०१७	राणीग्राम	२५२
२०२०	पादरू	१२०
"	"	१२५
"	बाड़मेर	१७१
"	मिठोड़ा	२३५
२०२२	बाड़मेर	१६४
"	सिवाना	३००
२०२४	पचपदरा	१११
"	"	११२
"	बाड़मेर	१७२
"	समदड़ी	२६६
२०२५	खंडप	४७
"	समदड़ी	२६५
२०२६	बाड़मेर	१७८
२०२७	पारलू	१३२
"	"	१३३
२०२८	कोरना	४२
"	डंडाली	१००
"	नाकोड़ा तीर्थ	३२४
"	" "	३२६
"	" "	३३८
"	" "	३७४
२०२८	नाकोड़ा तीर्थ	३८१
"	" "	३८७ से ३९०
२०२९	सिवाना	२८४
"	नाकोड़ा तीर्थ	३१९
"	" "	३९१
"	" "	३९२
"	" "	४०३ से ४०५
"	" "	४८९
"	" "	४९४
"	" "	४९५
२०३१	पारलू	१३१
"	"	१३४
"	बाड़मेर	१९१
"	सिवाना	२९९
२०३२	बाड़मेर	२०६
"	"	२१४
"	"	२२०
"	नाकोड़ा तीर्थ	३९३
"	" "	३९४
२०३३	पचपदरा	१०८
"	"	१०९
"	बाड़मेर	१४३
"	"	१४४
"	"	१४७
२०३४	"	१९५
२०३५	धोरीमना	८३
"	बाड़मेर	२०७
२०३६	"	१९२
"	समदड़ी	२६७
"	बालोतरा	२०३ से २०५
"	"	२१८
"	हरसाणी	३०७

२०३७	पचपदरा	१०७	२०४०	सिवाना	२५
,,	,,	११०	,,	समदड़ी	२६
,,	,,	११४	२०४१	बालोतरा	२१
,,	बाड़मेर	१४६	,,	,,	२१
,,	बालोतरा	२०१	,,	सिवाना	२६
२०३८	बाड़मेर	१६६	,,	गुड़ामालानी	५
,,	,,	१६७	,,	बाड़मेर	१६६ से १६
२०४०	आसोतरा	१०	,,	,,	१६
,,	बाड़मेर	१८१	,,	रमणीया	२४
,,	सिवाना	२६५			

मुद्रक-जैन प्रिण्टर्स
चौपासनी रोड़,
इलाहबाद बैंक के पीछे,
जोधपुर-342 003
फोन : 28782